लंका-दहन

स्व० चौधरी लक्ष्मीनारायण सिंह 'ईश'

काशी नागरीप्रचारिणी सभा

प्रकाशक : नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
मुद्रक : सदाशिव राव चितले, आदर्श प्रेस, काशी
प्रथम संस्करण : सं० २००७ वि० : १००० प्रतियाँ
मूल्य : [illegible]॥)

स्व० चौधरी लक्ष्मीनारायण सिह 'ईश'

अपनी ओर से

बरसों पहले ईश जी ने यह संकल्प किया था कि वाल्मीकि रामायण के इस प्रसंग [श्री रामचंद्र जी से मुद्रिका लेकर जानकी जी को देना और श्री जानकी जी से उनकी चूड़ामणि लाकर श्रीरामचन्द्र जी को दे देना] पर एक काव्य लिखा जाय। स्रोत यह था कि रत्नाकर जी के उद्धवशतक के समान एक ऐसा काव्य प्रस्तुत किया जाय जिसमें ब्रजभाषा और उसकी परंपराओं के निर्वाह के साथ-साथ काशी में प्रयुक्त होनेवाली अवधी का भी पुट रहे। यह ज्ञातव्य है कि रत्नाकर जी की रचनाओं में काशी की काव्यधारा में बहनेवाली अवधी मिश्रित ब्रजभाषा का टकसालीपन नहीं रह गया है, प्रत्युत् उनमें ठेठ ब्रजभाषा का शास्त्रीय ठाठ ही अधिक दिखाई पड़ता है। अतः इसी संकल्प को मूर्त्त रूप देने के लिये "लंकादहन" का श्रीगणेश हुआ।

प्रकाशन और विज्ञापन से दूर लंकादहन के सर्ग छंदबद्ध होने लगे और कथा का प्रवाह धीरे-धीरे पाँच सर्ग तक पहुँचा, उसी समय ईश जी को काशी छोड़ कर राजापुर (जहाँ उनकी जमींदारी है) चले जाना पड़ा। वहाँ पहुँचकर तो वे वहाँ के हो हो रहे। निरे प्रपंचों से भरा ग्रामीण समाज उन्हें तनिक भी नहीं रुचता था। फिर साहित्य-साधना किससे हो ? गाँव और जमींदारी के झमेलों से जब उनका मन उकता उठता तो "हमसे जाने कौन अपराध बन पड़ा

है कि बाबा विश्वनाथ ने अपनी नगरी छुड़ा दी" कहकर मौन हो जाते; काशी का चित्रपट आँखों के आगे घूम जाता। जब कभी प्रसंग से लंकादहन की चर्चा चलती भी, तो कहते, यहाँ भला कविता कैसे हो, यहाँ के प्रपंच ही रात दिन छुट्टी नहीं देते हैं। कार्यवश काशी आते, एक दो दिन रहकर फिर लौट जाते। एक बार जब वे कई जंजीरों में जकड़ गए तो उन्होंने दो छंद लिखे—

मेरे किए पाप तो सहो हैं बहो देखौ कहा,
बिनती यहै है जौ सुनौ तौ सुनि कान दै,
सुधि कै सुधारौ निगमागम निहारौ,
कहो अपनी बिचारौ न बिसारौ ध्रुव ध्यान दै।
कोटि जन्म जात अघव्रात समुहात तेरे,
जान यह जानी बात कहत प्रमान दै,
मानौ जौ अनघ तौ बसावौ निज ओक,
ना तौ करिकै बिसोक बिस्व ही तैं काढ़ि जान दै ॥१॥
जन्मन के अर्जित कलाप लखि पापन के,
अमित उतापन के तापन तचाइ लै,
दै दै कै सजाइ मन मानी जौन चाहैं आप,
अपनी रजाइ मैं रचाइ परचाइ लै।
निपट निकाम पै गुलाम बिन दाम को हौं
यामैं ना कलाम जग जाहिर जँचाइ लै,
बिनती यहै है सेस मनुज भए पै देव,
दनुज न होन पाऊँ तौ लगि बचाइ लै ॥ २ ॥

ऐसा लगा कि इन छंदों के अक्षर अक्षर में उनकी वेदना बसी हुई है, और वे भगवान से अपनी अरदास कर रहे हैं। लोगों के बहुत आग्रह करने पर किसी प्रकार उन्होंने लंकादहन को पूरा करने में हाथ लगाया और जैसे जैसे समय मिला क्रमशः लिखते गए और नौ सर्गों में ग्रंथ पूरा हुआ। रचना पूरी होने पर एक दिन उन्होंने सभा में कुछ अंश सुनाने की कृपा की। ब्रजभाषा एक तो वैसे ही बड़ी श्रुति-मधुर होती है, तिसपर ईश जी के पढ़ने का ढंग इतना मनोहर था कि लगभग तीन घंटे तक कविता-पाठ होता रहा। श्रोताओं को पता भी न चला कि कब तीन घंटे बीत चुके। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण जी गुप्त, जो उन दिनों सभा के सभापति थे, उक्त अवसर पर अध्यक्ष थे। सब के सब कथा-प्रवाह में तन्मय थे। तभी ईश जी ने उनका ध्यान भंग किया—"भाई अब बस करऽ, अउर फिर कब्बौं सुनाय देब।" तब जाकर लोग प्रकृतिस्थ हुए।

इसे चाहे भगवान की कृपा कहिए या मायामयी की महिमा, उनका "फिर कब्बौं" न होना था न हुआ। थोड़े दिन बाद ईश जी बीमार पड़ गए और रोग का ठीक ठीक निदान भी तब हो पाया जब वे कालग्रास के निकट पहुँच चुके थे। डाक्टरों ने बताया, इन्हें कैंसर हो गया है। उसी की चिकित्सा के लिये वे पटने गए पर वहाँ भी कोई ठीक उपचार न हो सका, और काशी लौट आए। उनकी बीमारी के दिनों में ही लंकादहन का छपना आरंभ हो गया था और धीरे धीरे एक फर्मा छपा भी, पर प्रेस और तांत्रिकों की माया के कारण वे इसे प्रकाशित न देख सके। उनके न रहने

से काशी की उस काव्यधारा का एक अंतिम दीप भी बुझ गया जिसका निर्माण भारतेंदुजी, सेवकजी, बाबा दीनदयाल गिरि आदि के हाथों हुआ था।

ईश जी की कविता कैसी होती थी, इसके बारे में तो कुछ विशेष कहने की आवश्यकता नहीं है। उनकी यह समूची कृति ही पाठकों के सामने है। अतएव वे स्वयं इसे भली भाँति जान समझ सकेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

मेष संक्रांति, संवत् २००७ वि०। (राय) कृष्णदास

—०—

श्री रामचंद्राय नमः

ग्रंथकार की कामना

ईश के हिए की चाहना है या गुनीजन सों,
याके गुन दोष को बिचार कै निरखिहैं,
भाषा, भाव, भूषण, विभेद, रस भेद आदि
गति की प्रगति के प्रसार को परखिहैं।
पैहैं कछु मोद तौ सुमोद सह सेवक पै,
संचित सनेह बारि बुंद को बरखिहैं,
अल्प मत वारन गवाँरन सों बार बार,
एतो अनुरोध है बिरोध मत रखिहैं॥ १॥

ग्रंथ परिचय

बिरह बियोग योग आकुल सिया के हिया,
बेधक अँदेस औ सँदेस को बहन है,
अद्भुत अकृत बूतवारे कपि केहरी के,
कूतवारे कीरति कलाप को कहन है।
सहन सुबोधन को, गहन अबोधन को,
बिहद बिबोधन के डाह को डहन है,
संकित हिये तैं करि अंकित धरत 'ईश"
अंक मैं तिहारे यह लंक को दहन है॥ २॥

ग्रंथकार का परिचय

विप्रबंसजात अवदात कतिवारो कुल,
भारद्वाज गोत्र त्रय प्रवर ललाम है,

"पारबती" माता, पिता पायो "सिवमंगल" सों,
लच्छिमीनरायन जनायो निजनाम है।
आनंद के बन को बसैया कई पीढ़िन को,
"रसमय सिद्ध" को सुशिष्य सरनाम है,
"ईश" उपनाम राखै कविता कलाम बीच,
सीतापति राम को गुलाम बिनु दाम है ॥ ३ ॥

कृति का स्थायित्व

काकी रही साहिबी मुसाहिबी सदा ही बनी,
आखिर गदा ही बनि का न असमा गए,
राम के समै के, बलराम के समै के किते,
काम के समै के, बीति केतिक समा गए।
बालि से बली से दसकंध प्रबली से विश्व-
बिजई न कौन जो न निजई समा गए,
काल कसमा गए, बिसेष रसमा गए,
पै वेई बचे शेष जे अशेष जस मा गए ॥ ४ ॥

निवेदन

जन्मन के अर्जित कलाप लखि पापन के,
अमित उतापन के तापन तचाइ लै,
दै दै कै सजाइ मनमानी जौन चाहैं आप,
अपनी रजाइ मै रचाइ परचाइ लै।
निपट निकाम पै गुलाम बिनु दाम को हौं,
यामैं ना कलाम जग जाहिर जँचाइ लै,

बिनती यहै है शेष मनुज भए पै देव,
दनुज न होन पाऊँ तौ लगि बचाइ लै ॥ ५ ॥
मेरे किये पाप तो सही हैं बही देखौ कहा,
बिनती यहै है जौ सुनौ तौ सुनि कान दै,
सुधि कै सुधारौ निगमागम निहारौ कही
अपनी बिचारौ ना बिसारौ ध्रुव ध्यान दै,
कोटि जन्म जात अघब्रात समुहात तेरे,
जान यह जानी बात कहत प्रमान दै,
मानौ जौ अनघ तौ बसावौ निज ओक, ना तौ,
करि कै बिसोक बिस्व ही तैं कढ़ि जान दै ॥ ६ ॥
छूट्यो धन धाम औ अराम बिसराम छूट्यो,
छूट्यो कुल काम विधि बाम के बिछोहे तैं,
छूट्यो आन सान मान ध्यान ध्रुव धंधन तैं,
छूट्यो नेह बंधन सनेह सुख सोहे तैं।
छूट्यो ख्याल खाम जो मुदाम मन मोह्यो करै,
छूट्यो जाम जाम दाम दाम कौ सनोहे तैं,
तौऊ नहिं छूट्यो अभिअंतर बिसास तेरो,
त्यागि सब पायो एक तोहिं मन मोहे तैं ॥ ७ ॥
आस रखि तेरियै बिसास यह जी मैं कियो,
बखत परे पै तू सहाय आय करिहै,
और बहु देवन तैं भेव कछु राख्यों नाँहि,
टेव भरि भाख्यों नाँहि तिनसों अंकरिहै।

जो तू यहि औसर उदासता गहत तौ तौ,
जानि राखु मेरो माथ नाथ जौ उघरिहै,
ढोंग बाँधि राखौ जग जौन दीनबंधुता को,
ता मैं तो गरूर ते जरूर बीच परिहैं ॥ ८ ॥

आत्म-संबोधन

देह के भरोसे सत्य सन्तत सनेह भूलि,
फूलि उठ्यो नेह के धरा तैं धन दारा तैं,
धायो धाम धाम काम करत निकाम, कढ़ि
काम कोह कलित कलेवर की कारा तैं।
पायो ठीक ठाम ना अराम हेतु ए रे मन
राम हो तू चंचल भयो है कहा पारा तैं,
खोवत जमा को जाम, जोहत जरा को चाम,
रोवत हराम ता पै निपट नकारा तें ॥ ९ ॥

पश्चात्ताप

ह्वै कै हराम के काम के धाम के दाम के दास बने न पिछान्यो।
मोह महोदधि मैं भ्रमै मीन ज्यों बासना लीन समाज मैं सान्यो।
नेकु कियो न कबौं कोउ को हित "ईश" प्रपंचन ही मैं भुलान्यो,,
हाय गुलाम ह्वै बाम के चाम के हाय न राम को मैं उर आन्यो ॥१०॥

श्री रघुपति पद पदुम प्रति, करि बहु बार प्रनाम।
बुधजन सों मांगत बिदा, "ईश" पूरि मन काम ॥ ११ ॥

—०—

श्रीरामचंद्रायनमः

लंका-दहन

मंगलाचरण

—○—

सिद्धि-बरदायक, सहायक सुदीनन को,
चारुचित्त चायक, सुनायक गनाली को।
ठानि गुन-गौरव, अनादि सुर-रूप मानि,
जानि करवैया हानि बिघन-घनाळी को।
नत ह्वै बिनै सों, भक्ति-भाव भरि भावुक ह्वै,
राखि उर कंपन परंपरा प्रनालो को।
करत प्रनाम "ईश" बाम गिरिजा के गोद,
सुंडकुंडलीकृत कुमार सुंडसाली को। १।

हौंस भरो हालि हालि सुंड लघु ऊरध कै,
मुंड पै षड़ानन के चँवर ढुराए देत।
पलटि गिरीस गल आस्रित भुअंगम को,
फन को लपेटि फूतकारन फुराए देत।
फेरि अंबिका के कंध ही पै कर टेकि,
तुंड मेलि पयमंडल को छीर ही उराए देत।
सोई बाल-क्रीड़ा को बिनोद गिरिजा के गोद,
"ईश" को सुमोद, चहुँ कोद सों पुराए देत। २।

नाकी जाइ देत हैं उराहनो पिनाकी पास,
रावरो दुलारो तौ हमारो भयौ अरि है।
मानत न संक, अंक भानत लिखे जे बंक,
रंक को बनावै राउ, राखै सरबरि है।
बिघन बिचारे कित जाहिं बिरचे जे हम,
आपी कहौ कैसे कै निषेध बिधि सरिहै।
एक दंत ही तैं किए डारत दुरंत अंत,
ह्वैहै जुगदंत तौ न जानै कहा करिहै। ३।

सुमिरत सारदा हुलसि उठि आइ, धाइ,
उमगि उछगि छकि छोहतै रहति है।
पुलकि, पसीजि, अतुराइ अंक लाइ "ईश"
बार बार बदन बिमोहतै रहति है।
जद्यपि अड़ैतो पै लड़ैतो निज लाल मानि,
जानि कै हठीलो टकटोहतै रहति है।
नैसुक न होन पावै कैसुक मलीन मुख,
याही तै सदैव रुख जोहतै रहति है। ४।

बिधि तौ बिधान ही के बिधि मै बनेई रहै,
तिनको न नेक अवकास इकहू घरी।
तोष मानि परमा रमा के पग चापन सों,
पौढ़े सेस-सैय्या पै बिनिद्रित गदाधरी।
त्रिभुवन सूल को निमूल करि सूली आप,
बैठे ध्यानमग्न जाया जोहति खरी खरी।
होती जौ न तू ही अवलंब अंब जागरूक,
सारी सृष्टि धाता की बिमूक रहती परी। ५।

एरी ब्रह्मवादिनि, बिरंचि-हृदि-ह्लादिनि,
असेस-कंठ-नादिनि, बिसेस प्रतिभा दे तू।
जन-मन-मानस उदोति ज्ञान-ज्योति अंब,
अंतर मै निरत निरंतर जगा दे तू।
जासों परै सूझि गुप्त-प्रगट सु-उक्ति-युक्ति,
भाव-भक्ति-भूषित रसीली मति मा दे तू।
चाहौं कह्यो रामदूत-कीरति-कथा को
यथातथ्य तौन सुमति समोद उपजा दे तू। ६।

तौलौं जगदीस की अनूठी अनपाया, आदि,
माया सृष्टि जाया को सिंगार सजती नहीं।
तौलौं अनुराग की अमंद अरुनाभा "ईश"
जीवन के जिय मै उमंग अंजती नहीं।
तौलौं कबि-कुल की कबित्व-बल्लकी पै
ब्यंग, ध्वनि औ बिभावना बिहाग बजती नहीं।
जौलौं तव चरन-सरोज-रज-रासि-बीच,
मोहमयी सुमति मजेजि मजती नहीं। ७।

एहो पिंगलोचन, त्रिलोचन सुभावतार,
रोचन चखन चारु लखन-रमैया के।
सब दिन ही तैं, दुखमोचन हमारे तुम,
पोच न कहत, हौ उपाय निरुपैया के।
गरज भरो हौं, करौं अरज, सुनौ, औ गुनौ,
कासों कहूँ आपही सहाय असहैया के।
चाहत हौं रावरी सुकीरति कथा को कह्यो,
दीजियै कहाइ, रुचिरूप ह्वै रजैया के।८।

कलपलता की सर्व संपति, सुमति सुद्ध,
भव्य-भाव, भूरि भूति, भक्ति के भरन हैं।
ऊखन-मयूखन तैं, मधु तैं, सुधा तैं मंजु,
मंगल-करन बाधा-बंधन-हरन हैं।
"ईश" ऋद्धि-सिद्धि-नवनिद्धि-बुद्धि-दाता बर-
बिजय बिसाहि धर्म-ध्वज के धरन हैं।
अंबुज-बरन, असरन के सरन, दुख-
दारिद-दरन राम रावरे चरन हैं।९।

"ईश"हिं ध्याइ, कपीस की पाइ,
रजायस आयस अंतर ही की।
चाहत कीस-कथा लिखिबो, गहिकै
प्रथा आदिकवीस कही की।
काव्य-कबित्त बनाइ जथाबिधि,
राखत मर्मिन के हित ही की।
प्रेम-प्रसाद-समेत है यापर,
सेष के सेष की रेख सही की।१०।

चहन चाहि चित की चपल, पल पल बिछुरत मानि।
कहन चहत "लंकादहन", महन मोह अनुमानि।११।

प्रथम सर्ग

अग्न्याविर्भाव

सीतहिं नवाइ सीस, ध्याइ जगदीसै "ईश",
प्रबिस्यो असोकबन-अंतर मरुतजात।
देखे तहाँ फूले-फरे पादप-समूह केते,
नाना रंग रंग के मनोहर मृदुल पात।
हेरत प्रहृष्ट चित्त, कौतुकी कपींद्र कूदि,
चढ़ि तरुवर पै लख्यो यों छबि दरसात।
कछु मुख मेलै, कछु महि पै सकेलै, कछु
नभ-दिसि झेलै, खेल खेलै फल खात खात।१२।

खातै खात तरु पै बिचारयो कपि कायमान,
अर्थ रह्यो जौन तौन पूर्‌यो रघुराज को।
बाकी रह्यो एक, निज पर के बलाबल को
जाँचिबो, सँवाचिबो अरीन रन साज को।
याके हेतु उर मै उपाय सद्‌भासै नाहिं,
सुमति बिकासै नाहिं अपर सुब्याज को।
ताते छोड़ि तीनौ पथ, साम, दाम, भेदन को,
चौथो रुचै जुद्ध ही प्रपूरक स्वकाज को।१३।

सोऊ किमि सिद्ध होय, प्रभु-जस-बृद्धि होय,
हमहू समृद्ध होय, मथि बल दर्पी को।
पाऊँ अनायास ही, प्रवेस पुरअंतर,
तदंतर दरस दस मौलि मौलिअर्पी को।
याको अवकलत उपाय एक मोको भल,
भंजौं प्रमदाबन परम प्रिय तर्पी को।
ताकी पाइ खबरि, पठैहै सो भटन भूरि,
हौंहूँ दरि दैहौं तिन समन समर्पी को।१४।

सो सुनि हठात, दसकंधर हठैहै औ,
पठैहै भट भूरि, ते निठैहैं जब आइकै,
तब निज बिक्रम दिठाइ तिन दुष्टन को,
ऐसी गाँठि कठिन गठैहौं अरुझाइ कै,
जाके सुरझाइबे को, उमठि नठैहै आप,
ठाइहै उपाय कोऊ जासों पैठ पाइकै।
हौं हूँ बनि राघव बसीठि निज दीठिन सों
ढीठ शठनाथहिं दिठैहौं पास जाइ कै।१५।

याही हेर-फेर मै अहेर करि दुष्टन को,
ऐसो निज बिक्रम प्रचंड चंड करिहौं।
जाहि जोहि माननि को मान मिटि जैहै, आन
सान सटि जैहै जब सामुहें सँभरिहौं।
रैहै नहीं धीरज धुरीन धनुधारिन के,
बक्र ह्वै सुचक्र के समान जब चरिहौं।
त्रसिहै त्रिलोक, सोक बसिहै असुर ओक,
जब हौं अलोक जवमान ह्वै उछरिहौं।१६।

करि क्रम निस्चित स्वकर्म साधिबे को इमि,
आइ छिति तल पै बढ़ाइ बल बे प्रमान,
लाग्यो गहि गहि कै उखारन बिटप-ब्यूह,
रहि रहि वारन पवारन दसो दिसान।
जैसे महामारुत, मरोर, जोर-सोर करि,
छन मै अरंड-बन डारै करि नासमान,
तैसे निज परिघ-भुजान के प्रहारन सों,
कीन्ह्यो कपि सत्वर असोकबन सोकमान।१७।

नंदन सों नंदन असोक तरु-बृंदन को,
कीन्ह्यो बायुनंदन निकंदन अकद कै।
दीन्ह्यो भरि भग्न द्रुम-लतन-समूहन तैं,
गिरिवर-दूहन तैं पूहन बिहद कै।
टूटत तरुन-रवन-नादन, बिहंगन के
करुण निनादन तैं आकुल अरद कै।
कपि बरजोरन बिराज्यो जाइ तोरन पै,
उन्मद समान प्रमदाबन अमद कै।१८।

बरजन लागे रहे जौन रखवारे तहाँ,
लरजन लागे कपि-गर्जन परत कान।
कछु समुहाने, रहे जौन मरदाने बीर,
कछु उमगाने, करिबे को जुद्ध जातुधान।
कछुक उपक्रमी उपक्रम करन लागे,
बिक्रम प्रकासिबे को देखि द्रुत हनुमान।
कूदि किलकार्‌यो, कछू परतै सँहार्‌यो, कछू
मीजि महि मार्‌यो कछू भागे भीरु भीतिमान।१९।

शेष रखवारे रहे जौन अधमारे तौन,
जाइकै पुकारे दसआनन-दुआरे पै।
'नाथ एक मर्कट विशाल कालरूप आयो,
अति बिकराल नैकु मानत न वारे पै।
आपु है असोक, पै अशोकबन शोक पार्‌यो,
बिपिन उजार्‌यो रजनीचर सँहारे, पै—
तबहूँ गयो ना, दूरि अबहूँ भयो ना, बसि
दनुज-दरौना ललकारत अगारे पैं।२०।

सुनि सब हाल दसभाल के बिसाल दृग,
लाल भए द्रोह-कोह-मोह-मद-माते से।
उबलत कोए रोस-रस मै समोए, जात
जोए नहिं अँसुवा अगोए कढ़ि ताते से।
कन कन ह्वैकै ढुरे परत कपोलन पै,
ताकी कवि उपमा बखानै उर आते से।
बरत दिया तैं चुए परत जमी पै जिमि,
चिनगी समेत नेह-बिंदु अधिकाते से।२१।

बोलि निज-किंकर-चमू को, दै निदेस भेज्यो,
रहस-भरे ते, असी सहस लड़ैया बीर।
धाए भरि साहस, प्रवाह सरिता लौं फैलि,
आए कपि संमुख असोक अटवी के तीर।
देखि दूर ही ते हनुमंत हाँक दैकै डाँकि,
एकही उलाँक मै मही पै आइ रनधीर,
लाग्यो दौरि दारन, बिदारन, संहारन, औ
मीजि मीजि मारन, चिथारन सुचीरि चीर।२२।

लागी बहु बेर ना अहेर खेलिबे मै, घेरि-
घेरि कपि मारयो निसिचारन-जमाती को।
बाकी बचे एकु ना, अनेक देखु हारे, जाइ
खबरि जनायो दसकंधर से अराती को।
सो सुनि महान बलशाली जंबुमाली टेरि
निज कुलपाली जानि भेज्यो सुरघाती को।
सोऊ भागसाली, लिए संग कटकाली, पास
जाइ कपि ख्यालो भयो दीपक प्रभाती को।२३।

योंहीं मंत्रि सत्तम प्रहस्त के सपूत सात,
और भट पाँच जे जितैया अरि-सेना के।
भेजे गए क्रम से कपीस से महाजन पै,
बार बार धारित रकम-रूप देना के।
ते वै जाइ जाइ, अरिवर के सकास,
अवकासहू न पायो भए भेषज सुखेना के।
पंचक पथों से ते बिपंचक रथी ह्वै बने,
अरथी अँकौर कालकौर से चवेना के।२४।

पाय मयदान मै न एको जातुधान जीव,
सुचित अतीव ह्वै कपींद्र केसरी किसोर।
कूदि चढ़ि तोरन बिराज्यो छबि छाज्यो इमि,
राजै जिमि मेरु पै प्रभासमान भानु भोर।
कंध करि उन्नत, प्रबंध भुजबंध टेकि,
चपल चितौनि चाहि चाहत सु चारो ओर।
मानो तोष-रहित, बिसालकाय काल आप
रोषजुत हेरत निसाचर-पुरी की ओर।२५।

देखि परिनाम अनइच्छित स्वपच्छिन को,
प्रबल बिपच्छिहिं सु लच्छि रच्छसाधिपति।
बोलि दच्छ द्वंदी, अच्छ कुँवर बुझाइ बेस,
बोल्यो बच्छ बनिकै सुरच्छी बाहिनी को पति।
गच्छ द्रुत समर समच्छ, परधच्छी बीर,
अच्छी तौर पौरुष प्रगटि परपच्छी प्रति।
दुवंन अलच्छी को प्रतच्छ मम ल्याउ कै तो,
मृतक दिखाउ देह ताको दै सुअंत गति।२६।

सुनि निज नायक निदेस, दनुजेस-जात,
अप्रमेय अजित अतुल्य बलसाली बीर।
उग्र तप तापी, अच्छकुँवर प्रतापी, अंसु
मान के समान मूर्तिमान तेजधारी बीर।
हेमजाल-निर्मित सुवर्म-सी सत्रान पैन्हि,
बह्नि-सम उग्र असि कसिकै कमर तीर।
माँग्यो सारथी सों रथ दिव्य जौन पायो करि
तीव्र तप अमर अरीन को दिवैया पीर।२७।

दूत-मुख पाइकै रजाइ असुराधिप को,
सूत ल्यायो स्यंदन सजाइ द्वार कच्छै है।
जाको शूल मुद्गर परशु पाश दंड गहि,
असुर निकाय निज काय समरच्छै है।
किन्नर उरग यक्ष अमर असुरहूँ तैं,
संतत अजेय अनिवारित अधच्छै है।
किंकिनी मधुर रव रंजित पिसंग रंग,
आयो रथ दिव्य तौन अच्छ के समच्छै है।२८।

अय मय पतर मढ़्यो है चढ़्यो जापै और
सालिस समान बान खालिस कनक को।
पावक प्रमान तेजमान जवमान जोते
आठ बर बाजि जो न थिरते छनक को।
आठ असि, तून, धनु, तोमर परसु सक्ति,
संजुत जथाक्रम, बिमोहक बनक को।
ल्यायो रथ सोदरी, बृकोदरी ध्वजा सों सज्यो,
निर्मित कृसोदरी, मदोदरी-जनक को।२९।

आयो देखि स्यंदन, मनाइ इष्ट देवै, नाइ
सीस पितु-पद पै, असीस पाइ जय की।
आनद अमायो, मान मद मै मजायो मन,
सान मै सजायो गति, मति के निलय की।
तायो तन तेह तैं, सनेह बिसरायो सबै,
आयो कढ़ि गेह तैं, भुलाइ भीति भय की।
बैठि द्रुत रथ पै, अकथ द्युतिधारी धीर,
धायो रन-पथ पै, बँधायो छोर छय की।३०।

ह्वैकै कर्णधार यों अपार सुभटावली को,
बेड़ा बाँधि, डाँड़ा-शर धनु-पतवारी लै,
स्वबल अतूल मसतूल सों सुधारि, धारि
धीर इरषा को गुन, लाग-लगुहारी लै,
साहस-सुपाल पै उताल रनसागर को
संतरन चाहत स्वकाल की बयारी लै।
त्यागि पितु-तीर सो समीरसुत-बेला ओर,
उमगि अकेला चल्यो आपु अगुआरी लै।३१।

धायो एहि तौर सों, अरातिपति-पच्छी अच्छ,
बाजि-गज-रथ-रव-पूरत दिसान को।
आयो चलि सत्वर, समीप प्रमदाबन,
हरी प मद दावन को, हनत निसान को।
देख्यो दूर ही तैं तोरनस्थ, बन-छोरन पै
ज्वलत फुलिंग मानो प्रलय कृसान का।
हेरि हिय हार्यो, तऊ धनुष सँभार्यो, ताकि
तीनि सर मार्यो ललकार्यो रच्छसान को।३२।

लागे सर सीस सद्य स्रोनित स्रवत सोधि,
ऐसे भए बंक दृग कपि बलसाली के।
जैसे परभात मंडलस्थित नवोदिताभ,
राजैं सर अंसुमान बृत्त अंसुमाली के।
उग्र बानरर्षभ, अमर्षी रोष पायो अति,
हेरि उत्कर्ष इमि कौणप कुचाली के।
चाह्यो एहि भाँति सो अनैसे सत्रुसाली प्रति,
चाहै ज्यों बुभुत्ती बैनतेय दिसि ब्याली के।३३।

कूद्यो किलकारि कै,उखारि तरु लीन्ह्यो एक,
धायो कपि संमुख कुमार रनदच्छी के।
देखि क्रुद्ध कीसहिं कृतांत सम आवत यों,
आयो रोष उमगि नितांत सुरधच्छी के।
तानि धनु त्याग्यो,लच्छ लच्छ बान बैरी लच्छि,
धाए ते सपच्छ बिषधर से सुलच्छी के।
जाइ अध ऊरध, भ्रमाइ द्रुम दानवारि,
कीन्ह्यो शरजाल ब्यर्थ,अच्छ से बिपच्छी के।३४।

चक्र सम चरिकै सु सक्रजीत बंधु सौहैं,
करिकै उचौहैं बक्र बृत्त बज्र पानी सों।
धायो आइ तुरँग-समेत रथ-सारथी को,
एक बार ही मैं बधि डारयो छिति घानी सों।
कूदिकै ततच्छन समच्छ कपि आयो अच्छ,
पैदल ह्वै स्वदल सँभारि बलखानी सों।
कसि कटिबंध, धनु कंध पै चढ़ाइ ऐंचि,
खैंचि असि चाह्यो जूटि जूझन कृपानी सों।३५।

खैंचि चंद्रहाँस चंद्रहासै उपहासि, गाँसि,
आयो रामदास के सकास अच्छ अरिकै।
देखि पैतरे पै घूमि, झूमि कै तरे पै ताहि,
पकर्‌यो अकास-पथ मारुति उछरिकै।
सोऊ उड़्यो संगै, चाहि अरि-गति भंगै,
निज मद के उमंगै गगनापरि सँभरिकै।
दोऊ भयो भासमान ऐसे उपमा समान,
जैसे जुग भासमान भासैं भानु थिरिकै।३६।

घात हेरि औचक, अचूक वार कीन्ह्यो अच्छ,
दच्छ कपि दीन्ह्यो ताहि खाली छूटि छल कै।
आइ झट पीठ पै सुढीठ बलवारो चंड,
दीरघ उदंड दोर दंडन चपल कै।
लीन्ह्यो भरि भुजन ससस्त्र भुज दोऊ तासु,
आसु हिय हार्‌यो सो अराति कलबल कै।
जैसे बाज पंजे फँसे आरत बटेर तैसे,
कपि के सिकंजे कसे डारत बिकल कै।३७।

मसकत पंजर, करेजे कसकत चोट,
खोट ह्वैगो असुर जमाति मैं अराती को।
आयो कंठ प्रान, अकुलायो जातुधान, लाग्यो
दंतन सों काटन भुजान कपि घाती को।
तौलौं ताहि पटकि मही पै तहीं मार्‌यो मर्दि,
बच्छस बिदार्‌यो पेलि पंजन प्रपाती को।
हाहाकार माच्यो उत रच्छस-चमू मैं, इत
जयधुनि नाच्यो नभ अमर जमाती को।३८।

देखि निज-नायक-निपात दनुजात-दल,
धाए बातजात पै सुसज्जि बिज्जुधारा सों।
सावन-घटा लौं बरसावन लगे ते घेरि
झरझर बुंदबान तुंद बारिधारा सों।
ह्वैकै इषु-बिद्ध कपिराज इमि सोह्यो तहाँ,
सोहै ज्यों प्रसिद्ध सैलराज सरधारा सों।
घूरत कृतांत सों नितांत तिन तुच्छन को,
धायो परिपूरत दिसांत धूरिधारा सों।३९।

धाए गहि आयुध, नखायुध बिबिधि बिधि,
बदि बदि आपुस मै बेहद बदी चली।
लागे गिरै छीजि छीजि अर्दित अराति दल,
बीच बेसुमार सरदार-गरदी चली।
शेष कीन्ह्यो सत्वर गजास्व-रथ-सादी सबै,
पाँति मै पयादिन के पावकपदी चली।
संकुल सँहारे तिन मृतक पहारन ते,
चहुँ दिसि स्रोनित की निकरि नदी चली।४०।

घोड़न सों घोड़े, रथ रथ सों लड़ाइ मारे,
हाथिन सों हाथी को भिड़ाइ कै सँहारे देत।
दौरि दौरि दारुन दनुज पदचारिन को
चरि चरि कच्चरि कचूमरि निकारे देत।
मुष्टिकन, लातन, लँगूरन लपेटि, फेटि
डारत पिठी लौं, सिठी महि पै बितारे देत।
दारे देत दाँतन, अदाँतन दवारे देत,
अँकरि अरातिन को पकरि पछारे देत।४१।

दौरि दौरि दूरि तैं दबेरि दनुजातिन को,
दारुन दवागि लौं दिसा मै डाँटि डाँटि जात।
गहि पद सपदि अनेकन भ्रमाइ ब्योम,
पथमै उछारै औ पिछारै छाँटि छाँटि जात।
ते वै अंतरिच्छ मै अचेतन भ्रमत, अध
ऊरध लौं आइ कै गुड़ी लौं आँटि आँटि जात।
बोलि बकरी लौं,नभ घूमि चकरी लौं, गिरि
भूमि लकरी लौं, ककरी लौं फाटि फाटि जात।४२।

मेदमई मेदिनी गई ह्वै ठौर ठौर तहाँ,
लोथन पै लोथ के पलोथ पटि पटि गे।
ठौर ठौर पल के पिलूदा परे गूदा सम,
खाइ खाइ जंबुक असूदा ह्वै उलटि गे।
फाटे अध-फाटे परे, सिर-भुज काटे परे,
ठाटे परे केतिक कुठाटे आइ अँटि गे।
केतिक अरे जे, रन-रस लै लरे जे,
कढ़ि तिनके करेजे धूरि-धारा में सिमटि गे।४३।

गाड़े भरे रुधिर, अगाड़े ह्वै तगाड़े भरे,
नारे भरे सिमिटि पनारे भरे नद भे।
गज-दल मारे परे उभय करारे भए,
ध्वज तटवारे तरुवर से बिहद भे।
ढाल भए कच्छप, सुमच्छ करवाल भए,
बार भे सेवार सीप संबुक सु रद भे।
माझी गीध, काक-कंक केवट सुसाझी भए,
कौणप कुणप कुल बोहित बलद भे।४४।

घायल के परत उतायल परत गीध,
हायल से होत सीध साधि कै सरब है।
काक-कंक संक तजि नोचि नोचि चोंचन ते,
काढ़त करेजा खात गहिकै गरब है।
जोगिनी जमाति जुरि आई मुद माति माति,
पीवति रुधिर पूरि खोपरी खरब है।
मालिका सजाव मुंडमाली लै कपाल कर,
कालिका बजावै मानि मारुती परब है।४५।

ऐसी उग्र लरनि, चपेटनि, चरनि, चाहि
कपि की, नभस्थित सुरेंद्र सुर सिगरे।
आपुस मै कहत अचंभित भए से सबै,
ऐसो सौर्य्य बिक्रम बिलोके नाहिं दिगरे;
यह तौ त्रिलोक सों अजेय अनिवारित है,
काल सों कराल एहि काल भयो बिगरे।
एते बड़े दल को अकेल बधि डारे भूमि,
धन्य याको जीवट, सु धन्य याके जिगरे।४६।

दानवन दारिकै प्रचारि दसकंधरहिं,
बोल्यो किलकारि बज्रनादै करि बर्धमान।
मै हौं महाबाहु कौसलेंद्र रामचंद्रजू को
दूत पौनपूत नाम मेरो कपि हनुमान।
मेरे सासिबे को इन तुच्छन पठावै कहा,
आवै उठि आप क्यों न ह्वैकै बलवीर्य्यमान।
देखै आइ चंडता उदंड दोरदंडन की,
खंडौं भुजदंड बीस ताके तृन-तुच्छ मान।४७।

बात के बात मैं बात को जात निपात कियो यों अरातिन को दल।
सेस बचे न कहूँ अवसेसी, निसाचरबेसी दिसा मैं दुरे खल॥
दूनो कै आपनी धाक निसाँक मैं, सूनो कै संकित सारो रनस्थल।
जाय बस्यो फिर तोरन-छोरन जोहत पंथ कुपंथिन को भल।४८।

इति श्रीलंकादहन काव्ये अग्न्याविर्भाव नामकः प्रथमः सर्गः

द्वितीय सर्ग

अग्न्यानयन

रामदूत मारुत-सपूत पूत हाथन तैं,
रन-मख-हूत सुनि अच्छ से अमर्षी को।
अरिगो अतंक लंक-बासिन हिए मैं, संक
भरिगो जिए मैं दसकंध के प्रधर्षी को।
करिगो निवास सोक उर मैं मदोदरी के,
गरिगो गुमान, आन, सान, उतकर्षी को।
हरिगो प्रभाव दृढ़ धनुष प्रकर्षिन को,
परिगो अभाव आज पुर मैं प्रहर्षी को। १।

काहू बिधि धीर धरि, मति-गति थीर करि,
दसमुख बीरता के आन मैं अमान्यो फिर।
सोकित हिए मैं प्रतिहिंसा की प्रवृत्ति भरि,
अरि-करनी को चेति मद मै न मान्यो फिर।
ध्यान कै महद्बल-समन्वित कपिंदै, जिय
जानि निज निंदै सोक-सिंधु मैं समान्यो फिर।
सोधि नृप-नीतै, सुत-बल के प्रतीतै, जुव-
राज इंद्रजीतै भेजिबोई उर आन्यो फिर। २।

छोड़िकै बिषादै, पास बोलि घननादै, राखि
पितु-मरजादै, गहि अंक लपटाइ कै,
सूँघि माथ, हाथ सों परसि अंग ताके दृढ़,
प्रेम सों पुलकि अति आदर दिखाइकै।
बोल्यो, 'प्रिय वत्स! दानवेंद्र-कुल-भूषन हौ,
पूषन-स्वरूप तीव्र तेज दरसाइकै।
सोक-तिमिरावृत उरंतर हमारो, ताहि
करहु प्रभासित निरंतर सुभाइकै। ३।

'धानुष धुरीन धीर धनुष धरैयन मैं,
भैयन मैं अग्रज महान बलदर्पी हौ।
सस्त्र-गति-बिधि के बिधाता, दिव्य अस्त्रन के
ज्ञाता, रन-कोबिद, अतीव तेज-तर्पी हौ।
पायो तप-अर्जित बरस्त्र ब्रह्मअस्त्रौ तुम,
काय-मन-बचन समस्त पितु-अर्पी हौ।
बिद्याधर, अमर, उरग, नाग, जच्छ आदि,
दिति-कुल सत्रुन को समन-समर्पी हौ।४।

'जीत्यो सुरलोकहि, बितीत्यो बहु काल नाहिं,
रीत्यो अरि-ओकहि स्त्र-धाकन के धसकैं।
बन्या लौं बढ़ाइ बल धन्या नागकन्या ल्याइ,
जन्या कीर्ति-संजुत बिवाह्यो ताहि बस कै।
जाकी कूर कसक उसाँसन के संग संग,
अजहूँ फनीस के हिए मैं आइ कसकै।
तौऊ है बिरोधी करि न सकैं बिरोध कछु,
रहि अवरोधित मनै ही मनै मसकैं।५।

'ब्रह्म-अस्त्र-संजुत सु तोंको रन मध्य देखि,
सुरन-समेत सुरराज दीठि जोरै ना।
असुर-निकाय हू सदैव बस तेरे रहि,
तुम्हरे निदेस तौं कबौ हू मुख मोरै ना।
तप-बल-अर्जित अकूत बल तेरो पूत,
तूतौ कबौं समर सहायक बटोरै ना।
रिपु-बल बीते बिना धनुष टकोरै नाहिं,
अरि-दल रीते बिना छाव निज छोरै ना।६।

'बिस्व मैं बिभात तात तेरो अवदात जस,
अतिरथ ख्यात तू अजेय गति-ज्ञाता है।
संतत समर्थ अर्थ-साधक हमारो तुही,
बाधक बिरोधिन के बल को बिधाता है।
आयो एहि औसर असोकबन-अंतर मैं,
गब्बर गनीम एक जब्बर जनाता है।
जाइ देखु को है स्वत्ववान कपि-रूपी तौन,
जिष्णु है कि बिष्णु है कि आपुही बिधाता है। ७।

'बिपिन उजारे, बहु रच्छक सँहारे, मारे
किंकर असी हजार, सात मंत्रि पूतै, पूत।
पाँच भट सुभट महोदर समेत तव,
सोदर अछै को करि डारयो रन-मख-हूत।
अति बिकराल है, बिसाल-काय काल आप,
आयो कपि-रूप लै प्रबिसि तन पंचभूत।
वाके बल-बूत को न कूत करि आवत है,
निज-मुख बोलै अपने को रामचंद्र-दूत। ८।

'ताते तुम सत्वर सनद्ध सुरथी ह्वै, पथी
होहु जुद्ध उद्यत बिरुद्ध कपिबर के।
ओज सौं हनोज फौज-फक्कड़ बिनाहीं बीर,
संग अंग-रच्छक निसाचर-निकर के।
सेना होति लंगर समान परि संगर मैं,
एक के भगे ते सबै भागत भभरि के।
याते रहि निर्भर स्वपौरुष धनुष ही पै,
जाइयो सतर्क तीर बीर बनचर के। ९।

'बूझि अरि-गति को अरूझि मत जैयो, जाइ
जूझियो तबैंही जब जूझिबो सहज होय।
बल अनुमानि, मानि आयस हमारो, ठान
ठानियो अठान जो न भानिबो सहज होय।
करियो सम्हारिकै प्रहार इमि अस्त्रन को,
जासों तेहि मारिबो न, पारिबो सहज होय।
फेरि इमि कीजियो उपाय बस ल्याय ताहि,
जासों मोहिं आँखिन दिखाइबो सहज होय'।१०।

पाइ पितु-आयस सुआइ गृह इंद्रजीत,
इबिधि बिषाद्यो ज्यों बिषादै बंदि कारा मैं।
बोलि अंगरच्छक अकूत बलवारन को,
बोल्यो, 'सज्ज होहु,जुद्ध करिबो बिचारा मैं'।
फेरि माँग्यो सुरथ महान गथवारो पास,
आपौ लग्यो अँटन उमाह के अँटारा मैं।
सज्जित सनाह सों सनद्ध धधक्यो सो इमि,
धधकै कृसानु ज्यों पिनद्ध धूम-धारा मैं। ११।

चारुकृति चित्रन सों, अद्भुत चरित्रन सों,
मित्रन सों पूजित, महान अभिनेता है।
उमहि उमाह सों बढ़्थो यों बढ़ै जैसे देखि,
पर्व-सर्वरीस को बिछुब्ध अब्धि चेता है।
चारि नाग जोजित सुसज्ज रथ आयो देखि,
प्रमथ समान मथि पथहिं प्रनेता है।
आयो पन्नगासन समीप पन्नगासन सों,
धायो सत्रु-सासन को त्रिजग-बिजेता है।१२।

लाल लाल ईछन सों, ताकनि तिरीछन सों,
बीछत मनो वह प्रधान प्रतिदुंदी को।
गाहत गहन पथ उर मैं उमाहत सो,
चाहत चरम चाब भाव कपि कुंदी को।
धूरि झर झेलत, उसाँसि रिस रेलत,
पछेलत पिछैल पौन हू के तीव्र तुंदी को।
जात मन ही मन सुधारत गँठीली गाँठ,
गाँठन को कपि पै सुगाँठवारी फुंदी को। १३।

मंद भयो मंद को अमंद बल आपै आप,
बंद भयो द्वंद ग्रह-उपग्रह आदी को।
नदतन भानु भो बिनिंदित कृसानु-तेज,
तुंदित प्रबेग भो प्रचंड पितुबादी को।
क्रंदन करन लागे बिकृत बिहंग-बृंद,
धुंदिन गई ह्वै दिसा रूप लै बिषादी को।
पिंदित पुहुमि होन लागी धमकनि पाइ,
धायो जब स्यंदन जकंदि घननादी को।१४।

घावत छितिहिं, छार छावत दिगत पूरि,
चावत सुचाव चित जावत जमाति जोरि।
ढावत गजब गाढ़ गब्बर गनीम पर,
तावत सुतात जस दारुन दिमाक दारि।
धावत धरा पै रथारूढ़ जात सौंहैं कपि,
पावत न तोष रोष-रस मैं हिए को बारि।
सक्रजीत पहुँच्यो समच्छ अच्छहारक के,
भासमान भावत भयानक भयो सो भोरि। १५।

आए जुरि जच्छ-नाग-पन्नग-उरग-सिद्ध-
साधु-समुदाय औ निकाय सुमनस के।
कौतुक बिलोकिबे को सौतुक नभस्थल मैं,
खार मैं खए से भए बिस्मित मनस के।
चकित खरे ते अरे भय मैं भरे से भूरि,
कंटकित काय ह्वै ह्वै फल से पनस के।
इकटक हेरत, न फेरत चखन चाहि,
समर समानवय दोऊ जुवनस के।१६।

ज्यास्वन-सँजुक्त रथ-रव के परत कान,
बीर हनुमान के हिए मैं मोद भरिगो।
फरकि उठ्यो त्यों बरिबंड भुजदंड चंड,
गंड-मंडलस्थल पै आब सों उभरिगो।
उच्च करि अच्छन ततच्छन समच्छ देखि,
आयो रूढ़ सत्रु गूढ़ जत्रु ह्वै ठहरिगो।
घन घन साँस लैलै, उसँसि उसाँसि लैलै,
आसन उकासि गँसि गाँस मै सम्हरिगो।१७।

तौं लौं चमकावत बिसेस बिजुरी लौं चाप
चाँपत अधर दीह दाप दहि दावा सों।
आयो इद्रजीत ह्वै अभीत कपि-केहरी के
पास धूरि धारा के घटा तैं कढ़ि कावा सों।
कोप के कषायत करेरी करि दीठि नीठि,
दीठत अचैन फेन फैल्यो मुख मावा सों।
लाग्यो बरजोरन टकोरन धनुष, सर
जोरन और छोरन सुलच्छ पर छावा सों।१८।

अरिबर-जोजित सरौघ के घटा मैं अँटि,
राज्यो कपिराज बर्द्धमान बपुधारी यों-
राजै ज्यों अदभ्र अभ्र-अंतर-उदोत भान।
तड़ित प्रमान कौंधि कढ़त छटारी यों।
गरजि गरजि देत बरजि अवाजन तें,
तरजि तरजि देत कूदि कै उछारी यों।
चरि अध ऊरध पतंग ज्यों छलावा दै दै,
वारत पतंग कर-निकर ख-चारी यों।१९।

गहि गहि हाथन सों, केतिक सुदाँतन सों
तोरि तोरि दसहूँ दिसान मैं दवारे देत।
केतिक चपेटनि सों केतिक झपेटन सों,
लूम के लपेटन सों केतिक पवारे देत।
केतिक उड़नि केती गड़न लड़न ही तें,
केतिक अड़नि मैं उड़ाइ निरवारे देत।
वारे देत केतिक सहेतु किलकारनि सों,
कपि अरिवारे सर-निकर निवारे देत।२०।

दोऊ तुल्य बीर, दोऊ पौरुष गँभीर धारे,
दोऊ रन-धीर औ अधीर अमरष से।
दोऊ सस्त्र-बिधि के बिधाता, अस्त्र-ज्ञाता दोऊ,
त्राता रिपु वार के तयार नोक नष से।
दोऊ बेगधारी अरि, अरि के सिकारी दोऊ,
दृढ़ बलकारी अबिकारी चोष चष से।
लागे पर-छिद्र हेरि-हेरिकै प्रहारन औ
वारन परस्त्र अप्रधर्षित करष से।२१।

उज्वल फलकवारे आसुग, अनोखे, चोखे,
स्वर्ण-पुंख-पुंखित असंख्य हनि-हनिकै।
मारे लच्छ लच्छि ते सपच्छ अहि-सावक से
फुंकरत धाए कपि सौंह फनि-फनिकै।
अंतर मैं अरिकै निरंतर बचायो दाव,
पायो नहिं घाव ऐकि ताव तनि-तनिकै।
अर्थवारे संचित अमोघ अस्त्र ताके सबै
कीन्ह्यो ब्यर्थ मर्कट समर्थ गनि-गनिकै।२२।

ब्यर्थ होत लखिकै अब्यर्थ सर-रासिन को,
सक्रजीत मन मैं अनथ अनुमान्यो फिर।
अस्थिर हिए को करि सुस्थिर बिचारि ठोक,
कपि है अबध्य दिब्य देही यह मान्यो फिर।
यापै कस पाइबो स्वबस की न बात तौऊ,
अकस न जात घात हेरत हेरान्यो फिर।
बंद करि बान-बरखा को करखा मैं भरयो,
द्वंद करिबोई इरखा मैं उर आन्यो फिर।२३।

तौ लौं बज्रनाद सों ननर्दत, अराति-दल
अर्दत-बिमर्दत मही पै महाबेग भरि,
बिहद बिसाल लै उताल तरुताल एक,
हाल फाल फेंकत कराल काल-रूप धरि,
धायो पिंगलोचन समच्छ लाललोचन के,
मोचन अमर्ष अस्त्र रोष मैं रुषायो हरि।
एक बार ही मैं भंजि डारयो रथ-सारथी को,
मारयो अगरच्छक अरीन इरषा मैं अरि।२४।

दैत्य-कुल-नंदन, अनंदन मदोदरी को,
देखि भग्न स्यंदन, जकंदि पुहुमी पै आइ,
मर्दित मृगेंद्र सों अकंदत धरा पै धाय,
आय कपि संमुख सरोष समुहान्यो जाइ।
सत्रु मान कंद को निकंदक मरुतनद,
नंद्यो अरि आगत निहारि उर उमगाइ।
बढ़ि बढ़ि दोऊ भिरे द्वंद करिबे को ऐसे,
जैसे मेरु-मंदर परस्पर भिरत धाइ।२५।

ठोंकि ठोंकि परिध-प्रमान भुजदंडन को,
दोऊ चंड बिक्रम प्रचंड पड़ने लगे।
जोरि कर कर सों उदंड दोरदंडै दंडि,
मुंडन सों मुंड को उमंडि अड़ने लगे।
घुमरि घमंड सों खमंडल समान ह्वै ह्वै,
बाँधि दृढ़ मंडल मही मैं गड़ने लगे।
मंडन अनी के चंडकर के समान दोऊ,
खंडि रिपु-दंडहि उदंड लड़ने लगे।२६।

ऐंचि ऐंचि, पेंचन पै पेंच बाँधि बाँधि दोऊ,
दाँवन पै दाँव कै कुदाँव मैं समाने जात।
छुटि छुटि, जूटि जूटि, दपटि दपेटि द्रुत,
लपटि लपेटि कै चपेटि समुहाने जात।
झपटि झपेटि कै, झुकाइ झट झोंकनि सों,
झाड़ दै दै, अरुझि, सरुझि, बिरुझाने जात।
जाने जात बिलग न चक्कर करत दोऊ,
चक्कर समान एक एक मैं अमाने जात।२७।

माथ मिले माथ सों सु हाथ हाथ हाथ मिले,
साथ मिले दुर्धर महान बलधारी दोय।
सीने मिले सीने सों पसीने सों पसीने मिले,
झीने झीने झरत रुमावलि पनारी होय।
कीने मिले हृदय यकीने ना अकीने मिले,
चीन्हे मिले धक्कन की धरकनि जारी जोय।
दीठिन सों दीठि मिले गँठत गठीले दोऊ,
हठत हठीले, पर मानत न हारी कोय।२८।

योंही भिरे तुल्य-बल संगर-करैया दोऊ,
लंगर लगाय एक एकनि पछारी देत।
तौ लौं एक डारिकै अड़ंगा तासु तोड़ करि,
डूबि बगली दै नभ-पथ मैं उछारी देत।
दूजो देखि नेकी तासु, ढेंकी दै गिरायो चहै,
एक झट खैंचि पट निपट निछारी देत।
दूजो छूटि भू पर तरूपर तरपि आइ,
झरपत एक काट कै कै करछारी देत।२९।

योंही बहु बेर लौं अगेरि प्रतिद्वंदिन कौ,
दोऊ द्वंदकारी भरे भारी मद-बल ते।
परत न ढीले जऊ गीले भए अंगन ते,
ढंगन ते लरत सिथीले ना प्रबल ते।
सकत न जीति एक एकहिं उपाय करि,
काहू बिधि, बिक्रम तैं, छल तैं, न बल ते।
तब गुनि मन मैं अजीत सक्रजीतै कपि,
कीन्ह्यो बज्रमुष्टिक-प्रहार दृढ़ बल ते।३०।

परत पहार सो प्रहार मुष्टिका को सीस,
खीस कढ़ि आयो इंद्रजीत अभिमानी को।
घुमरि गिस्यो सो महि मुरछि पछारा खाइ,
भूल्यो हास-रोस, रह्यो जास न जवानी को।
कछु छन बीते चेत पाइ अकुलाइ उठि,
सिथिलित इंद्रिन थिराइ दृढ़ आनी को।
गहि कै गलानि, अनुमानन हिए मैं लग्यो,
केहि बिधि जीतौं जंग ठानि कपि मानी को।३१।

सब दिसि सोचि, मोचि उर के बिकारन को,
माया-बल जूझिबो अबूझ उर आन्यो सो।
सरभ-समान नभ-पथ लै अलभ ह्वै कै,
गरभ-प्रमान तम-गरभ समान्यो सो।
मायापति-दूत हू अमाया तासु माया-मध्य,
आया पास तौलगि अकाया ह्वै बिलान्यो सो।
छिति मै छपान्यो, किधौं खेह मैं खपान्यो, नीच
बीच मैं न जान्यो जात कित को हेरान्यो सो।३२।

देख्यौ जब नाहिं ताहि कपि चख गोचर सों,
सोच-रत ह्वै गयो बिमोचत पलक को।
फेस्यो दृग दिसि मैं नदिसि मैं निबेस्यो भले,
तबहूँ न हेस्यो कहूँ खल के झलक को।
तौ लौं अंतरिच्छ सों अचानक निकरि अरि,
आयो कपि पृष्ठ पै दुरावत दलक को।
चाह्यो बढ़ि बाँधन, परत हाथ काँधन पै,
घूमि गह्यो मारुती अबाधन अलक को।३३।

पकरत केस के बिसेस बिकलान्यो फेरि,
खल मल सान्यो सो बिधान्यो छल-साज-को।
करिकै पखंड चंड कर तैं निबुकि, घोर-
घन-तम खंड मैं लुकान्यो गहि लाज को।
रहि तित रच्छित हिए मैं अनुमान्यो, जान्यो
मर्कट महान है पठायो रघुराज को।
दुर्धर अबद्ध औ अबध्य दिव्य अस्त्र बिन,
ह्वैहै ना निबद्ध औ नसैहै कुल-काज को।३४।

करि इमि निस्चित बिचार, अनुसारता के,
साध्यो बर अस्त्र अनुदार अनबादी नै।
धायो बर-बिद्युत बिभा सों भर्‍यो अस्त्र वह,
दीपत दिसान देखि ताहि कपिवादी नै।
उर अनुमान्यो ब्रह्म-बर्चस प्रयुक्त यह,
अस्त्र है महान, जाहि जानि हठबादी नै--
साधिबे को अर्थ औ अनर्थ अवराधिबे को,
बाँधिबे को कीन्ह्यो है प्रहार प्रतिबादी नै।३५।

जद्यपि पिता के बर बल सों अवध्य हम,
तदपि पितामह के अस्त्र की महत्ता को--
राखिहौं अवस्य, आइ बस्य मैं निसाचर के,
लखिहौं सु याही ब्याज रावन की सत्ता को।
इबिधि बिचारिकै बिबेक अनुसासन को,
मानि सर-सासन बिकास की इयत्ता को।
गुरछि गिर्‍यो सा उर छत लै अछत अंग,
मुरछि मही पै ढंग छोड़ि बलवत्ता को।३६।

मुरछित देखि उर छिति पै प्लवंगम को,
जंगम निसाँक आँक हिय मैं गँसायो सो।
कढ़ि तम घन सों बिघन सों उकढ़ि नीके,
बढ़िकै सकात बातजात पास आयो सो।
सबिधि निहारि कै,बिचारि बिधि बाँधन को
बाँध्या नागपास मैं असाध्यो सिधि पायो सो।
हरषत हो मैं छार करषत धीमे धीमे,
लक की गली में जात गबे मैं अमायो सो। ३७।

बाँधि मारुती को कारुती सों चल्यो इंद्रजीत,
जा रुती सों मेघ बिज्जु कारा किए जात है।
मानत न संक लंकपति के लखैबे काज,
दुवन दराज को सहारा दिए जात है।
जानत न मूढ़ गूढ़ ग्रह को दसा को रूढ़,
ब्यूढ़ बुद्धिवारो मद-धारा पिए जात है।
हाहाकार पारिबे का, बगर उजारिबे को,
जारिबे को नगर अँगारा लिए जात है।३८।

ब्यालपास-बद्ध सुनि आवत कपीसै इत-
तित के अराति-गन कौतुक बिबस से।
धाए धाम-काम छाड़ि छोड़ि अतुराए आए
जुरि पथ बीच अति उत्सुक मनस से।
देखि देखि कीसै उर रेखि-रेखि रीसै सबै,
लागे रद पीसै भए आकुल अकस से।
लै लै बररोह कोह करिकै गरोह बाँधि,
लागे फेरि बाँधन कपीसै करकस से। ३९।

निरखि निबंधन प्रबंध मद-अधन को,
गंधवाह-नंदन स्वकंध संकुचित कै।
अर्कबंधु सद्दस बँधायो अंग बधन मैं,
रंध्र उर पायो यों बिचार समुचित कै।
कृत्रिम अजोग उद्बंधन लगत गात,
जात ब्यालबंधन प्रभाव संकुचित कै।
सो तो अनुबंधन लगाई इन अंधन नै,
आपै कियो ब्यर्थ अच्छ-बंधुहि दुचित कै।४०।

जदपि अबध्य बिधि-बर तैं सदैव हम,
तदपि सुबद्ध होइ देवपति-तापी तैं।
आयो इत प्रभु के निदेस निघटावन को,
अघटित घटना घटावन को आपी तैं।
यातैं जानि ब्यर्थ नागपासहि स्व-अथ मानि,
रहिबो हमैं है बँध्यो योंही दृढ़ दापी तैं।
चौसर के दाँव सों सुऔसर परे पै फेरि,
बदलो चुकैहौं छूटि लंकपति पापी तैं। ४१

धोखा देइबे को राखि मन मैं बिचार इमि,
ओखा ह्वै बलीमुख बिसेस मुरझायो सो।
पायो अवकास ना उसाँस उकसावन को,
तौलौं दैत्य-दल हू सरोस सुरझायो सो।
उरझि पर्यो यों बृद्ध बेस कपि-केसरी पै,
गुरझि परै ज्यों तम तेज पर छायो सो।
हाथन तैं, लातन तैं, बातन, अघातन तैं,
लाग्यो कपि-गातन बिघातै बिरुझायो सो।४२।

अर्दित ह्वै कै अरातिन सों इमि,
मारुति घोर ननर्दन लाग्यो।
दाबत दंतन सों अधरै,
न धरै पद गर्द बिमर्दन लाग्यो।
धूम धकाधकी मैं धँधिकै,
बँधिकै अधिकै दिसि दर्दन लाग्यो।
बर्दन सों अड़िकै गड़िकै,
पड़िकै पुहुमी मैं प्रतर्दन लाग्यो। ४३।

या बिधि सों सहि घात कुघात,
अघात अरातिन को रिस मारे।
चक्रित सों चहुँ ओर चितौत,
हितौत लखात न कोऊ बिचारे।
बद्ध लता-द्रुम-चीरन सों,
मति धीरन सों छलकै बल धारे।
बारिदनाद के हाथ घल्यो,
कपि जात चल्यो दसमाथ दुआरे। ४४।

इंद्रजीत आवत बढ़्यो बाँधि कपिंदहि भौन।
खबर जनावन हित चले हरबर चरबर जौन। ४५।

इति श्रीलंकादहन काव्ये अग्न्यानयन नामकःद्वितीयः सर्गः।

——

तृतीय सर्ग

अग्नि-संस्थापन

लखन कुमार को सहायक सुमार वारो,
घिरिकै अरातिन-तुमार मैं निबद्धकाय।
ऐंच्यो जात महत मतंग मद-दर्पित सों,
खैंच्यो जात द्रोहिन सों यों ही कछु दूर जाय।
सहसा बिलोक्यो बर बिहद बिभा सों भर्यो,
राजद्वार कलित कपाट कमनीय काय।
अति ही उतंग जाके सृंग पै सुभृंग रूप,
कलस बन्यो सो रबि राजत बिराम पाय। १।

चख चकचौंधि जात निपट निरीछन मैं,
पास के परीछन मैं दीपत दिपायो सो।
जात रूप-रचित महार्ह रत्न-रासिन सों,
खचित बिमोहक बनक सों बनायो सो।
चित्रित बिचित्र चित्र पचि पचि कोरन तैं,
मति के मरोरन उरेहि उभरायो सो।
लुंज करि डारत सुदीठि पग ज्योति पुंज,
वारत अवैयन को दूरि तैं दुरायो सों। २।

गज, रथ, तुरँग, सवार, पदचारी बहु,
लै लै सब सानित सतर्क रहि सावधान।
रच्छत सदैव जाहि जतन अनेकन सों,
करिबो प्रबेस जामैं सहज न होत भान।
ऐसो राजद्वार गढ़ लंक को बिराजै बेस,
तामैं बद्धबेस सों प्रबेस करि हनुमान।
देख्यो दसमौलि की सभा को निज आँखिन सों,
जाहि लखि भागत सुरेस हू को अवसान। ३।

बड़े बड़े बीर बिकटानन बिसालकाय,
सक्ति, सूल, परिघ, कृपान गहि-गहिकै।
रच्छत असंख्य घेरि घेरि चहुँ फेर जामै,
सक्ति पौन हू के गौन की ना चहि-चहिकै।
और की कहै को लोकपाल दिकपाल सारे,
बरुन कुबेर जम काल डहि-डहिकै।
सभय बिनीत, छाव छोरे भाव भोरे भए,
चाहत चितौनि कर जोरे रहि-रहिकै। ४।

ग्यानवान सील बय बृद्ध बहु मंत्रिन के,
डीलवारे जंत्रिन के करकस फेरा मैं।
बैठो लख्यो रावनैं अमात्य परिषद संग,
तपत तपाकर समान ग्रह-घेरा मैं।
सहज सुभाव ही तैं चितवत जाकी ओर,
सहमि सकात सो सुखात हदसेरा मैं।
प्रबल-प्रताप पर-ताप-दनवारो देखि,
रेख्यो कपि संक ना अतंक उर-डेरा मैं। ५।

इबिधि प्लवंगम प्रबुद्ध सक्रजीत बाँधि,
स्वबल-प्रतीति साधि साध मैं सकस कै।
खार मैं खराया खिंचवावत अरातिन सों,
दुष्ट दनुजातिन सों कूर करकस कै।
ल्यायो पितु संमुख सगर्व समुहायो आइ,
देख्यो कपि रावनै निरेखत नकस कै।
ताके दृग दीसत सरीस बीस ऐसे जैसे
दीपत प्रदीप तम तोम मैं अकस कै। ६।

नीके कै निहारि नख सिख लौं निरेख्यो कपि,
देख्यो लंकनाथहिं महान दीप्तिधर सों।
दीपत दिपै ज्यों घन-बन मैं प्रकासमान,
पुंज खरसान को खरायो खेह खर सों।
ताके कृष्ण अंगन तें उफनत आभा इमि,
भासै ज्यों नवाभा घन-ओट अंसुकर सों।
अथवा सुनीलम निलै सों कढ़ै जैसे ज्योति
बिद्युत बिकास की उदोति तेजतर सों। ७।

मुक्ता-मनि-मानिक-प्रयुक्त, रत्न-रासिन सों,
रंजित मुकुट दस सीस पै कनक के।
राजै प्रति अंग पै बिभूषन रचित-हेम,
हीरक-खचित बेसकीमती बनक के।
पहिने महीन झीन रेसमी बसन तन,
नेवर जनात ताव तेवर तनक के।
भाल पै लसत लाल चंदन तिरेख तापै
रोस-स्रम-कन सोहै बीज से कनक के। ८।

बीजुरी सरीखे दरसात दंत तीखे तासु,
लंबमान अधर बिभात गिरि-खोहा से।
बीस द्रिग दीसत सरीस अरुनारे भए,
कलित कृसानु सानुमान काल कोहा से।
बीस स्रौन बीस घ्रानरंध्र नग-कंदर से,
दस सिर भारे सैल-सृंग सम ढोहा से।
आप प्रान-संजुत सु हेम के सिंहासन पै,
बैठ्यो कज्जलाचल-प्रमान सजि सोहा से। ९।

सिर कर निकर सँजुक्त दनुजेस उक्त,
बैठ्यो महाओजस-प्रजुक्त गर्ब गहिकै।
ब्यालाकीर्न सिखर समूह सहमंदर ज्यों,
पंच प्रान पूरित बिराजै थल लहिकै।
ताके भुज बीस पंच सीसवारे पन्नग से,
दीसत अचैन बल मद मैं उमहि कै।
फरकि फरकि जात उकसि उकसि कस-
मसकै सु आपुस मैं आयुध उगहिकै।१०।

साजि बर बसन बिभूषन बिसेष, प्रमदागन
प्रमोदित ढुरावतीं चमर लै।
छकित छरी ह्वै सुर सुंदरी पुरंदरी सी,
बीजन डुलावतीं हरी सी हरबर लै।
अगरि अदीब ह्वै नकीब ललकारैं देत,
चोबदार चतुर जनावत खबर लै।
सहित समाज सुरराज के सभा सों बढ़ि,
राजति सभा है असुरेस की दबर लै।११।

दीसत दराज पोखराज के सुखंभन पै,
मरकत डार मेहराब सों सुधारी सी।
तापै लदी छत है लदाऊ नव नीलम की,
फटिक सिला की गच ढरबर ढारी सी।
झलकैं झरोखन मैं चौखट प्रवाल ही के,
कुलिस कपाट पट जुगति सँवारी सी।
बिहद बिभा है लंकपति के सभा की जाहि,
जोहि दरसाति दिसि दीपति दवारी सी।१२।

दर औ दिवारन मैं बिबिध प्रकारन के,
नग दै सजाए हेम कुंदन कनिक से।
गरदे बचाइबे को परदे दरीचिन में,
दरसैं सँवारे जाल मोतिन के चिक से।
झलकैं हिरागन की झालरैं झुलति तौन,
देति हैं चिरागन की चमकैं चिलिक से।
जेब देत फरस जरी को यों जमी पै जिमि,
आयो आसमान लै सितारे बेस बिकसे।१३।

चंद्रमनि-चर्चित चँदोवा चारु चंद्र ऐसो,
उलह्यो अधर बीच, अद्भुत ललक देत।
तापै पद्मराग मनि मंडित मजेजवारी,
झुकि झुकि, झूमि झूमि, झालरैं झलक देत।
ताके तरे हीरा-हेम-निर्मित सिंहासन पै,
सासन के हेतु कमलासन कलक देत।
बैठ्यो लंकनायक सहायक समाज साजि,
छोहिनै छलक निज द्रोहिनै दलक देत।१४।

कारीगरी देखि दसमौलि की सभा की इमि,
वारी गई बुद्धि द्वेसकारी देवतान की।
हारी सुर-सिल्पी की अनल्प मति आरी भई,
भारी भई सूझबूझ सुघर सुजान की।
देख्यो नहिं लोक मैं, बिसेख्यो अहि ओक, नाहिं
रेख्यो कपि उर मैं सु रेख अनुमान की।
मय ने बनायो जासु जोड़ नहिं जायो जग,
आपु सम आपुही सभा है जातुधान की।१५।

रन मैं असीम भीम बिक्रम करनवारे,
उद्धत अरातिन सों जौऊ होत पीड्यमान।
तौऊ बनि अर्दित समाज साज रावन को,
ऐसो महा तेजस प्रयुक्त देखि हनुमान।
बिस्मित ह्वै सस्मित चकौहैं चख चाहि चाहि,
थाहि थाहि थाहक निगाहन सों नीतिमान।
सोच पथ चारै लग्यो, सुमति सँचारै लग्यो,
उर मैं बिचारै लग्यो करि करि तर्क मान।१६।

तर्क करि बुद्धि सों बिचार्यो, उर धार्यो कपि,
जद्यपि अधर्म को करैया दसमुख है।
तदपि प्रताप याको अद्भुत अचिंत्य देखि—
परत, न जान्यो जात धर्म तैं बिमुख है।
कैसो धैर्य, सौर्य, बीर्य, बिक्रम, बिभात याको,
कैसो सर्व लच्छन प्रजुक्त रुचि रुख है।
कैसो कांतिकलित सु याको दिब्य आनन है,
भान होत दूजो दिनकर सों परुख है।१७।

होते जौ न याके कुल कर्म ही अधर्मवारे,
तौ तौ यह समंद त्रिलोक को बिजेता ह्वै।
होतो आज सासक सुरेंद्र-सह देवन को,
त्रासक त्रिदेवन को प्रबल प्रनेता ह्वै।
तौऊ अँटि एते अघ ओघ की अटा मैं यह,
अबलौं असह्य तेज धारत धुरेता ह्वै।
अवसि अपार तप-बल है अधार याकौ,
ना तौ नसि जातो बेगि बर्चस बिचेता ह्वै।१८।

साचि सोचि याके निंदनीय कुल कृत्यन को,
सुर-समुदाय हू सनाह सहमे परे।
अधतल-बासी सुधासर के सकासी तेऊ,
भय के प्रदाहन अदाह दह में परे।
भूतल निवासी बल मद के बिलासी वेऊ,
जीवन मरन के अचाह चह में परे।
जोरै कौन दीठि, ढीठ हठि सठनायक सों,
सबही अतंक के अथाह थह में परे।१९।

इबिधि बिचारत मनहिं मन, कपि केहरी कुमार।
निरख्यो रावन को लखत, निज दिसि बारहि बार।२०।

इति श्री लंकादहन काव्ये अग्नि-संस्थापन नामकः तृतीयः सर्गः

———
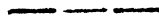
चतुर्थ सर्ग

अग्नि प्रज्वालन

राम प्रिय दूतहिं, ससोच अति रोचत,
बिमोचत पलक पेखि, सौंतुख सकायो सो।
पूछ्यो मंत्रि प्रमुख प्रहस्त सों परुख ह्वैकै,
दसमुख रोस मैं अतीव कुरुषायो सो-
'पूछौ, यह को है, अति अभय बन्यो है जौन,
आयो एहि ठौन कहि कौन को पठायो सो।
बिपिन उजारि, बहु बीरन सँहारि, केहि-
हेतु संक पारथो लंकपुर मैं उधायो सो'। १।

पाइ प्रभु आयस प्रहस्त मंत्रि सत्तम नै,
दै दै बोध उत्तम अनेक बिधि कपि सों।
पूछ्यो,'भय छोड़िकै बतावौ,कहौ को हौ तुम,
कौन के पठाए इतै आए कपि अपि सों।
कीन्ह्यो केहि कारन अनेक उतपात घात,
रच्छस जमाति को उधायो तेह तपि सों।
धारे तेज तीछन, बृषा कपि समान रूप,
कपि को सुधारे क्यों पधारे छाव छपि सों। २।

'त्यागि भय सम्यक स्वकीय अपराधनि को,
और बिधि बाधन को दूरि कै भरम नै।
मनको थिराइ, कूट कपट दुराइ, झट-
पट दै बताय, सत्य सत्य बेस कम नै।
भेज्यो तोहिं कौन इत द्रोहिनै दमन हेतु,
करि षडयंत्र तंत्र योजित असम नै।
धनद नदीस नै, कि आकुल अहीस नैं,
कि जिस्नु असहिस्नु नै,कि बिस्नु नै,कि यम नै? ।३।

'अनृत कहे ते तव मानहृत ह्वैहै जानु,
प्रान तौ तिहारौ धृतमान ह्वै धरोई है।
और ब्यवधानन के बिबिधि बिधानन मैं,
मोकों तो लखात उपधान उभरोई है।
यातें छूटिबे की चाह चाहै,तौ न चाहै चाहि,
सच कहि दै तो निरबाह निकरोई है।
हौं हूँ तोषजुक्त तू बिमुक्त होय दोषन तैं,
फेरि तव बन्ध तौ अजुक्त ठहरोई है'। ४।

सुनि यों प्रहस्त के प्रसस्त अनुसासन को,
मानि नृप सासन सुधारि सुठि बानी को।
बोल्यो जुक्ति जुक्त कपि पुंगव दसानन सों--
'मैं हौं नहिं भेज्यो जिस्नु बिस्नुचक्रपानी को।
समन, धनेस को, न बरुन, जनेस हू को,
पठयो फनीस को, न रुद्र गुनग्यानी को।
मैं हौं बानराधिप सुकंठ को सहायक औ,
पायक प्रधान राम रघुपति मानी को। ५।

'कीस केसरी की प्रिया अंजनी जनी है मोहिं,
बायु के सुबीज तैं हमारो अवधान है।
जनम्यो बनौकस कुबंस मैं बलीमुख ह्वै,
पायो नाम बिधि को बतायो हनुमान है।
अंघ्रि कर बर सों उलंघि सरिताबर को,
आयो इत चढ़िकै पिता के बलयान है।
कपिपति काज, तव दरसन ब्याज लागि,
बिपिन उजार्यो, हेतु दूसर न आन है। ६।

'आयो इत जानि जिय कपि तन धारिन को,
आइबे की रोकटोक जग मैं कहूँ ना है।
खायो फल जौन तौन भोजन हमारो रह्यौ,
भूख मैं न जान्यो गयौ फल है कि पीना है।
बिटप उजार्यो सो सुभाउ ही सहज मेरो,
कपिकुल-जात बात कीना तौन कीना है।
बाकी रह्यो दोष एक बधिबे बधाइबे को,
सोऊ कियो रखिकै न रंच उर कीना है। ७।

'ताप ते तिहारे किधौं दाप के दहारे दौरि,
आपुही तिहारे बहु किंकर निकर जाय।
उरझि परे ते हठ हटकि हमारे संग,
गहिकै कुढंग जंग हेतु समुहाने धाय।
देह प्रान संतत सबै ही प्रिय होत, यातैं,
वाही के बचाइबे को जतन कियो हौं जाय।
जिन मोंहि आड़्यौ तिन्हैं जीवत न छाड़्यौ अरु
जिन नहिं ताड़्यो तिन्हैं माड़्यौ ना निकट पाय। ८।

'आप ही बतावैं कहा यामैं अपराध मेरो,
मारै ताहि मारिबो प्रसिद्ध यह नीति है।
सोई हम कीन्ह्यौ, दुख दीन्ह्यौ ना दिखैयन को
और लघुभैयन को समह्यो सभीति है।
तौऊ जाय सुवन तिहारो बाँधि ल्यायो इतै,
साँसति करायौ सक भरिकै सप्रीति है।
सोऊ भयो सह्य पै, अबोध उतपीड़क ये,
चरन प्रहारत असह्य यह नीति है'। ९।

सुनि कपि बैन ह्वै अचैन बीसनैन बोल्यो—
'दुष्ट ! सुष्ट बोलि बोलि एतो ना बहक तू।
आयो जेहि कारन पठायो निज नायक को,
ताके इतिबृत्त के बिकास मैं जहक तू।
निज प्रभु नाम, धाम, काम की कथा को जथा-
क्रम तैं सुनाइबे के लाह मैं लहक तू।
दहक दबाइ उर अहक न राखु, भाखु,
अथ इतिवारो पथ पारि ना डहक तू' ।१०।

पौनपूत पाइ रुचि पावन अपावन की,
सहज सुभावन सुधारि बच बर को।
बोल्यो, 'अस कौन जग जायौ जो न जानत है,
राम सुभनाम भानुबंसी दिनकर को।
अंडज अधार बल बिक्रम अपार जाको,
अबलौं न पायो पार कोऊ जासु जर को।
देवदल मंडन, अदेवदल खंडन, उदंड
दोर दंडन दरैया दंडधर को ।११।

'चक्रवर्त्ति कोसल-नरेस दसरत्थ-जात,
तात बच लागि, त्यागि सहज सुलभ राज।
जाइ दंडकानन सबंधु प्रिय दारा संग,
बास कीन्ह्यो असन बसन तपसी को साज।
धनुधर धीर पीर निरखि मुनीसन की,
कीन्ह्यौ खल खीसिबे को दृढ़ पन याही ब्याज।
चौदह हजार जातुधान जनथान वारे
मारे त्रिसिरादि खरदूषन सुभट ताज ।१२।

'याही बीच बिधि के ब्यलीक ब्यवधान बस,
पाय अपिधान मोहि मति महरी गई।
सून बिजनास्रम बिसेष तैं अलेख रूप
माया करि जाया कोसलेस की हरी गई।
ता समै न जानो गयौ कौन छलकारी कर
ह्वित ह्वै सती सो गहि कौन डहरी गई।
ताकी हूक औचक अचूक बरछी सी बेधि,
राम रघुनायक हिए मैं गहरी गई।१३।

'कोक इव आकुल, ससोक अति ब्याकुल,
त्रिहाय ओक बंधु सह राम अभिहारी कै।
बन पथ गाहत सिया की सुधि साहत,
सु आए रिस्यमूक गिरि पास पदचारी कै।
तहँ करि कुंठित सुकंठ तैं मिताई,
सिया खोज करवाई सौंपि ताके सिर यारी कै।
एकै बान बधिकै महान बलसाली बालि,
दीन्ह्यौ कपिराजहिं सु राज अधिकारी कै।१४।

'स्वपद बिलुंठित, अकुंठित कपीस पद,
पाय अवगुंठित, सुकंठ सत्यबादी सों।
बोलि बोलि बानर समूह चहुँ ओरनि तैं,
पठयो निदेस दै, कठोर बनि बादी सों।
धाए ते असंख्य, लच्छ लच्छ कोटि कोटि कढ़ि,
बढ़ि बिखरे ते, दिसि बीच बपु बादी सों
तिनही बनौकस बिसेसन मैं हौं हूँ एक,
आयो लाँघि सागर त्रिकूट तटबादी सों।१५।

'आय इत सघन असोक तरु कुंजन मैं
देख्यो छाम बिगत अराम राम जाया को।
बैठी छबि छीन सी, अधीन असुरीननि के
बिलपति दीन सी, मलीन क्रिसकाया को।
देखि दुख पायो, रुष रोस मैं रुषायौ,
तऊ बोध उर पायो,सोध पाइ असहाया को।
गूढ़ गति गेरन, बिमूढ़ मति फेरन, सु
आयो बढ़ि हेरन तिहारी दिव्य दाया को।१६।

'बोलत अबाध इव, छमिबो पराध याको,
पंडित अगाध आप बिस्व मैं बखाने जात।
कीन्ह्यो बेदभाष्य जो सुभाष्य बुध बृंदन मैं,
बिबुध नरेंद्रन उपास्य करि माने जात।
पायो तप अर्जित अलौकिक बिभूति ऐसी,
यातें अर्थ धर्म के सुमर्मबिद माने जात।
तौऊ कर्म करत, अधर्मिन समान काहे,
सर्म छोड़ि भर्म के भरोसे भय भाने जात।१७।

'महिपतिमान बस, अथवा गुमान बस,
सान बस, आन के अटान मैं सकसिकै।
बीर कहवाय, कीन्ह्यो कायर समान काज,
द्रोह कै बिमोह बस, कोह मैं करसिकै।
ल्यायो हरि जानकी, प्रमान की कथा है कहा,
देख्यो निज आँखिन, तिहारे धाम धँसिकै।
अब तैं भलो है भल चाहत कियो जौ निज,
तौ तो छल छोड़ि, बात मेरी सुनौ रसिकै।१८।

'सचिव सुबधु सह, सादर सिया को भेजि,
जौ तू रघुनायक के पायँ जाय परिहै।
तौ तो वह औढर उदार सरदार आप,
तेरे सब दोषन के कोषन को हरिहै।
ना तो जानि राखु साखि दैकै हौं सुनाए देत,
रामरोष-पावक प्रबल जब जरिहै।
तब तव सलभ समान कुल ह्वैहै बेगि,
ब्रह्म रुद्र हू के उबराए ना उबरिहै' ।१९।

अप्रिय सुपथ्य सम हितकर तथ्यवारे,
बचन सवंगम के सुनत खिझायो सो।
बोल्यो दसमौलि, 'सठ हमको सिखावै ग्यान,
गुरु के समान, ग्यान मान मैं गुझायो सो।
जीत्यो जौन, समन, सुरेस, दिगपाल, काल,
कठिन कराल जस जाको जग छायो सो।
ताहि छुद्र मानत, प्रमानत अछुद्र नर,
वारन बिसेस मतिवारन भुरायो सो' ।२०।

बोल्यो कपि बिहँसि, 'सुपंडित समान तुम,
हमहिं संबोधन कियो जो कहि मूढ़ है।
सो तौ तव भूल, मूल ही मैं दरसात देखु,
कपिकुल-जात यह बपुख निगूढ़ है।
ग्यानी ह्वै बिसारि लाभ हानि जौन ठानि हठ,
चरत कुपंथ सोई बिमति अब्यूढ़ है।
हौं तो पसुप्रानी तापै गुनी हौं न ग्यानी,
तऊ मूढ़ता प्रमानी, तुम कैसे अति रूढ़ है ।२१।

'अप्रिय सुने मैं, पर सक्रिय हितैसी होय,
ऐसो बैन बिग्य जन बिहित प्रमानै हैं।
चाहे कहै कोऊ लघु गुरु के बराबरी कौ,
सहज सुभाव रीतिवारे ताहि मानै हैं।
अनुचित उचित बिचारि तेहि अंतर ते,
सुनत निरंतर सुधीर अनुमानै हैं।
अनख न आनै, जोहि जख कै न जानै ताहि,
ग्यान प्रद चख के समान सब मानै हैं।२२।

'सो तुम सुन्यो ना, हित अहित गुन्यौ ना, निज
सुपथ चुन्यो ना, बिधि बस प्रतिकूल है।
रोप्यो रारि ऐसे सो अनैसे जासु हेरे रंच,
सकुल नसैहौ जरि बरि त्रिन तूल है।
जीत्यौ जग जनित अजीतन अतीत्यौ तौन,
यह तौ अजायो जग जायो जासु मूल है।
आयौ सुर रंजन, मही को भार भंजन, सु
तोसे गूढ़ गब्बरन गंजन गदूल है।२३।

'जाके बल बिस्व यह बिस्व सो बिसेष्यो परै,
जाके बल धारत धरा को सेष साधै है।
जाके बल स्रिजत स्वयंभू स्रिष्टि संकुल यों,
जाके बल बिष्णु तेहि पालत अबाधै है।
जाके बल घालत पिनाकी ह्वै समर्थ जग,
जाके बल बलकि तुहू हूँ दिव दाधै है।
सोई नर रूप राम, तासों बनि बाम, सुभ
चाहै तौ बिमूढ़ता की हद हठि बाँधै है।२४।

'अंसी होत अंस ते बिसेसतर सिद्ध यह,
तुम कन अंस तासु, वह अखिलंसी है।
तुम तपवान, वह तप्यमान तेज आप,
आनँद अमाप, पुन्य पाप बहिरंसी है।
तुम अघकूप, वह अनघ अनूप सुधा-
सागर स्वरूप नर रूप अवतंसी है।
तुम असुरेस, निखिलेस कोसलेस वह,
तुम रिषिजात वह ख्यात रघुबंसी है।२५।

'तोहि सह महिप मही को मद गंज्यो जौन,
भंज्यौ भव धनुष कठोर तिन तर सों।
बिस्व बीच बिदित महान बलसाली बालि,
ताहि कहि बदिकै सँहाख्यो एक सर सों।
चौदह हजार रजनीचर अकेल आप,
माख्यो जो न वाख्यो गयो बीरबर खर सों।
कीन्ह्यो काज अमित अछुद्र जाहि जानौ भले,
तौऊ ताहि काहे अनुमानौ छुद्र नर सों।२६।

'छुद्र तुम अमित महान बलसाली वह,
तासों जु पै तेरी, सत्रुताई जुटि जायगी।
तौ तो जानि राखु, हौं सुनाइ समुझाए देत,
तेरे सगे बंधु की सगाई छुटि जायगी।
सहज सधाई साहिबी मैं, लगि लाह बीज,
नाक लौं बंधाई धाकधाई खुटि जायगी।
डंका देत ऐहैं जब बंका कपि भालु बीर,
लंका तब सोन की बनाई लुटि जायगी। २७।

जदपि सुरासुर सँघर्ष मैं सनातन तैं,
यहि बिधि आवत पुरातन बदी चली।
तदपि सुभक्त प्रह्लाद के प्रभावन तैं,
रुक सी गई ती जाहि बीतत सदी चली।
सो तू नई कीन्हीं नीच मीच बस जानत ना,
जब रन राघव की बान गरदी चली।
तब सह रच्छस निकाय, काय भूधर से,
तेरे बहु स्रोनित की निकरि नदी चली।२८।

ऐहैं नहिं काम ये हराम के गुलाम तेरे,
इनके बदन छाम छाई फिरि जायगी।
ल्याई गई लूटि जौन निधि की निकाई तौन,
संपति सवाई घर आई फिरि जायगी।
प्रभुता प्रभूत अति अद्भुत अकूत जौन,
तप करि पाई तौन पाई फिरि जायगी।
जाई फिरि जायगी, न जाई फिरि जायगी औ,
तेरे पुर राम की रजाई फिरि जायगी।२९।

केहरी बधूना बेहरी के बस बाँधे रहै,
नेह रीति राधे देहरी ते रुधि रहिहै।
वैसई अराम मैं तिहारे राम जाया आय,
अमित अराम पाएहू ना राम रहिहै।
ताके हेतु सकुल तिहारो नास ह्वैहै जानु,
एते बड़े बस मैं न सेस अंस रहिहै।
रहिहै अतंक लंक बासिन हिए मैं अरु,
तेरे कर केवल कलंक अंक रहिहै।३०।

तुम्हैं का दिखावैं भय, भीति भरे आप तुम,
नातो छल करि मद्‌बल बिसरायो क्यों।
जग विजयी ह्वै जाय निजई रघूत्तम सों,
लरि भगिनी को निज बदलो चुकायो क्यों।
कपट कुरंग संग ढंग करि कायर लौं,
छुद्र नर जानि ताहि दूरहिं दुरायो क्यों।
छायो लोक अजस, लगायो बीरता मैं आँक,
सूने जानकी को हरि निज गृह ल्यायो क्यों।३१।

राघव प्रताप ते सदाप हम आपुही ते,
सहज समर्थ प्रभु अर्थ साधिबे मैं हैं।
तोहिं सह अमित अराति अनुयायिन को,
खेल सौं अकेल हम दच्छ दाधिबे मैं हैं।
बद्ध मति जानै तू अबद्ध बिधिना के बर,
दृढ़ कटिबद्ध तव काल काँधिबे मैं हैं।
पर निज नायक निदेस बिन सक्य होत,
परम असक्य सों अनर्थ साधिबे मैं हैं" ।३२।

ब्यंग बिख चीखे बर बिसिख सरीखे, तीखे,
बचन अदीखे कढ़ि मुख ते बनारी के।
बिंधिगे इबिधि जाइ उर मैं तमीचर के,
जिमि बिंधि जात तम कर सों तमारी के।
अंग उठ्यो थहरि, लहरि दृग रंग उठ्यो,
ढंग उठ्यो गहरि, कुढंग रिसवारी के।
कैन बिरहित ह्वै, न बैन कढ़ि आयो मुख,
फेन बहि आयो दसो मुख ते बिकारी के।३३।

स्व-पर-हिताहित, बिवेक बिरहित ह्वै कै,
अमरषवान दसकंधर रुषायो सो।
घूरत कराल काल सद्दस कपीस दिसि,
सूरत भयंकर बनाय कुरुषायो सो।
बोल्यो घनसद्दस ननर्दंत अरातिन सों—
"यह सठ बर्बर बलीमुख बिषायो सो।
बोलत कुबोल याहि बधि करि डारौ बेगि,
खोलन न पावै मुख फेरि परुषायो सो" ।३४।

कपि बध लागि क्रोध अंध दसकंधर को,
दारुन निदेस सुनि उर अति क्लेस आनि।
न्याय प्रिय निपट अभीखन बिभीखन त्यों,
सुपथ सुझाइबो स्वकीय करतब्य जानि।
तजि निज आसन, सिंहासन समीप जाइ,
पाइ रुष स्वमत बिकासन को जोरि पानि।
सादर बिरादर बरिष्ठ सों बिनीत बनि,
बोल्यो बर बचन बिवेक बिरचौ हैं बानि ।३५।

"करिय छमापन स्वरोष तजि रच्छसेस,
सांतचित्त बिहित बिबेक बलधारौ तौ।
अर्थ-धर्म-तत्ववारे बचन हमारे सुनि,
उचितानुचित उर अंतर बिचारौ तौ।
सास्त्र-बुध-संमत परेख्यो कितै दूत-बध,
संत-मत हू मैं कहूँ देख्यो उर धारौ तौ।
पूर्वा पर ग्याता, राजनीति के बिधाता कितै,
कीन्ह्यो यह कर्म सो अधर्म ह्वै उचारौ तौ ।३६।

एक पै अनेक बिस्व बिदित जुझैयन को,
भेजि बँधवाइ, फूल जल सों प्रचारे को।
तापै निज संमुख बुलाइ दै घनेरो दुःख,
नाटक रचायो न्याय नीति के अचारे को।
बिकट बली ह्वै काल हू ते प्रबली ह्वै निब-
ली लौं भीति मानि लेत जीवन लचारे को।
तौ तो फेरि होनी जौन होय,तौन होत यामैं
कौन बिबस बनौकस बिचारे को।३७।

पर यह जानि लीजै, रच्छस-प्रधान आप,
सासन बिधान कौ निधान घटि जायगो।
सारे राजनीति, रीति रंजित बिचारन के,
स्रम फल बाद मैं प्रमाद पटि जायगो।
न्याय नटि जायगो, निषेध बिधिकोषन तैं,
दोषन मैं बेहद, बिबाद अँटि जायगो।
लोकन मैं राबरी कुकीरति कथा को,
यथारीति सों यथारथ प्रसाद बँटि जायगो।३८।

पंडित ह्वै आपु जौ गहैंगे रोष रोष लखि,
तौ तो बुद्धिकोष मैं, न तोष रहि जायगो।
जावत अधीत निगमागम निचै को फल,
मेरी जान केवल स्रमैही रहि जायगो।
क्रम रहि जायगो न संयत अतिक्रम को,
अरि के अभिक्रम को भ्रम रहि जायगो।
जायगो उपक्रम उदार व्यवहार वारो,
बिक्रम को सक्रम बिकार रहि जायगो।३९।

काज यह राजधर्म हू के है बिरुद्ध सुद्ध,
कारन है लोक मैं कुख्याति अरु निंदा को।
याते आपु सरिस सुबीरन के योग्य नाहिं,
करिबो कुघात काहू भाँति सों कपिंदा को।
सास्त्र-स्मृति-सार और सँभार पर-पूरब को,
जानत सबै ही आप नीति जो नरिंदा को।
ताको सोधि, रोधि रोष, दोसहिं बिरोधी प्रति,
न्याय करिबोई है बिधेय असुरिंदा को।४०।

केतो करै कुत्सित कुकाज जौ बसीठी व्याज,
न्यायी नृप नैकु ना बिचारैं नुकसानी को।
रोकि उर रोष, न्याय कोष निरुआरि नीके,
चारि बिधि दंड को, बतावैं बुद्धिमानो को।
मुंडित करावैं, कै बिरूप करवावैं चहै,
कोड़े लगवावैं, कै मिटावैं चिह्न प्रानी को।
और दंड, यहि तजि, देत नहिं देख्यो सुन्यो,
सोई आप दीजिए बिचारि हित हानी को" ।४१।

अनुज बिभीखन के बचन सुनत तौलि,
बोल्यो दसमौलि—"तू न जानै कहा हित है।
पापिहिं बधे ना होत पाप कहुँ काहू भाँति,
यातें याहि छाड़िबो बिबेक बिरहित है।
जद्यपि बनत दूत यह अपुने ते पर,
चर-पन ही मैं याको पौरुष निहित है।
कपिना कसाई आततार्इ है उपाई बड़ो,
याको बध धर्मसास्त्र बिधि सों बिहित है" ।४२।

कीन्ह्यौ प्रतिवाद कर जोरिकै बिभीखन यों—
"मेरे जान नाथ यह कैसहू न चर है।
होतो चर जौ तो अनजानत यहाँ पै आइ,
काहू बिधि सोध पाइ, जातो लौटि घर है।
याबिधि प्रकास मैं न स्वबल बिकासतो औ,
त्रासतो न लंकपुर बासिनै निडर है।
आवतो न रावरे सकास अवकास पाइ,
पलटि परातो जौ न होतो दूत वर है।४३।

सबिधि बिचारि, नय नीति निरधारि नीके,
सुनिए अरज मेरी जौ पै समुचित होय।
आन दंड दीजिए अजोग जोग जानि जिय,
बध मत कीजिए, किए जौ अनुचित होय।
याते जस रावरे को बिकसित ह्वैहै बेस,
लोकन के ओक मैं समोद सुपचित होय।
यह हू लजैहै औ सजैहै कल कीरति को,
जैहै जब लौटि निज नाथ पै सुचित होय।४४।

बैरी यह जद्यपि महान है अठान ठान,
ठान्यो अभिमान बस, जान्यो ना कुफल को।
आन्यो कछू संक ना हिए मैं लंकनायक को,
मान्यो ना अतंक उर रंचक प्रबल को।
जद्यपि है उद्धत, उदंड दृढ़ दंडनीय,
दीसत सबै बिधि सुधारे छाव छल को।
तदपि बसीठि बनि आयो ढीठ रावरे पै,
याते आन दंड कछु दीजै आप खल को।४५।

प्रानदंड उचित न दंड है उदंडन को,
याते मिटि जात जातनाही जिंदगानी को।
छूटि जात भोगे बिना फल अपराधन को,
पाइ छन एक क्लेस स्वकृत अमानी को।
दंड तौ वहै है उपयुक्त जौन जीवन मैं,
भोगै फल दंडित बिसेष लाह हानी को।
गुनि गुनि रोवै रोज रोज निज कृत्यन को,
तबहू न खोवै दुख, दुसह दिवानी को" ।४६।

बचन बिसारद बिभीखन बचन बर,
सुनि दस सीस, अति सोच मैं निरत भो।
रोकि रिस बेग, बेगि बिहँसि चषिंगित सों,
संमति जनाइ दूत बध तैं बिरत भो।
दै कै पुच्छ जारन को, पुर मैं प्रचारन को,
आयस कपीस हित, भोग मैं भिरत भो।
तिरत कराल काल बारिधि बिलास बीच,
आपति अवर्त मैं अचानक गिरत भो ।४७।

सुनि निदेस दनुजेस को, दारुन दनुज समाज।
खैंचि लै चले करख सों, ऐंचत तन कपिराज ।४८।

इति श्री लंका-दहन काव्ये अग्नि-प्रज्वालन नामकः
चतुर्थः सर्गः।

पंचम सर्ग

अग्नि-निर्वापन

लषन समान राम चषन चका समान,
बीर हनुमान को, कुदंड सुनि ईहा सों।
अमरषमान - जातुधानदल धाए फेरि,
ल्याए तेल, तूल, सन, बसन, समीहा सों।
घेरिकै अगेरि, कपि पुच्छहिं, प्रतुच्छ सारे,
दै दै पट पेटन, लपेटै लगे तीहा सों।
धूरि मैं धुरेटै लगे, चपरि चपेटै लगे,
द्रोह तैं दपेटै लगे, दुष्ट दल दोहा सों। १।

ज्यों ज्यों लगे मढ़न बिमूढ़ सन तूल दै दै,
त्यों त्यों कपि पुच्छ क्रम क्रम सों बढ़ै लगी।
बैठि पट ओट मैं अगोट ग्रहवारी दसा,
औरै तौर नियति बिगूढ़ता गढ़ै लगी।
पीड़ित अतीव ह्वै छतीव तिन दुष्टन तैं,
हरि रुख रोख की रुखाई सी कढ़ै लगी।
रहि रहि ओठन तैं चल चष कोटन तैं,
गोठन तैं आग कैसी लपट कढ़ै लगी। २।

काँधि काँधि ल्याइ सन, बसन, दुकूल, तूल,
बाँधि बाँधि तुच्छ हारे पुच्छ मैं लँगूरी के।
तबहूँ न पारे ढाँपि नापि नापि हारे जऊ,
सारे भए ऐसहू कुख्याति कनगूरी के।
अंत थकि, डारि नेह, बारि दीन्ह्यो पावक दै,
लै चले फिरावन को बातस बगूरी के।
हेरि हेरि हाँसैं, घेरि घेरि उपहाँसैं, फेरि,
फेरि, हठि त्रासैं, मते ओज मैं अँगूरी के। ३।

पावक परस पाय पुच्छ मैं प्रताप बिन,
सोच्यो कपि आप यह कारन कहा रह्यो।
जाते रंच लागत न मोकहँ उताप ताप,
जद्यपि सँताप सों, ससंकित समा रह्यो।
मोहिं जानि परत प्रताप रघुनायक को,
पायक सों सतत सहाय करि ह्याँ रह्यो।
याही तैं दहन मोहिं दाहत न पाहत है,
जानिकै सखासुत उमाहत महा रह्यो। ४।

ढक्का, भेरि, डिंडिभि, नफेरि, संख आदिक लै,
जातुधान जावत बजावत उलै चले।
अरि-पख-वारे काल सम रखवारे घेरि,
अमरख-वारे बहु बलकि बलै चले।
डाह सों डहकि गाह गावत गुनाह गीत,
गंधवाहनंदनै पनाह बंद लै चले।
नगर फिरावत थिरावत बगर सौंहैं,
डगर डगर देत हाँक बहु लै चले। ५।

कपि कृतकृत्य भो कुकृत्य लखि द्रोहिन को,
मोहिन को मानस मजेज लखि जकि गो।
तदपि बिवेक सों बिचारि व्यवहार बिधि,
स्वबल बिकासन को बेहद बलकि गो।
मानि सुठि औसर सुदैव अनुकूल जानि,
अरि-मद भानिबे के ब्योंत मैं बरकि गो।
सहत कुघात घात नाना उतपात जात,
खैंच्यो बातजात घात हेरत ठमकि गो। ६।

ज्वलत हुतासन निहारि रिपु-सासन को,
स्वबल बिकासन को औसर अनूठो पाइ।
सोच्यो करि गौर कपिवर केहि तौर लेउँ,
बदलो बिहित एहि ठौर ठीक ठहराइ।
जदपि उजारि बन बिपुल सुभट ब्यूह,
सबिधि सँहारयो एक भाग बल समुदाइ।
तदपि बच्यो है अबै मुख्य बल रावन को,
दुर्ग, ताकी दुर्गति बनैबो नीक दरसाइ। ७।

इमि करि निस्चय सँकोचि तन बंधन तैं,
निबुकि सुबुक ह्वैकै उछरि अटा चढ़्यौ।
बैरि बल भंजन प्रभंजन-तनै को रूप,
मंदर प्रमान ह्वै बुलंद बिहदै बढ़्यो।
भूतल अकास अवकास परिपूरति, सु
मूरति महान सानुमान सुखमा मढ़्यो।
मानो कीसकाय बिंध्य रबिरथ रोधन को,
सोधन बिरोध लंक-पंक-पथ लै कढ़्यो। ८।

गरज्यो महान घन स्वन सों हँहाँस करि,
फेरयो पुच्छ पावक प्रचारि पुर फेरा मैं।
मरुत सहाय पाय गरुत गती सों बढ़ी,
झपटि लपट लोल लंक गढ़ घेरा मैं।
आगि उठी भभकि लभकि लगि लागि उठी,
जागि उठी बिपति बिसेष हदसेरा मैं।
देवन को जाप लाग्यो सीता को सराप लाग्यो,
रावन को पाप लाग्यो असुर-बसेरा मैं। ९।

मायामई आगि उठी जागि छन एक ही मैं,
एकै साथ चारो माथ घेरि लंक पुर को।
लागीं जरै महल अटारी हेमवारी जड़ी,
कंचन केवारी पाइ पावक प्रचुर को।
रातो भयो आसमान, तातो भयो भासमान,
कारो पीरो नीर सिंधु तीर अगहुर को।
पच्छी उठे झुलसि कुलसि जल जच्छी उठे,
मच्छी उठे उलसि अलोड़ि अब्धि-उर को।१०।

दाहाकार धायो जब पावक प्रदाहाकार,
उमह्यो महाहाकार हाहाकार हावा को।
ताको जोग पाइ बह्नि सिखर प्रखर ह्वै ह्वै,
निखर निखर लेत चूमि नभ तावा को।
कारो, पीरो, नील, लाल, हरित बरन ह्वै ह्वै,
धूम मँडरात घूमि घूमि करि कावा को।
ताको बिंब उदित अकास प्रतिबिंबित कै,
मानो इंद्र चाप छायो छोर अरगावा को।११।

अचल त्रिकूट पै सुलंक चहुँ खूँट फेरि,
बह्नि कूट सिखर अटूट इमि भासै है।
जैसे जुग अंत जानि कालानल क्रुद्ध ह्वै कै,
सुद्ध निज उद्धत स्वरूप प्रतिभासै है।
फेरि दिगमंडल अखंड ज्वाल मंडल सों,
कोटिन अखंडल सों भभकि बिभासै है।
मानो ब्रह्मंड फोरिबे को बज्रनाद चंड,
चंडरव पावक प्रचंड ह्वै प्रभासै है।१२।

औचक अकास लौं प्रकास पेखि पावक को,
पच्छिन के सावक स्वपच्छ सिहलै उठे।
नीड़ तजि संकुल बिहंग कुल आकुल ह्वै,
क्रंदत तुमुल बृंद बृंद नभ लै उठे।
प्रमदा प्रवीन औ नवीन बलहीन छीन,
बालक बयस्क बृद्ध दीन बिकलै उठे।
बिबिध बिलाप औ प्रलाप सह एकै साथ
करुना-कलाप को अलाप सब लै उठे।१३।

एती बड़ी देह पै इतीक हरुआई भरी,
मंदिर ते मंदिर उछंगि चढ़ि-चढ़िकै।
लाग्यो लंक दाहन प्रदाहन अनख आनि,
गब्बर गुनाहिन पनाह बढ़ि-बढ़िकै।
प्रमुख प्रमुख सरदारन कुमारन के
सुभट करारन के गेह कढ़ि-कढ़िकै।
फूँकि दीन्ह्यो मारुति मिसाल खरचाल हाल,
मानी महामानस मलाल मढ़ि-मढ़िकै।१४।

फूटै लगे हीरा-मनि-गन के जखीरा जड़े,
कन कन ह्वैकै छूटि छिति बिखराने ते।
जात रूप पत्तर महत्तर उताप पाइ,
सत्तर सतर ह्वै झँवाइ झिखराने ते।
पिघलि पिघलि लाख दाख को खमीरा बनि,
उबलत धूम देत मेचक खराने ते।
टूटन पखान लागे गिरि के बिखानन तें,
अनल सिखान के निखात निखराने ते।१५।

जतन समेत राखे रतन समूह जौन,
अपहृत भाग जच्छ नाग सुर सिधि के।
मुक्ता-मनि-मानिक असंख्य बहु-खानिक के,
लोक मैं प्रमानिक, प्रतत्व नव निधि के।
बासन बसन जान सैय्या उपधान आदि,
पट-परिधान मूल्यवान बहु बिधि के।
लावक समान परि पावक प्रभाव बीच,
छावक भए ते बनि आहुति समिधि के।१६।

क्रंदन करत घोर अबला अरातिन की,
लट-पट-खोले गिरीं लटपट घूमि घूमि।
भरकत भागीं भय भरिकै भभरि भूरि,
भीखन उताप पाय झपटत झूमि झूमि।
कोऊ पय प्यावत सिसून कलपावत न,
नैकु कल पावत, चुपावत सु चूमि चूमि।
दौरी जात बौरी-सी अगौरी बाल कौरी लिए,
झुकि झुकि झारत अगिनि कन तूमि तूमि।१७।

आरी भई नारी मनि महलनि वारी सारी,
लपट करारी हेरि भारी भय-भेद तैं।
सँभरि सकी ना उठीं भभरि छनेक भरि,
भरि भरि नैनन निरीह निरबेद तैं।
नेवर नेवारि पग जेवर उतारि, देह
हरुए स्वगेह त्यागि सिथिलित सेद तैं।
भागी जात, एकन के संग एक लागी जात,
परम अभागी जात खाँगी जात खेद तैं।१८।

गारी देत कदम अगारी देत कोऊ बढ़ीं,
नगर पगारी देत धाईं सिंधु-बेला मैं।
कोऊ मतवारी परि मद की खुमारी माहिं,
लहिकै दवारी गिरीं घूमि हद हेला मैं।
कोऊ खीन लंकवारी, कोऊ पीन अंकवारी
सकुचन दाबि कुच रपटति रेला मैं।
बहु बल खात जात अटपट चालन सों,
लटपट-हालन सों झपटि झमेला मैं ।१९।

टेरि टेरि तात मातु स्वामि सहजातन को,
और हितनातन को लै लै नाम फेरि फेरि।
हाहा खाति अति बिललाति कुररी सी दीन,
ज्वालजाल आधि अधिकाति चहुँ हेरि हेरि।
कहति पुकारि दोख निदई दई को कहा,
वह तौ दई है हमैं बिपति अगेरि गेरि।
कौन यहि औसर बचावै धाय आय हाय,
काल रूप बानर जराए देत घेरि घेरि ।२०।

प्रथमहिं भाख्यो हम यह कपि जाती नाहिं,
सुमनस घातिन को जाहिर जवाल है।
सुरपति जोजित बिपत्ति लंकबासिन को,
नाक के निवासिन को कामिल कमाल है।
कैतो छली बिस्नु रूप बदलि बलीमुख को,
आयो दनुजादन को करन हलाल है।
कैतो पिंगलोचन बिसाल बपु धारे आपु,
कैतो बिस्वअंतक दुरंत यह काल है ।२१।

नाना बिधि करति बिलाप बिललाती सबै,
प्रचुर प्रलाप कै अलापति अतीता को।
कोऊ कहैं यह तौ उताप नहिं अर्चिख को
संकुल सँताप है सताप अनुनीता को।
मूढ़मति रावन समूल के जरावन को,
ल्यायो घर घेरि आपु अजस अधीता को।
पति-पद-प्रीता पर-रति-मति-भीता यह,
पावक-पलीता है सराप तेहि सीता को ।२२।

बोली अन्य बिकटा कटा सी करि बीच ही मैं,
सिगरे अनर्थन को मूल यह सीता है।
याही के बुलाए यह बानर हँडेरी इतै,
बिपति घनेरी लिए आयो बलबीता है।
याही के लहाए प्रमदाबन प्रनष्ट कीन्ह्यो,
नष्ट कीन्ह्यो असुर अनीक जग जीता है।
याही के छुड़ावन की जुगुति जुड़ावन को,
फूँके देत लंक लाय पुच्छ पै पलीता है ।२३।

योंही बहु रोदति बदति असुराती सबै,
पीटि पीटि छाती बिललातीं दाह दुख तैं।
कोऊ यहि औसर दिखात ना सँघाती हाय,
जाती ना बिजाती अपघाती के कलुख तैं।
लपटी लपटि जात द्वारन किवारन लौं,
कैसे कै कढ़ैंगी यहि पावक परुख तैं।
कुलस्यो सदन जात झुलस्यो बदन जात,
सुलस्यो छदन जात छपट्यो बपुख तैं ।२४।

हाहाकार माच्यो इमि चारो ओर छोरन लौं,
स्वाहाकार नाच्यो पूर पावक प्रबल ह्वै।
हारै हौंस हिम्मत बिसारे रकसारे सारे,
घर ते निसारे जात भागे बिह्वल ह्वै।
माया तजि जाया सुतबंधु की स्वकाया लिए,
असुर-निकाया भरी भीति सों निबल ह्वै।
इत उत दौरत दरेरत दुरे से जात,
बिबस बिसेख बिललाने से बिकल ह्वै।

औचक निबुकि जात देखि कपि बंधन ते,
रच्छी भए भौंचक से चौचक खरे खरे।
इकटक जोहत जके से मुख बाय बाय,
कहत न कोऊ कहूँ काहू सों हरे हरे।
पावक प्रबल पखि चपरि चिहुँकि धाए,
धरु धरु मारु मारु बोलत दरे दरे।
लागत उताप ताप अति थरराने तेऊ,
पलटि पराने फेरि कहत जरे जरे।२६।

ठौरै ठिकी भीर जौन कौतुक बिलोकिबे को,
सो तो लखि या बिधि कुतौर तौर हहरी।
लै लै जल भाजन बिसेख चख लाजन ते,
धाइ धाइ अनल बुझाइबे को छहरी।
पाइ पाइ नीर ह्वै अधीर अधिकानी आँच,
जैसे अधिकात घृत पाइ ज्वाल जहरी।
रुकति न रोकी बढ़ी जाति बस बाहिर है,
जाहिर जनात घात पाइ बात बहरी।२७।

देखि रुख रोचिख रुखाय रोखवारो कपि,
लीन्ह्यो दंभ सहित उखारि खंभ पावा को।
परिघ प्रमान मान करि भ्रममान बेगि,
धायो उद्बेग सों उधायो धरि दावा को।
भागत अरातिन को घेरि दनुजातिन को,
धरि धरि धूनै लग्यो खूनै खल खावा सो।
मति गति गूनै लग्यो हति हति हूनै लग्यो,
भूनै लग्यो भार मैं सँभारि लोय लावा को।२८।

टोंकि टोंकि दनुज दुरातिन सँघातिन को,
रोकि रोकि आगि मैं कपीस धरि झोंके देत।
जैसे ह्वै उदार खर भार औ खभार लै लै,
भूँजा भार भार भार माहिं धरि झोंके देत।
तौऊ तोष पावत न रोखित अतोखी बीर,
दोखिन को दोख देखि देखि दरि झोंके देत।
जैसे अनतोखी बनि कठिन कराल काल,
जीवहिं दुकाल मैं हलाल करि झोंके देत।२९।

भागबस बचत न भागि जन कोऊ कहूँ,
लागत सुराग कपि कूदि किलकारे देत।
अगरि अगेरि घेरि खंभ चोटकारी हनि,
दंभिन को दंभ तौ अरभ मैं उतारे देत।
फेरि पद पकरि, पछारि छिति छारन मैं,
तिपट निछारि नभ-पथ मैं उछारे देत।
गिरत गिरत मारि परिघ प्रहारन सों,
धधकत आगि मैं बिराग बस डारे देत।३०।

दैव नहिं तृप्त होत बिपति ढहाए बिना,
बिपति न तृप्त होत दुख दुलहैबे ते।
दुख नहिं तृप्त होत सुख बिनसाए बिना,
सुख नहिं तृप्त होत बायु उमहैबे ते।
बायु नहिं तृप्त होत सिखि अनखाए बिना,
सिखि नहिं तृप्त होत जीव पचहैबे ते।
जीव नहिं तृप्त होत हरि-पद पाए बिना,
हरि नहिं तृप्त होत दनुज दहैबे ते।३१।

पाइ पाइ पुष्ट पुष्ट आहुति अतुष्ट इव,
पावक लपट लोल झपटि बढ़ै लगी।
मज्जा मेद मांस चर्म स्रोनित बसा सों बसी,
गंध निरबंध अंध गति लै बढ़ै लगी।
अर्चिस उताप अँटि चटकत अस्थि कूट,
ताकी चट्ट चट्ट धुनि दिसनि दढ़ै लगी।
भय की भयावनी बिभीषिका भयद ह्वै ह्वै,
लंकपुर बासिन के चित पै चढ़ै लगी।३२।

कछुक अभागे अनभागे जरे आपो आप,
कछुक सभागे भागि, आगे जाइ बरि गे।
कछु कढ़ि भागे परि परिघ प्रहारी हाथ,
कारी चोट खाइ ते बेगारी ते उबरि गे।
कछु दुरभागे दुरभाग निरवारन को,
करत प्रयत्न आयु रत्न सों निबरि गे।
जरिगे असंख्य परि पावक परत बीच,
ऐसे ना लखात जे निखात निरबरि गे।३३।

ज्यों ज्यों जगी आगि त्यों त्यों रागिन बिरागिनके
अंतर बिसेस बिकलाई सी बढ़ै लगी।
बिद्याधर जच्छ नाग किन्नर कुमारन के,
हिय मैं अनंद अधिकाई सी नढ़ै लगी।
देखि देखि अद्भुत अभूत कपि कृत्यन को
सुरन उरन मोदताई सी मढ़ै लगी।
सिद्ध मुनि चारन सुरेंद्र संघ वारन के
बदन ललाई बहुलाई सी बढ़ै लगी।३४।

फूँक्यो गढ़ लंक बंक पालित दसानन को,
देखि नभ दर्सक बिमोह तरखै लगे।
आह कहि वाह कहि कोऊ त्राहि त्राहि कहि,
पाहि पाहि कहत पनाह करखै लगे।
खेल सों अकेल खल दल मल रासिन को
खूनत निहारि दनुजारि हरखै लगे।
अस्तुति करत पौनपूत पर प्रस्तुत ह्वै,
सुमनस सुमन समूह बरखै लगे।३५।

बोले कर जोरि सुर संकुल बिनीत ह्वै ह्वै,
"जय हनुमान जय जय करुना निधान।
भानु प्रिय सिष्य ग्यान घन अवतिस्य रूप,
धारे जन्म ही ते ब्रह्मचर्ज ब्रत को बिधान।
प्रग्यावान सचिव प्रधान कपिनायक को,
बुद्धि बलवान दीन दुःखिन को ब्यवधान।
खल बल दहन क्रिसानु गुनवान जै जै,
सीलवान, सज्जन, स्वभक्तन को उपधान।३६।

जय कपिनायक अनन्य राम पायक जै,
सिय सुखदायक सहायक सुकंठ को।
बुद्धि बल ओघ को अमोघ परिचायक,
स्वभक्त भल भायक बिभास सित कंठ को।
पुन्य प्रनिधायक बिधायक बिधान बिधि,
दृढ़तर घायक दनुज दसकंठ को।
सब बिधि लायक समर्थ दुःख हायक,
सुनीति को निधायक कुमार बहुकंठ को।३७।

तुम बिन कौन नाँघि सागर बलागर ह्वै,
दुवन पुरी मैं धँसि सोधि प्रति धाम को।
मोचत सिया को सोच, दोचत बिरह पोच,
सुजस सुनाय राय रघुपति राम को।
भंजि प्रमदाबन बिभंजि बल रावन को,
गंजतो को असुर अनी के खल खाम को।
रच्छित अघच्छित बलाढ्य गढ़ लंक ताहि,
करतो दहन कौन बाँधि इमि लाभ को।३८।

जैसो काज दुस्तर अनेक तुम कीन्ह्यो एक,
वैसो करि सकत जनेक ना बरग मैं।
तेरी पूत प्रगति समान सब तत्वन मैं,
याको मिल्यो पूरन प्रमान या सरग मैं।
जानो नहिं जाति है कितीक हरुआई भरी,
बल गरुआई बीर तेरे रग रग मैं।
अबहूँ चुक्यो ना करि गारत गनीम गढ़,
चाहत रुक्यो ना पुर पारत परग मैं।३९।

धन्य तव जननी-जनक जिन जायो तोहिं,
धन्य तव बंस जौन पायो तोहिं अंसी कै।
धन्य वह काल जामैं उलह्यौ प्रसूती गोद,
धन्य वह देस जौन उमह्यो धुरंसी कै।
धन्य तव नायक सहायक सरूप जौन,
पायो तोहिं पायक, स्वअंक अवतंसी कै।
धन्य कपि आप तुम निज सुचि कृत्यन ते,
हम सब धन्य आजु तोहिं स्वयमंसी कै" ।४०।

इबिधि नभस्थ देव दर्सक समस्त मिलि,
करि करि अस्तुति प्रसस्त कपि बर की।
लागे लखै ब्यस्त ह्वै ह्वै बिपति अरातिन की,
दुर्गति घरातिन के घर औ बगर की।
देख्यो दह्यमान मुह्यमान नर नारिन को,
साँस लेत अंतिम ऊसांस लेत अरकी।
संपति बिसेस कछु सेस सना बिसेखे मिली,
लंकपुर-बासी चर अचर खचर की ।४१।

आवाँ भयो लंक भूमि अंक तपि तावा भयो,
झावाँ भए बासन बिभूखन खरे परे।
ठौर ठौर नाग पसु पच्छी रच्छ रच्छिन के,
असुर बिपच्छिन के सब बिखरे परे।
लाख ह्वै ह्वै राख कोट कनक कलाख ह्वै ह्वै,
हाटक के फाटक निराट निखरे परे।
धूम बस रेखत निरेखत बनत नाहिं,
पादप दपादप बरत बिखरे परे ।४२।

तेई बचे जेई भागि जाइ गिरि कंदरन,
अंदरन दबकि दबकि दहि दहि गे।
तेई बचे जेई बन-अंतर इकंत जाइ,
काहू भाँति झुलसि झवाइ झहि झहि गे।
तेई बचे जेई, जलनिधि की तरंग परि,
ढंग करि निपट उलंग बहि बहि गे।
तेई बचे जेई तजि कुमति कुटेई राम-
भक्ति-रसपेयी ह्वै डटेई रहि रहि गे।४३।

एक भक्त भूखन बिभीखन भवन छोड़ि,
सारो गढ़ लंक सब दिसि सों जरायो फेरि।
काज करि 'ईश' को अकाज असुराधिप को,
कपिकुलराज कूदि सिंधु मध्य आयो फेरि।
सागर मंझाइ कै थिराइ सियराइ स्रम,
सकल बिहाइ बेस बिकट दुरायो फेरि।
रूप लघु लै कै धन्य-रूप स्वकुलै कै सिय,
पद पै उलैकै, दीन बचन सुनायो फेरि।४४।

"मातु पाइ आसीस तव, करि दस सीसहिं खोस,
जान चहत अब 'ईश' पै, दीजै कछु बकसीस।४५।
जैसे इत आवत हमैं, प्रभु कर-मुँदरी दीन्ह,
वैसेइ प्रभु पहिचान हित, दीजै कछु निज चीन्ह।४६।
अछत देह लखि कपिहिं ढिग, अछत बिरह मति भोरि।
सछत हृदय, गदगद बचन, बोली सिया बहोरि।४७।

इति श्री लंका-दहन काव्ये अग्नि-निर्वापनो नामकः पंचमः सर्गः

षष्ठ सर्ग

अग्नि-प्रत्यागमन

सीता सती पाइ स्वयमागत कपीसै पास,
हरष हुलास भरि गदगद बानी सों।
बोलीं सुठि सहज सनेह सरसावत,
ममात दरसावत समोइ कुलकानी सों।
"पूत तोहिं अछत, सरीर लखि आयो पास,
मेरे प्रान आए फेरि पलटि पयानी सों।
तौऊ तुम माँगत बिदा हौ अतुराइ एतो,
ऊबे कहा मेरी यहि बिपति-कहानी सों।१।

'ईश' प्रिय दूत पूत तुमहिं असीस तजि,
और बकसीस हम देहिं का अभागी हौं।
राघव बियोग योग तापित सँताप भरी,
असन जसन बेस बसन बिरागी हौं।
जानी नहीं जात कौन अघ अपराधन तें,
योंहीं बिनु साध स्वामि संग परित्यागी हौं।
तौऊ पाइ दरस तिहारो उरधारो कपि,
बूड़त बिरहसिंधु धीर तट लागी हौं।२।

चाहत हौ जान तौ सुजान कपि मेरे कहे,
अधिक नहीं तौ द्वैक दिन ही इहाँ रहौ।
तोहिं लखि जरनि जुड़ाति जिय अंतर की,
याते जाइबे को अबै चाव चित ना गहौ।
रहि इत रच्छित अलच्छ गिरि कंदर मैं,
सोध बोध लेत देत जैसी सुबिधा लहौ।
तब तुम जैयो लौटि पीतम पियारे पास,
पूत प्रिय बचन बिचारि मुख 'हौं' कहौ।३।

तेरे गए कोस भरि रीस दससीस खीस,
दै दै कै कसोस जातुधान कुल कोही को।
भेजिहै सहायक बिहीन दीन मोपै रोज,
सकल अनर्थन को मूल गुनि मोहीं को।
ते वै आय करिहैं अनेक उतपात घात,
तात रुख लखिकै बिघातक बिछोही को।
तब पत रैहै किमि अपत भए पै फेरि,
करिहौं कहा मैं प्रान राखि पति द्रोही को" ।४।

सुनि सिय बैन नैन नमित किए ही कपि,
बोल्यो, "मैं न मातु कबौं बाहर तिहारे तैं।
मन बच करम अनन्य पद-सेवक हौं,
करिहौं वहै जो आप कहिहैं इसारे तैं।
पर इक अरज हमारी है सुनौ जौ ताहि,
उचित गुनौ जौ उर अंतर बिचारे ते।
तौ तौ देहु आयसु बिहाइ दीनता को तौर,
सहि कछु द्यौस और हीनता लचारे तैं ।५।

ऊबे हम नाँहिं पर प्रभु की दसा को सोचि,
अब सहिजात ना बिलंब एक छन को।
चाहत यहै है चित्त अनुमति रावरी लै,
झट पट जाऊँ रिष्यमूक गिरि बन को।
जाइ तित इत की, हकीकति सुनाइ उर,
तोष उपजाइ हंस बंसी सत्रुहन को।
करि प्रभु काज कपिराज को निहोरो साजि,
तब कल पैहौं बिसराम हेतु तन को" ।६।

सुनि कपि वचन, बिसूरि दृग पूरि भूरि,
बोली सिय हिय को दबावत उसाँस लेत।
प्यारो पूत, तोहिं पाय कछुक सहारो भयो,
सोक बजमारो दैव निरखि निकासे लेत।
अब फिरि ह्वैहै, सोई द्यौस और सोई राति,
साँसत सहत प्रिय रहित प्रबासै लेत।
कौन बिधि जीवन बितैहौं अरि-भौन बसि,
कौन को चितैहौं, दुचितैहौं जब साँसै लेत।७।

ऊबि ऊबि त्रासन ते उससि उसांसन ते,
बिरह बिकासन ते लोचन लचारे ये।
नीर बरसावत न पावत तनिक चैन,
उर अकुलावत दुसह दुख भारे ये।
साँस बस अँटके निवास तन-पिंजर में,
दरसन आस बस तरसत तारे ये।
राघव बिछोह छोह छकित बिमोह धारे,
कढ़त न पापी प्रान पामर हमारे ये।८।

तोहिं लखि पावत अचैन दृग मेरे चैन,
याते कछु काल तौ रहौ जौ दूत आयो तू।
नैकु तौ बताउ केहि तौर इकलोई पूत,
अमित अरातिन के दल मैं समायो तू।
किमि करि नष्ट प्रमदाबन समष्ट फेरि,
कष्ट बिन कैसे गढ़ लंक को जरायो तू।
बिस्व के बिजेतन को सुमनस-जेतन को,
कैसे रनखेत मैं खेलाय जय पायो तू"।९।

"या मैं तो हमारौ कछु बिक्रम रह्यौ ना अंब,
आपही के दारुन उसाँस बस छीजे ये।
राम रोस पावक जरायो गढ़ लंक अंक-
बासी जीव अंकित उरेह सों उसीजे ये।
बहु दिन जात प्रमदाबन बिटप जात,
आपु ही गिरे ते मम बल सों न गींजे ये।
हम तौ निमित्त बित-रहित भए ये आप,
निज अघ ताप के उतापक पसीजे ये।१०।

तप बल अर्जित अनेक बलधारी रहे,
जद्यपि अनेक दनुजात भयकारी ये।
पर परताप के अघौघ अनुतापन ते,
आपै आप नसिगे दुरंत दुखकारी ये।
सत्वर असेस ह्वैहैं सेस जे बिसेस बचे,
राघव सरानल मैं आधि अधिकारी ये।
छय पथ धारी जऊ जीवन सुभारी तऊ,
सब सम आरी सार-रहित बिकारी ये।११।

चिंति बल बिक्रम अचिंत रघु सत्तम को,
तत्त मत्त छोड़िकै दयाद जे दनुज के।
भय ते भरेई रहैं भूरि निसि बासर ये,
सोचि कृति कर्कस खरारि से मनुज के।
जानि जिय हानि सुख संपति समान प्रान,
मोहबस औरौ निज तन औ तनुज के।
ब्याकुल लखात अति आकुल सकुल सेस,
जे हैं बचे पुन्य-बल रावन अनुज के।१२।

जय की बँधी जो धाक पाकरिपु नायक की,
आई तौन डाँकि धार पार या उदधि कै।
आइ इत सत्वर नसायो गढ़ गाढ़ औ,
खसायो खल खेटन समूह साध सधिकै।
सोई धँसी उर मैं, समस्त दनुजातिन के,
ते वै त्रास दैहैं कहा नाहि नेह नधिकै।
पोंछु नैन नीरज न खोंछु अवनीरज को,
धीरज न मोछु रहि अंतर परिधि के।१३।

रंचक न सोचु इन बंचक बिचारन के,
भारन बलित दोह दलित निकाया को।
झेलि बर बिपति सकेलि सुठि साहस को,
अंत मैं न आनँद अपार मै अमाया को।
पतिब्रत पावन प्रताप ते तिहारे ताप,
तापित उताप मैं न आया जग जाया को।
देहि अबिलंब अनुसासन बिदा को अंब,
रेहि उर सासन सनेह रघुराया को"।१४।

मारुति बिनीत बैन सुनि सिय बोली, 'पूत,
एतो अतुराइ जान चाहत जु पै चले।
तौ तो जाहु सत्वर सुखेन हम देतीं कहे,
उत जित कोसलकिसोर बिलसैं भले।
जाइ तित इतकी सुनाइ दृग देखी दसा,
कहियो बुझाइ जासों करुना बिसेस ले।
आवैं प्राननाथ रघुनाथ औधि अंतर ही,
नातो प्रान पामर न रैहैं घट मैं घले।१५।

दूरि है इहाँ ते खास बास रघुनायक को,
सहज सुपास नाहिं जाइबो तहाँ को है।
जाइ तित खबरि जनाइ पाइ स्वामि रुख,
कटक जुटाइबो नकारत न हाँ को है।
फेरि पहुँचाइबो अपार कपि बाहिनी को,
सिंधु उपकूल मैं न कार तनहा को है।
बारिधि मझाइ, औधि अंतर इहाँ पै ल्याइ,
हम सों मिलाइबो जुराव ही जहाँ को है।१६।

सुनि सिय बैन ह्वै अचैन कपि बोल्यो आसु,
आयसु तिहारो पाइ स्रम सियरैहौं ना।
कूदि सैल सिखर अरिष्ट ते उछरि अंब,
सुंदर पै टिकत बिलंब उर लैहौं ना।
राघव प्रताप औ तिहारे अनुताप बल,
सागर को गागर प्रमान ठहरैहौं ना।
जौ लौं नहि ल्यावत इहाँ पै रघुनायक को,
तौ लौं पदपायक तिहारो कहवैहौं ना।१७।

कठिन कछू ना है तिहारे पूत पायक को,
बूत है अकूत घोर राघव प्रताप को।
चाहै तौ उखारि कै त्रिकूट नग मूल सह,
धारि कर धावै छरा छोर छुइ छाप को।
संभव असंभव को करत न मानै स्रम,
आनै ना हिए मैं भ्रम तम के कलाप को।
पर परताप को न ताप उर जानै तेतो,
जेतो गुनै ताप माँ! तिहारे अनुताप को।१८।

योग बस आकुल बियोग रघु पुंगव को,
सक्य भरि सत्वर सुनाइ सुधि साँवरी।
ल्यायो चहौं सपदि ससैन्य यहि ठौर लागि,
याही ते करत अंब एतिक उतावरी।
एक मास ही की दियो अवधि हमैं है आप,
ताहू मैं बितीती एक चाहत बिभावरी।
दीजै अबिलंब अंब "ईश" अवलंब हित,
प्रिय पहिचानी को निसानी कछु रावरी।१९।

तड़ित प्रमान मनि फनिसों निकारि नीके,
हाथ धरि कपि के अनाथ इव रोय रोय।
बोलीं सीय, "लखन समेत रघुनंदन के,
बंदन करत पग कहियो प्रनत होय।
आपके रहत एती सहत बियोग ताप,
करुना कलाप रावरे की कित बैठी गोय।
दीनबंधु प्यारो दीनबंधुता बिसारो जनि,
डूबत उबारो बर बिरद सँभारो जोय।२०।

दैकै नाथ हाथ मैं निसानी मनमानी सोचि,
सक्र सुत करम कहानी कहि जाइयो।
फेरि सींक सायक प्रताप समुझाइ आप,
दाप दसकंध को बखानी कहि जाइयो।
प्रभु के प्रछन्न तप अर्जित बरवन की,
लोकन मैं प्रभुता प्रमानी कहि जाइयो।
तब मम दारुन बिथा की कथा कोरि कोरि,
जोरि जोरि जाहिर जबानी कहि जाइयो।२१।

पूछि हैं रहति कैसे कहियो बुझाइ मन,
ध्यान मैं तिहारे ग्यान मान तैं बिरत है।
छुधा को अधार औ अहार अँसुवा को करि,
श्रास बस साँस के सुमार मैं भिरत है।
अंतर मैं निहित निरंतर तिहारी ज्योति,
ताही मैं समाइ थिति पाइ यों थिरत है।
सुरभि सजाइ साजि सहज समाधि तेरे,
पूत पाद पंकज पराग मैं निरत है।२२।

तन को न जानै ताप ताहि नासमानो मानि,
फेरि सो हकीकति बताइबो अवस है।
मन पद चिंतन मैं संतत निरत ताहि,
बिघन हटावत बिसेष बरबस है।
तौऊ अभिलाख एक लाख लाख भाँतिन सों,
उर मैं उरेह्यो सो बिसेखिबो अवस है।
अंतर मैं लखत निरंतर रहे ही पर,
प्रगट परेखिबे की हिय मैं हवस है।२३।

सुनि मम दारुन बिथा की कथा तथ्य रूप,
ह्वैहैं द्रुत द्रवित दयालु मो विपद पै।
ऐहैं संग लखन अपार कपि बाहिनी लै,
चढ़ि गढ़ गूढ़ बंक लंक जनपद पै।
पर यदि आवत अबेर कछु ह्वै है फेरि,
बीतत अवधि प्रान रैहै ना स्वपद पै।
तन तजि जैहै नेह नाह को निबैहै,
परी देह रहि जैहै इतै प्यारे के सुपद पै" ।२४।

कान करि नीके, मिथिलेस नंदिनी के बैन,
देव बंदिनी के बंदि पद जल जात को।
सहित निसानी जातुधानिन लखत कूदि,
नखत पथी ह्वै गहे गति बर बात को।
आयो पल मारत अरिस्ट गिरि ऊपर,
परत पग भूपर सकोचि द्रिढ़ गात को।
उछरि अकास पथ पकरि पधार्‌यो बीर,
नंदन समीर प्रभु पद प्रनिपात को।२५।

गगन मगन ह्वै ओज सह, गोगन भय्यो हुलास।
लगन लगाए हरि चल्यो सगन सहायक पास।२६।

इति श्री लंका-दहन काव्ये अग्नि-प्रत्यागमनो नामकः
षष्ठः सर्गः

सप्तम सर्ग

पावक प्रत्यागम

राम पद पूत को उपासक प्रसिद्ध, सिद्ध-
काम गुन धाम छिति छोर सों छलकि कै।
पकरि अकास पथ प्रभु के सकास जाइबे-
को अवकास पाइ लीला सों ललकि कै।
बात गति धारि बातजात पौरि पार चल्यौ,
दनुज दुरातिन के द्रोह सों दलकि कै।
सोध लै सिया को अनुरोध लै प्रिया को,
बहु बोध लै जिया को जात बल सों बलकि कै।१।

पारावार पार करिबे के हित पौनपूत,
पच्छवान पर्वत प्रमान मान धरिकै।
उछरि अकास-पथ पकरि प्रबेस करि,
गगन समुद्र को निरेख्यो नैन भरिकै।
देख्यो, नील सलिल समान नभ सोहै भलो,
फैल्यो आस पास तर ऊपर सँभरि कै।
बिहद बिभात हद हेरत हेरात मन,
तौऊ ना थिरात पार पावै कौन तरिकै।२।

पन्नग उरग जच्छ, चारन गँधर्व सब,
एई जल जन्तु लौं लखात सुखमा भरे।
नखत समूह, ग्रह उपग्रह व्यूह तेई,
द्वीप लौं दिखात उतरात चहुँघा परे।
झंझाबात भीखन तरंग प्रति घात पूर,
फेन लौं फिरत फैलि बादर दरे दरे।
ऐसे नभ नीरधि को मथत मथानी बीच,
मंदर समान बीर बंदर हरे हरे।३।

बीर हनुमान मनमान जवमान जात,
पान सों करत अंतरिच्छ अनुमान होत।
आवत खिंचे से गति बेग के प्रबेग बस,
तारन के जूह ग्रह गूह यह ग्यान होत।
बार बार अभ्र उर अंतर प्रबिसि कढ़ि,
दुरत दिखात भोर भानु इव भान होत।
घिरि घिरि उघरि घनेरी घनरासि बीच,
भासै धवलांबर सुधाधर समान होत।४।

गाहत गगन मग मगन घनाली बीच,
बिज्जु के बिभा मैं कहूँ सुछबि भला का सों।
बोध होत नील नभ नीरद निकेत मध्य,
तिरत सहेत कपि बिसद बलाका सों।
लसत अदभ्र अभ्र अंतर उदोत होत,
बनक बनोत बेस कनक सलाका सों।
माहिर मनात, धूम धार बदरा मैं ढँक्यो,
बाहिर जनात हरि जाहिर जलाका सों।५।

चढ़ि नभ ऊपर निहारयो कपि नीचे जबै,
देख्यो जलनिधि की अगाध जलधारा को।
वार पार रहित अपार बेसुमार भौंर,
भ्रमत दिखात पाइ पौन के सहारा को।
भीखन तरंगन के घात प्रतिघातन सों,
उठत हिलोर सोर करिकै करारा को।
फेनिल फिरत फैलि फैलत थिरत नाहिं,
फफकत फूलि फूलि, फेंकत फुहारा को।६।

झंझाबात झहरि झकोरि जल-रासिन को,
उथल पथल कै थिरावत न थाह लेत।
भीमाकार भीखन तरंग तुंग जंग जोरि,
एकन पै एक परि पूरत प्रवाह लेत।
बीच बीच बीचिनि के भ्रमत भँवर भूरि,
फेनिल ह्वै बुदबुद बटोरि निज राह लेत।
ऊर्मिमाल घूमि घूमि चक्रजाल जोरत औ,
छोड़त उछास मानो ऊबि ऊबि आह लेत।७।

पारावार पूरन अपार करुनाकर के,
करुना-प्रसार को सँभार दिखराई देत।
गाइ गाइ तुमुल तरंगन के ढंग गुन,
वाके अनुराग को सुराग सिखराई देत।
लै लै लोल लहर बिराट पग धोवन को,
चाहत न पाइ ह्वै निरास निखराई देत।
चेतन की याद मैं अचेतन भए हू चेति,
कन कन रतन समूह बिखराई देत।८।

याद करि अब लौं स्वकीय महदीयता को,
मानि मरजाद बाद करत बयेला को।
राखि उर अपने प्रदाह बड़वानल को,
दाहन दहत पै न गहत झमेला को।
नक्र ग्राह मकर तिमिंगल झखादि कुल,
संकुल बिसाल व्याल बालन के रेला को।
सहत निरंतर अतूल सूल अंतर मैं,
त्यागत न तौऊ सरनागत रखेला को।९।

बारिधि बिधान की बिसेसता बिसेस जानि,
मानि मन महत महान की महत्ता को।
पुलकि प्रनाम करि प्रभु के प्रभावन के,
भावन भभरि भूरि भूलि बलवत्ता को।
देख्यो सब थल जल अनिल अनल हूँ मैं,
नभ मैं नियुज्यमान वाकी दृढ़ सत्ता को।
पायो बर बोध पथ सोध मैं समायो अतु-
रायो कै निरोध चित्तबृत्ति की इयत्ता को।१०।

कपि गति बेग के प्रबेग बस जूटि जूटि,
टूटि टूटि नखत निखूट निखरै लगै।
केते दृढ़ देह के दरेरे दरि दूर ह्वै है,
केते बनि चूर भरपूर बिखरै लगै।
केते परि झोंक मैं रसातल रमत दीखे,
केते रोक टोक मैं त्रिलोक सिखरै लगे।
केते खंड खंड ह्वै प्रचंड भुजदंडन सों,
चींटी-अंड-भंड कै समान दिखरै लगे।११।

योंहीं बैनतेय लौं बिकासत स्वबिक्रम,
क्रमै ही क्रम करत अभिक्रम को उग्रतर।
जात मेघ बृंदन बिदारत सु बार बार,
दारत दिसा को बल धारत अकूत बर।
देख्यो दूर ही तैं अति सुंदर महेंद्र नग,
सिखर समूह चाँदनी मैं चाहि चारुतर।
जान्यो रजताचल चलाचल अचल ह्वैकै,
राजत उमंगि अगवानी हेतु तीर पर।१२।

इंद्र नग सिखर निहारि काननारि पथ,
जोहत निहारि अंगदादि कपिबर को।
कीन्ह्यो बज्रनाद को निनाद किलकारि निज,
आगमन सूचक सुधारि दृढ़ स्वर को।
सुनत हहाइ धाइ धाइ गिरि-स्रिंगन पै,
चढ़ि चढ़ि टेक दै दै गूढ़ दृढ़ कर को।
हरखि हितौन लागे आनँद रितौन लागे,
चकित चितौन लागे चाहि चाहि चर को।१३।

तौ लौं किलकारत सुजोम सों जोहारत,
सँभारत स्वबेग को हरेई हरे घूमि घूमि।
आयो कढ़ि बादर दरी ते केसरी ते बढ़ि,
केसरी किसोर कूद्यो हर गिरि दूमि दूमि।
धमकनि इंद्र नग मसकि मही मैं मिल्यो,
तटवारे बिटप झकोरैं लगे झूमि झूमि।
धसकि धराहू अधरा सों मिली अँबुधि के,
अंबुधि छरा ह्वै लग्यौ उछरन चूमि चूमि।१४।

गावै लगे बिहँग-समूह गान स्वागत को,
आगत उषा को चाहि चाव चित मैं चढ़यो।
बिहँसन लागी दिसा अंबर अरुन साजि,
अरुन हितैसिन के मोद मन मैं मढ़यो।
सुमन समूह लागे बिकसन मोद पाइ,
सीतल समीर गति धीर धरिकै बढ़यो।
पेखत प्रभात सिद्ध काम गुरु सिस्य मान,
एकै संग भानु हनुमान दिसि तैं कढ़यो।१५।

देखि दूरही तैं दौरि दौरि द्रुत आए सबै,
कूदि कूदि कूटन तैं आनँद अटूट भरि।
जामवंत, अंगद, मयंद, नल, नील आदि,
जूथप समूह कपि जूह अतुराई करि।
उत्सुक हिए तैं देखिबे के हित प्रानप्रिय,
जीवन रखैया औ सहैया साँकरे को अरि।
केसरी किसोरै घेरि घेरि चहुँ ओरै परि,
प्रेम के हिलोरै लगे भेंटन सबै ही धरि।१६।

चाव सों चितैकै उर आनँद रितैकै अति,
हेत सों हितैकै रिच्छनाथ हाथ गहिकै।
पूछ्यो "बलधाम हौ जनात सिद्धकाम,
तव बदन ललाम जात बिकस्यौ उमहि कै।
कहु केहि ब्याज करि आए प्रभु काज सत-
जोजन दराज सिंधु लाँघि बेग बहिकै।
पायो कहाँ सी को लखि बदन ससी को बनि,
रूप सुजसी को लौटि आए लाह लहि कै" ।१७।

पूजित ह्वै सादर सनेह सहबंधुन सों,
गंधवाहनंदन अनंदन अजैया को।
बोल्यो जांबवानहिं सँबोधन करत बर-
बोधन करत अंगदादि कपि रैया को।
"हेरि हम आए निज नैनन बिखाद भरी,
मूरति बिसूरति न पूरति सहैया को।
बैठो आसुरीन के समूह मैं अधीना छबि-
छीना दीन हीना रघुराज की लुगैया को।१८

चलहु सबै मिलिकै तुरत, पहुँचि सामुहें नाथ
तब कहिहौं इतिबृत्त सब सबही सों इक साथ" ।१९।

सुनि समीरसुत के बचन जामवंत गहि हाथ।
कह्यौ "कहौ हमसों प्रथम तितको सबही गाथ ।२०।

सुनि संमत करि जो उचित ह्वैहै सोइ बृत्तांत।
कह्यो जायगो नाथ सों सब तजि निपट नितांत" ।२१।

समयोचित रिच्छेस के सुनत नीतिमय बैन।
"साधु! साधु" सबही कह्यो हुलसौंहैं करि नैन ।२२।

बैठि सिला तल पै स्वबिच मारुत सुतहिं बिठाय।
पूछन लागे प्रेम सों सुनिबे हित अकुलाय ।२३।

इति श्री लंकादहन काव्ये पावक-प्रत्यागमन नामकः सप्तमः सर्गः

अष्टम सर्ग

प्रमोद-प्रसरण

लक्खन लाड़िले के बर बंधु को,
दूत न कूत है जा बल बून को।
सासक सारे अरातिन को,
गति नासक सिंहिका के छल छून को।
पायक श्री कपिनायक को,
अरु साँचो सहायक जो पुरहून को।
सो सुनि रिच्छप को कहिबो,
लहि बोध गह्यो निज छाव बिधून को।१।

बोलि उठ्यो झट बालितनै,
"बर बीर त्रिनै सुनौ बेर न लावो।
हौ जब ते सब ते बिछुरे,
तब ते की कथा कहि बेगि सुनावो।
या बिधि सों नहिं होत सँतोख,
मिलै जिमि तोख सोई गति गावो।
नाँव औ गाँव को ठाँव ठिकाई,
गए किमि सो बलि जाउँ बतावो"।२।

यों सुनि अंगद को कहिबो, गहि
बोध जथारथ सोध कथा को।
लाग्यो कहै कपिराय सुनाय,
जनाइबे के हित जोग जथा को।
"पाइकै आयसु रावरे को अति,
चावरे सों तजि पूर बिथा को।
हौं चल्यौ बारिधि के पर पार,
सँभारत तात के पूत पथा को।३।

बारिधि के तट एक उतंग,
लख्यो गिरि स्रिंग उमंग सों तापै ।
कूदि चढ़्यो मन मोद मढ़्यो,
बढ़्यो मेरु प्रमान अमान ह्वै आपै ।
इच्छित काज बिचारि हिए,
रहि रच्छित श्री रघुबीर प्रतापै ।
हौं उछरयौ छिति ते नभ पै,
द्रुत धाइ चल्यो गहिकै दृढ़ दापै । ४ ।

लै पथ सिद्ध औ चारन को,
गहि कारन सोध को बोध भरो अति ।
धाइ चल्यो द्रुत कंपित कै दिसि,
दच्छिन को गहिकै मन की गति ।
रोके मिली मग नागन की,
जननी सुरसा उर साधु सुभा मति ।
ताहि प्रबोधि जथा-बिधि सों,
लहि आयसु तासु चल्यो बिनहीं छति । ५ ।

बारिधि-बासिनि छाँह को ग्रासिनि,
त्रासिनि सिंहिका की लखि माया ।
ताहि निपाति पिता हित मीत,
मनीसी महा मयनाक की दाया ।
देखि प्रतोखि कै ताहि सराहि,
त्वराहि त्रिकूट तटै नियराया ।
या बिधि सों गढ़ लंक लौं जाइ,
सजाय कै स्वल्प कियो निज काया । ६ ।

भृंग लौं स्रिंग त्रिकूट पै जाइ,
स्व पिंग बिलोचन को करि आयत।
हेरयो हिरन्मय कोट प्रकोट,
अखोट जहाँ मनि की बहुतायत।
चित्र बिचित्र जड़ाई जड़ी,
नहिं पाई कहूँ लखि कैफ किफायत।
भासत भानु प्रभा सों मढ़ी,
गढ़ लंक के अंक मैं पंक लगायत। ७।

खाइ हैं सिंधु गँभीर बन्यो,
फिरि कूट ते कोट लौं हाटक कोट है।
उच्चता मैं कलसे गढ़ लंक के,
बादर अंक हू मैं करैं चोट है।
जाके समान नहीं अलका,
अमरावती की गिनती अति छोट है।
दीपति जाकी दिपै दिसि मैं,
मनोभानु की भा यहाँ पै लहालोट है।८।

ताके अनेक पताके लसैं अति,
ऊँचे धुजान के दंड मैं पोहे।
रंग बिरंग के केतिक ढंग के,
हेरत ही मन लेत हैं मोहे।
रंच समीर लगे लहरैं,
फहरैं अँटि अंबर मैं रुचिरोहे।
मानो मना करैं दूर ही ते,
इत आउ न यों बिमुखीन को जोहे। ९।

कौन कहै किते भौन बने,
जिनमैं घुसि पौन रुकै कबहूँ ना।
कोठा अटारिन की भरमार,
सुमार कै पायो हिए अबहूँ ना।
जात जितै हो तितै ठिठकी रहै,
दीठि अनीठि फिरै तबहूँ ना।
जेती लखो सुघराई तितै,
लखि पाई पै पाई कही सबहू ना।१०।

बाग बगीचे घने बन की,
बहुलाई लखाई परी चहुँ ओरैं।
बापिका कूप तड़ाग सरोवर,
को बरनै जिते हैं तेहि ठौरैं।
बीथिका बीथी सभी थीं सिंचीं,
नहिं थीं तौ कहूँ रज की झकझोरैं।
चौरै चहूँ गुलजार बजार की,
सोभा अपार चितै 'बरजोरैं।११।

दौरत देखे दिमाक दुरे,
दिकपालन को दसमाथ दुवारे।
काल हू ते प्रबली अँटिया सों,
बँधे पटिया सों लखात लचारे।
बेदी बिधान बताइबे को,
बिधि हू बिबसै से रहैं मन मारे।
छोड़ि सबै फरफंदी बृहस्पति,
बंदो लौं गायौ करैं जस हारे।१२।

बीरन की भरी भीर भ्रमै गिरि-
स्रिंग सो ऊँचे मतंग से कारे।
बज्र हू ते दृढ़ अंग उमंग मैं,
जंग मैं दीसै महा बलवारे।
सूल गदा असि पट्टिस पास,
अनेक तरास के आयुध धारे।
यारन की ना सुमार जहाँ,
हथियारन की कहै को निरुआरे।१३।

ओपतीं तोपैं सफीलन पै गँजे,
गोले बिनौले समान सबै थर।
बाजि रथादि पदातिन की गिनती,
ना तिती जितनी हैं तहाँ पर।
वारन और सवारन की भरमार,
भरी हथियार धरे कर।
रच्छित ऐसी न गच्छित ह्वै सकैं,
जामैं अधच्छित बैरिन के चर।१४।

ऐसी सुरच्छित हेरि पुरो हौं,
अलच्छित ह्वै मन माँहि बिचार्यो।
यामैं प्रवेस प्रकास मैं नाहिं,
निकास अँधेरेई मैं निरधार्यो।
आगम सोचि निसागम जानि,
समागम ते बचिबो अनुसार्यो।
याही कसाकसी के अरसा महँ,
ह्वैकै मसा सम हौं पगु धार्यो।१५।

कोट तैं ह्वैकै घुस्यो पुर मैं,
उर मैं न कछू भय को भ्रम राख्यो।
एतेई मैं अनईछे कोऊ,
मम पोछे ते कर्कस रूप यों भाख्यो।
'को है तू चोर ते जोर चल्यौ,
कितै जात है तू मरिबो अभिलाख्यो।
हौं भखिहौं चखिहौं पल मैं पल,
तेरो अरे, सुनिहौं मन माख्यो'।१६।

घूमिकै हेर्‍यो महाबिकटा चिकटा सी,
चली इक राच्छसी आवत।
देखि रुक्यो कह्यो 'कौन है तू,'
कह्यौ 'तू उलटै हमैं आँखि दिखावत।
जानत ना परतच्छ पुरी हौं,
कुरीति सों जो यहि मैं घुसि आवत।
सो तो हमारो अहार है,' यों
कहिकै बढ़ी लंकिनी नाम सुनावत।१७।

हौं गुन्यो है यह बिघ्न स्वरूप,
बिरूप बनाइबो है बिधि याको।
सोचि यों एक चपेटिकाघात,
कियो मुख मैं बध त्याग तिया को।
स्रोनित फेंकत भूमि गिरी,
वह होस रह्यो नहिं जोस जिया को।
किंचित बार मैं चेत सँभारि,
उठी बल धारि सुधारि धिया को।१८।

बोली 'अहो कपिराज सुनो,
जब दीन्ह्यौ दसानन को बिधि नै बर।
जात समैं हमैं हेरि कह्यो,
अरे लंकिनी तू है निसंकिनी या थर।
पै जब ह्वैहै अधीर महा,
लहिकै गुरु घात बलीमुख के कर।
जानियो ह्वैहैं बिनास सबै,
तब बासी बिसेस असेस निसाचर।१९।

सो हम जान लियो निहचै अब,
सारे अरातिन के सुख रीते।
पापी सुरापी दसानन के,
अब आनन फानन मैं दिन बीते।
जाहु सुखेन करौ प्रभु काज,
भरौ निज बैरिन के मुख तीते।
आसिस देति हौं कीस तजो भ्रम,
रीसति ना हौं असीसति जी ते'।२०।

तौ लगि अंबर अंक के पंक मैं,
पंकज रूप मयंक उदै भो।
केसरि लौं बिखराइ मयूख,
पराग लौं पोखि पियूख मुदै भो।
चाँदनी को छहराइ धरा धरि,
गंध को पूरि प्रबंध जुदै भो।
जोहन को जगती तल के,
गिरि गोहन मोहन रूप खुदै भो।२१।

भासत मानो पयोदधि सों,
सधिकै नवनीत को लुंद जुदै भो।
कै सुठि अमृत बल्लरी को फल,
टूटि नभस्थल मैं समुदै भो।
कै बर मन्मथ को रथ चाक,
चिराक निसा जुवती को खुदै भो।
नंदन चारु चकोरन को,
द्विजबृंद अनंदन चंद उदै भो।२२।

पाइ प्रवेस निदेस बिसेस,
सुरेस की सत्रुपुरी महँ हौं बढ़ि।
लाग्यो भ्रमै प्रति मंदिर मंदिर,
अंदर ते फिरि बाहर लौं कढ़ि।
देखे असंख्यन जोधे तहाँ,
पथ रोधे तऊ मन मैं निहचै नढ़ि।
खोज्यो भली बिधि पै न लही सिधि,
यातैं गयो मन मोह महा मढ़ि।२३।

फेरि बिचारि प्रधान प्रधान,
निसाँकन के गृह अंक निबेख्यो।
बारिदनाद महोदर अच्छ,
कुभच्छ घटास्रति को घर घेरयो।
जाम्बुनमाली सुमाली प्रहस्त,
समस्त के रच्छित कच्छ मैं हेख्यो।
किंकर आदि के आलय बीच,
बिसोधक दीठि सुनीठि कै फेख्यो।२४।

या बिधि सों सब ओर निरेखत,
पेखत राजदुवार लौं आयो।
तामैं प्रवेस कै चाहि चितै,
चित चक्रित ह्वै अतिसै भरमायो।
ऐसो बिचित्र न चित्रित ह्वै सकै,
ताकी बिचित्रता हेरि हिरायो।
पै तितहू अनुसोध कियो,
पर जानकी को कछु सोध न पायो।२५।

चाँदनी के परकास मैं खास,
सकास ही राज निवास के पावन।
आठहू जाम अराम को धाम,
लख्यो गृहाराम सु एक सुहावन।
सोन की चार दिवारी घिरी,
जेहिके चहुँ ओर महा मनभावन।
नंदन हू तैं अनंदन बार,
बिहार करै नित ही जित रावन।२६।

कूदिकै कंचन कोट चढ़्यो,
चढ़िकै तित संयत ह्वै चहि चाव सों।
देखन लाग्यो छटा छिटकी,
प्रमदाटवी की बसिकै तेहि ठाँव सों।
ताकी बड़ाई कहाँ लौं करौं,
नित जाकी सफाई सिंचाई सु ताव सों।
चाली सुरेस बहाली भयो,
रखवाली करै बनमाली सु ताव सों।२७।

तामैं प्रवेस कै देख्यौ चहूँ,
कहूँ रंचक हू त्रुटि पाई न तामैं।
भोर ते साँझ लौं भानुप्रभा,
न उतापन तापि सकैं घुसि जामैं।
पन्नन की सजी क्यारी भली,
लगी मानिक गोट अगोट ललामैं।
हीरन की रविसैं रवि सैं करैं,
होड़ न जोड़ लख्यो बसुधा मैं।२८।

पंथ प्रवाल को लाल ही लाल,
जमाल सों जो अपने मन मोहत।
गैल बने पुखराज के जामैं,
न मैल समात समा सजि सोहत।
प्राकृत सैल खड़े जिन ते,
झरने झरि झीलन को तन पोहत।
केलि के कुंज निकुंज के पुंज,
जहाँ तहाँ स्वागत को मग जोहत।२९।

ठावँ ही ठावँ प्रदीप सों दीपित,
सीप ही की सुबुझी बनी नावैं।
केते कितान की तान बितान की,
ते मुकतान की भूषित भावैं।
सोहैं सजी सरसी मैं रसी,
अरसी सी लसी सुखमा सरसावैं।
बारहिं बार बिहार करै हित,
दर्सक बृंदन को ललचावैं।३०।

ताल तमाल हिंताल रसाल,
निहाल बने जल जाल सों सींचे।
जंबु औ निंब कदंब के जूह,
समूह लगे बिलगे न नगीचे।
दाख के औ कचनार अनार के,
केते प्रकार के बीरुध बीचे।
फूले फरे दरसात दरे दरे,
हेरे हरे हरे ऊपर नीचे।३१।

जेते सुबास के खास प्रसून,
सबैं तहँ पास ही पास निहारे।
रैनि मैं ते ससि के निकसे,
बिकसे बर देत सुगंध पसारे।
चारि हूँ कोद अमोद महा मन,
मोद भरैं स्रम देत निवारे।
मानस तौ प्रमदा कुल होत,
सु या प्रमदाबन मैं पगु धारे।३२।

सीत-प्रधान प्रदेसन के,
बिरवा बहु बेस सुदेस सजाए।
जो न सकैं सहि रंचक ताप,
उताप लगे नसि जात सुभाए।
ताकी सु आँच बचाइबे को,
बहु काँच के साँचे हरे गृह छाए।
जामैं प्रवेस न पाइ सकैं, दिन-
मैं रबि की किरनैं कोउ भाए।३३।

पंथ प्रवेस के पास ही पास,
निकास चतुष्पथ के समुहारे।
एक सुमार मैं एक कतार मैं,
केतिक तार के फैलि फुहारे।
छूटि फिरैं फिरकी से चढ़ैं-
नभ घूमि गिरैं झरि के अनुहारे।
मानो करै महि मेह सों होड़,
सुनेह सों जीवन देति जुहारे।३४।

पाइ निदेस निसाँक नरेस को,
पौन हू गौन करै यहि भावै।
जाते सु या प्रमदाबन की,
कहूँ एक हू पाती न टूटन पावै।
ताहू पै रोज बुहारी कर्यो करै,
आरी भयो उर मैं अकुलावै।
पै तप अर्जित तेज के तापन,
तापित ह्वै बन्यो भीरु सुभावै।३५।

वा प्रमदाबन की सुखमा,
सुखमानस मैं जेहिके रमि रैहै।
सो निरखे ही मदान्वित ह्वै,
मदनान्वित मोद घनो दिखरैहै।
जाको रह्यौ चित दोचित ह्वै,
तेहि रोचित हू तौ अरोचित ह्वै है।
मो चित जानकी सोध मैं सोचित,
मोंहिं सुखोचित का सुख देहै।३६।

सोध न पाई कहूँ सिय की, जिय की,
बिथा काह कहूँ केहि सो हौं।
भूलि गयो अपने को मनै, न,
रही सुधि हू कि कितै अहौं, को हौं।
सोचन लाग्यो कि सेस रह्यो कहा,
बास बिसेस कि जाहि हौं जो हौं।
खोजों कितै रघुबीर प्रिया जेहि,
खोज को ओजि हनोज चलो हौं।३७।

योंहीं बिचारत औ पद्चारत,
जात चल्यो दुख दाह दह्यो हौं।
तौ लगि हेर्यो महीरुह एक,
असोक को जा लखि मोह मह्यो हौं।
ताके तरे बहु राच्छसी बृंद,
अनंदित बैठीं बिलोकि बह्यो हौं।
सोह बिषाद की मूरति सी,
तिनके बिच जानकी जोहि जह्यो हौं।३८।

धारे मलीन पटै परिधान,
बियोग बिधान रह्यो निखराई।
धूरि धुरेटे महा क्रिस गात,
जनात जटा की जुटी सिखराई।
आनन अंबुज सूखि रह्यो, तन,
भूखि रह्यो रज की रुखराई।
नीरज नैन अचैन भए,
अँसुवा ते भरेई परे दिखराई।३९।

सत्यवती कुल कामिनी लोक-
ललामिनी मंजु कलामिनी स्यामा।
पुन्य प्रकासिनी आनँद रासिनी,
राघव अंक बिलासिनी बामा।
काल छुरी दसकंधर की,
बिछुरी प्रिय प्रीतम सों छबि छामा।
भीरु सुभाव तैं मूरति सी बनि,
बैठी बिसूरति है निसि यामा।४०।

तापै सँतापी दसानन सों अनु-
जोजित दानव जाति की जाया।
लै बहुरूप मनोमत मंद,
छकावतीं छ्वै छल छंद की छाया।
त्रासती कोऊ महा कुटिला,
कपटी बिकटाकृति क्रूरिणी काया।
कोऊ प्रलोभन दै दै भुलावतीं,
जानि कै जी मैं महा असहाया।४१।

ज्यों हरिनीन के झुंड परी,
हरिनी अकुलाइ रहै निरुपाया।
कै रतिवाली मराली परी,
बधिकावली के कर मैं असहाया।
लाजमई सुख साजमई
रघुराजमई महिमामई माया।
त्यों रकसीन के बीच फँसी,
बिबसी सी बसी जगदीस की जाया।४२।

दीन भई छबि छीन भई,
औ अधीन भई एकसीन के ऐसी।
पै निज पूत पतिब्रत के बल,
आपु ही आपु सुरच्छित ह्वै हैसी।
देखि दुखी भयो हौं अतिसै,
कुरुषी भयो पै तजि बानि अनैसी।
जाइ असोक के ओक मैं बैठि,
ससोक लखै लग्यो होति है कैसी।४३।

या बिच राजनिवास के पास तें,
किंकिनी की कनि नूपुर की धुनि।
कान परी अरु जानि परी जुरि,
आवती हैं कछु बाल इतै गुनि।
हौं उचक्यो चक्यो चक्रित ह्वै,
चह्यो एतेई मैं पग चाप परी सुनि।
तौ लगि रावन को निरख्यो,
इत आवत नारिन मैं निखर्यो पुनि।४४।

हौं अकुलाय, भुलाय कै सो बपु,
आपुनो रूप तुलाय कै छोटो।
लाग्यो लखै पतियान के ओटन,
कै छतिया द्रिढ़ औ मन मोटो।
देख्यो प्रतच्छ समच्छ ही आवत,
पास अधच्छित खेचर खोटो।
देखिबे को अनइच्छित काज,
अलच्छित इच्छित कै रुचि पोटो।४५।

पूर्ण मदा प्रमदा जुवतीन के,
संग उमंग सों ढंग कै औरै।
आसव रंग छक्यो अँग अंग सों,
जाहिर होत अनंग को तौरै।
प्रेम की तुंग तरंगनि मैं तरि,
तीर न पावत भावत भौरै।
दाँवत मत्त मतंग सों आवत,
नावत बेढब सों पग ठौरैं।४६।

आवत देखि निसाचरनाथ को,
यों जुवतीन के साथ मैं सीता।
काँपि उठी झुकि झाँपि भुजान सों,
पीन पयोधरै पूत प्रतीता।
आकुल ह्वै चहुँ ओर चितै,
न हितै लखि पास निरास ह्वै नीता।
बारहिं बार उसाँस लै आँसु,
बिमोचति लोचन सों अति भीता।४७।

देखि दसानन आनन फानन,
आइ कछू नियराइ नगीचे।
माथ नवाइ कियो प्रनिपात,
परेई पर्‌यो पग पै द्रिग मीचे।
फेरि उठ्यो उठिकै ठिठक्यो,
ठमक्यो करजोरि कह्यो सुर ईंचे।
प्रानप्रिये केहि हेतु न देखति,
मों दिसि है अवरेखति नीचे।४८।

दीठि अनीठि सनेह सनी सुठि,
जौ कहूँ एक हू बार दया करि।
मो दिसि डारि उबारि कै डूबत,
पार उतारि दै नैकु मया करि।
तौ इन भामिनी बृंदन को,
अनुगामिनी तेरी बनाइ हया करि।
सेवौं सदा पद पद्म ही को सुख,
सद्म सुमार कै नेह नया करि।४९।

मानिहै जौ नहिं मेरी कही,
जिय जानिहै जीवन है जुग मास को।
बीतति औधि के रीतिहै आयु,
गतायु ह्वै का फल पैहै बिसास को।
खोजिहैं केतो तेरे हितमीत,
न पैहैं अचीत पतो या प्रवास को।
याही तें तोहिं बुझावति भामिनी,
छोड़ि दै जी की रही सही आस को।५०।

यों सुनिकै बच खोट के चोट तें,
आकुल ह्वै गहि ओट तिनै को।
मानिकै ताहि तृनोपम तुच्छ,
कह्यो मिथिलेसजा त्यागि बिनै को।
रे सठ बंचक चोर छिछोर,
बिसेसन तेरे अथोर गिनै को।
तेरी बिसाति है केती कुजाति,
जो तू करै मोपै अनीति छिनै को।५१।

जौ करिहै तू अनीति कछू तौ,
प्रतीति कै राखु जिये जरि जैहै।
मेरे अखंड सतीत्व प्रताप के,
ताप ही ते खर सों बरि जैहै।
सेस न रैहै बिसेस कछू,
मद गर्व को तेरे सबै गरि जैहैं।
पाप की तेरे धरी गगरी,
सगरी अगरी ही ढरी भरि जैहै।५२।

जानत ना सठ सिंहबधू कहुँ,
जंबुक रिंहन सों रुचि राखै।
राखि घनी मरजाद धनी,
मरियाद बनी रखिबो अभिलाखै।
लोक मैं है मरजाद ही जीवन,
ता बिन जीवन स्वाद न चाखै।
तू मरजाद मिटाइ सबै,
इक जीवन बाद ही को भल भाखै।५३।

ह्याँ तो यहै निहचै है अतुष्ट,
कि रुष्ट ह्वै तू करिहै कहा मेरो।
चाह नहीं परवाह नहीं,
सुख औ दुख की दोऊ हैं बिनसेरो।
कै असि तेरी कि नाह की बाँह,
यहै सकिहै करि मो उर फेरो।
तीसरी बात न जानति हौं,
गति ईसरी की नहिं मानति मेरो।५४।

या बिधि सों बहु साम औ दाम,
त्रिभेद की बातैं बनाइ बनाइ कै।
चाह्यो मनावन जानकी को,
पै चली न कछू मन मान्यो मनाइ कै।
त्वेष तैं द्वेष भरो भभर्‍यो,
सँभर्‍यो बहु रोस तैं जोस जनाइ कै।
धायो अराति प्रतारिबे को,
औ उतारिबे को मद बीर गनाइ कै।५५।

भामिनी भूखन सुंदरी जासु,
पुरंदरी दासी बनी रहती है।
दीन हिता दुहिता मय की,
अहिता न कबौं कोउ की रहती है।
काम क्रिसोदरी नाम मदोदरी,
सोदरी हू ते सिरे रहती है।
रावन की पटरानी बनी,
पर हानी ते दूर सदा रहती है।५६।

सो बढ़ि हाथ गह्यो दसमाथ को,
साथ ही डारि गरे बिच बाहैं।
बोली बिनीत ह्वै प्रेम प्रतीत सों,
यों नृप-नीति दिखावती नाहैं।
आस्त्रिता हीनबला पै न चाहिए,
एती हलावलि जो दिल दाहैं।
याहि अराम दै कीजिए राम,
सु जाते यहौ प्रभु काम सराहैं।५७।

यों सुनि प्रेयसी के बर बैन,
दसानन मैन मदैन सँभारत।
होत अचैन हू चैन लह्यो, करि-
सैन कह्यो रकसीन जुहारत।
त्रास दै औचक साँस दै,
आस दै बेस बिसास दै बास सँवारत।
जा बिधि सों बनै राम सुबाम,
करौ सोइ काम मुदाम सुधारत ५८।

यों कहि टेरि कै फेरि अगेरि,
कह्यो रकसीन सों घेरि ततच्छन।
रच्छन ऐसो करौ जेहि ते,
कोउ तौर कहूँ न सकै करि गच्छन।
मानै न तौ लगि दै दै घनो दुख,
साँसति कै कै बनाइ कुलच्छन।
कीजियो औधि बितीतत ही,
कुरुखी लखि याहि सबै मिलि भच्छन।५९।

तौ लगि मंदोदरी अरु और,
सबै महिला मिलि कै घिरियाई।
लै गई रावन को तित ते,
इत सीता सती अतिसै अकुलाई।
लागी बिलाप करै अति दीन ह्वै,
ज्यों कपिला ह्वै अधीन कसाई।
सो दसा सोचत ही दुख होत है,
सो कहूँ कैसे तुम्हैं समुझाई।६०।

तौलौं नियोजित राकसी वै,
मनभावती पाइ निसाँक निदेसै।
लागीं कटा करै वै बिकटा,
निकटाइ नटाइ मिटाइ अंदेसै।
एतेई मैं तिनमैं की सुभामति,
राच्छसी एक बिसेस समै से।
बोली बुझाइ कै आसुरी ब्यूहहिं,
आसुरी नीति निराइ मनै से।६१।

छोड़ि बिरोधपनो अपनो,
पहिले सुनो जो सपनो हम देख्यो।
सूचित होत बिजै जेहिते,
एहि जानकी की निहचै उर लेख्यो।
बानर एक बली, गढ़ लंक को,
फूँकि दियो निज नैन निरेख्यो।
माथ औ हाथ कट्यो खर पीठ पै,
दक्खिनै जात दसाननै देख्यौ।६२।

बारिदनाद घटास्रुति आदिक,
जे बर बीर रहे बलवारे।
ते सिगरे रन जूझि गए,
जिय बूझि गए रुचि रोस को सारे।
पायो अभीखन राज बिभीखन,
साज समाज सबै सुख वारे।
या सपनो सच ह्वैहै जरूर,
कहौं बच भाखि लख्यों भिनुसारे।६३।

आगम को अनुमानि भलो,
मत मानि कुबानि ते हानि मनै कै।
मोह मजाइ सनेह सजाइ,
सु जाइ सिया पद पै सिर नै कै।
बाध्य ह्वै त्यागि अबाध्यता को,
अपनो अपराध सुनाइ प्रनै कै।
माँगैं छमा मिलिकै सबही,
जेहि तौर मिलै अनुनै कै बिनै कै।६४।

राजी रहे सिय के अपनो, सब-
तौर भलोई भलो लखि पैय्यत।
आइहैं ह्वै बिजयी जबहीं,
रघुनायक रावन की बनि मैय्यत।
वा समै अैहै न काम कोऊ,
धन धाम धरा के गुलाम ए दैय्यत।
ता समैं जीव यहै रखिहै,
भखिहै निज पीतम सों कहि रैय्यत।६५।

आवौ चलौ मिलि के सबही,
सब ही बिधि सों जिय की रुचि रेखत।
सेवा करैं निज देह सनेह सों,
नेह सों तेह को ताप दुरेखत।
जाते मिलै सुख रंचक सीय को,
सोई उपाय करैं अवरेखत
दुःखिनी को दुख देखि महा-
दुख होत मनै न बनै मुख देखत।६६।

यों सुनिकै त्रिजटा की कही,
सबही मिलि संमत कै अनुरागीं।
जाइकै पोच सकोच बिहाइ कै,
सोचि सबै सिय के पग लागीं।
देखिकै भाव बिरोधिन को,
अत्र रोधित ह्वै सिय सोच मैं पागीं।
पै परिसोध लह्यो न कछू,
मन बोध गह्यो बनि बेस बिरागीं।६७।

देखि दसा तितकी हितकी,
अनरोचित मोचित सोच मैं आयो।
कौन उपाय करूँ जेहिते, मोहि-
जानि लैं सीय स्वपीय पठायो।
और उपाय न पाई जबै,
तब राघव को जसगान ही गायो।
सो सुनि सीय चितै चकितै,
सुचितै हमैं औचक बैन सुनायो।६८।

को तुम कौन के भेजे कहाँ,
केहि के हित कैसे इतै चलि आए।
जानत कैसे रघूत्तम को,
जेहि को जस पावन गाइ सुनाए।
साँची कहौ, कर जोरि कहौं कपि,
हौं अति आतुर देति जनाए।
रूप बनाए बली नुख को,
सुख देत हौ लेत दुखै अपनाए।६९।

यों सुनि के बच जानकी के,
अति दीन अधीन ह्वै हौं न रुक्यो फिरि।
आदि ते अंत लौं राम कथा,
कहि गाइ सुनाई यथामति ह्वै थिर।
सो सुनि पूछयो, 'कहाँ तुम सों.
प्रभु सों केहि हेतु हिताई भई चिर'।
हौं कह्यो, 'जैसे भई सभई',
दिखराय चिन्हानी दई मुँदरी फिरि।७०।

देखत पीतम की मुँदरी,
सब सीतम भूलि गई सिय ही ते।
आनँद सों रँगिगो अँग अंग,
उमंग सों ढंग भयो सिथिली ते।
रोम खड़े भए स्वागत को,
अनुराग सों पूरिगे नैन अमी ते।
जानि परी जनु आनि मिले,
रघुबंस बिभूखन प्रान पिरीते।७१।

मोद अमात उरायत मैन,
समात सुबाद ही मैं बहुलाई।
राग सों सारो गरो भरिगो,
गरिगो अनुराग ही मैं गरुआई।
पूछिबे के हित राम कथा,
अजथारथ रूप उठी अकुलाई।
जात कमात उदेग तऊ,
अतुराइ कै बोलीं ममात जनाई।७२।

'माया ते ऐसी रची न गई,
विरची न गई कहूँ लोक मैं ऐसी।
देव विनिर्मित रत्नमई,
अति जत्न सों जोड़ लही नहिं तैसी।
दीन्हीं सुरेस नै मो ससुरै,
दसरत्थ नरेसहिं मानि हितैसी।
सो रघुनाथ के साथ रही,
तुमरे कपि हाथ परी किमि कैसी।७३।

'बीर बली मजबूत महा,
दस चारि हजार निसाचर मारे।
जो इकलोई जनस्थल मैं,
निज बानन तैं बिधि सों बधि डारे।
सो तो तृलोक जई निजई,
तेहिके करकी मुँदरी अनुहारे।
पाई कहौ केहि तौर सों पूत,
न तो मैं इतो बल बूत निहारे।७४।

हौं करजोरि विदेहजा सों कह्यो,
'मातु सँदेह न कीजिए मोपर।
हौं प्रभु दूत न धूत कहौं तव-
पूत हौं यामै न संसय को थर।
आपुही के पहिचानिबे काज,
निसानी दई रघुराज नै जो कर।
औ कछु बानी जुबानी कह्यो,
सो कहानी कह्यो चहौं दीजिए औसर।७५।

यों कहि पाइ निदेस बिसेष,
सँदेस कह्यो प्रभुसों समुझाइ कै।
और कह्यो हमै आयसु दै,
कछु लीजिए काज निजी अपनाइ कै।
जौं कहौ बंधु समेत दसाननै,
मारूं जोरावरी साथ सहाइकै।
कै गढ़ लंक उखारि तुम्हैं सह,
लै चलौं नाथ पै सिंधु मझाइ कै।७६।

बोलीं सिया कछु कामना है,
बस कामना है उर अंतर एकै।
धर्म धुरंधर श्री रघुवीर जू,
बानर भालु चमू संग लै कै।
आवैं इतै चढ़ि कै गढ़ लंक पै,
नीच निसाचरै तुच्छ मनै कै।
अंस समेत सबंस दसाननै-
मारि, हमैं लै चलैं तजि टेकै।७७।

मोहिं दियो है, सुरुष्ट ह्वै दुष्ट नै,
औधि द्विमास की जाहि बितीतत।
ह्वै कै अतुष्ट न राखि है जीवित,
सीवित ह्वै मम आयु है रीतत।
जाइ यहै कहियो बस नांहसों,
बांह गहे की पनाह है बीतत।
अंतर बीच न आइ बचाइहौ,
तौ फिर पाइ हौ देह अतीतत।७८।

हौं कह्यो अंब तिहारी कही,
सबही कहिहौं प्रभुसों समुझाइ कै।
औ फिर औधि के अंतर आइहौं,
श्री रघुराजहिं संग लिवाइ कै।
पै यहि औसर हेरि हरे हरे,
फूले फरे बहु रूख लुभाइ कै।
मोहिं छुधा लगी, याते अहार को,
दीजिए आप उपाइ बताइ कै।७९।

बोली सिया, यह रावन को,
प्रमदाबन है घने मोद की सामा।
यामैं बिहार करैं नितही,
सुर जच्छ औ रच्छन की बर बामा।
यामैं स्व इच्छित रूप सों पौन,
न गौन सकै करि आठहू यामा।
रच्छत याहि बड़े बड़े बीर,
बली अतिकाय निकाय मुदामा।८०।

मोहिं नहीं इनते भय मा,
मन मा तुम रंचक जौ सुख मानौ।
तौ परि घोर घनो दुख मैं,
दुख ही को सुखै करिकै अनुमानौ।
तेरे असीस ते ए रकसीस,
कसीस न कै सकिहैं दृढ़ जानौ।
दीजिए बेगि निदेस दया करि,
मो पै मया करि मोह न आनौ।८१।

मो लघु रूप चितै, सुचितै,
सियको अति सोच भयो लगीं भावन।
तौ लगि हौं प्रगट्यो बपु आपुनो,
भासित भूधराकार भयावन।
देखि लह्यो उर मोद घनो,
चित चक्रित ह्वै चितवै लगीं चावन।
देइ असीस कह्यो सुत जाहु,
अघाइ कै खाहु यथा रुचि पावन।८२।

हौं गुन्यो आइ इतै सु चितै,
प्रभु को भयो कारज एक तौ पूरो।
दूसरो सेस है, देखिबो या खल,
को बल सो रह्यो जात अधूरो।
या मिस खोऊ लख्यौ चहौं और,
भख्यौ चहौं अमृत सों फल रूरो।
यौं निरधारि प्रनाम कै सीतहिं,
हौं चढ्यो बीरुध-ब्यूह-कँगूरो।८३।

खात ही खात महा उतपात,
अरंभ कियो हम दंभ को धारे।
जेते रहे बर बीरुध बेस,
सबेस उखारि तिन्हैं महि डारे।
तोरि मरोरि झकाझकी झोरिकै,
चौ दिसि मैं झिखराइ पवारे।
वा प्रमदाबन को मद गारि,
छिनै महँ जोबन जोर निकारे।८४।

रच्छक जेते रहे तितके,
बनि तच्छक ग्रास नसे बिनसे ते।
जामुनमाली, महा बलसाली,
चमू सह काल के गाल बसे ते।
किंकर आदि असंख्यन बीर,
अधीर से आपु ही आइ फँसे ते।
मंत्रि प्रहस्त के सात सपूत,
अकूत बली रन खेत खसे ते।८५।

बैरिन मैं जिनकी रही आँच,
महा भट पाँच बली सुर हू ते।
ते परि मेरे करै निकरै,
छन ही मैं गए रन के मख हूते।
फेरि अछै को भयो छय दारुन,
और न पाई सहाय कहूँ ते।
सेस मैं आयो सुरेस जयी,
घननाद बिसेस है जो जम हू ते।८६।

सो कल सों छल सों बल सों,
सबही बल सों खल मो संग हार्‌यो।
फेरि ह्वै ओट मैं खोट महा,
बर ब्रह्म को अस्त्र निरस्त्र पै डार्‌यो।
हौं गुन्यो हौं बिधि हू ते अबध्य,
तऊ बिधि एक बिधेय बिचार्‌यो।
या बिधि मानि बरस्त्र प्रभाव,
दसानन सों हौं करौं देखुहार्‌यो।८७।

मानि कै अस्त्र प्रभाव बँध्यो,
बँधिकै अधिकै सिथिलीपन धारे।
बारिदनाद के हाथ पर्यो,
पहुँच्यो दसमाथ के जाइ दुवारे।
हेर्यो तितै असुरेस सभा,
जेहि की बिभा जाति कही न सुतारे।
आजु लौं ऐसी प्रभावभरी,
निरखी नहीं दूजी यहै निरधारे।८८।

रंक लौं डोलैं धनेस जहाँ,
औ सुरेस ससंक रहैं मन मारे।
देख्यो महा करुना सों भर्यो,
बरुन जेहि ठौर ठिके ठिठुहारे।
हेर्यो उदास मनै समनै,
भयभीत भए भकुआसे भिखारे।
दाहकता तजिकै दहनौ कहनौ,
करैं कायर की गति धारे।८९।

जोह्यो जहाँ मरुतै रुतिहीन,
औ दीन अधीन लौं नैरित हेरे।
'ईश' तौ वैसे असीसिबे के हित,
रोज पुजावत आइ सबेरे।
त्यागि विकल्प बृहस्पति को,
बसि जल्पत अल्प ही अल्प निबेरे।
और की कौन कथा सबिथा बिधि,
बेद सुनावत आइकै नेरे।९०।

देखिकै ऐसो प्रचंड प्रताप,
न मो मन में कछु ताप अमायो।
बाद बिवादन हू मैं मनाक को,
हौं धरि धाक बराक बनायो।
कोपि दियौ बध दंड हमैं,
करजोरि विभीखन ने कमवायो।
अंग बिहीन करै हित पूँछ मैं,
लै पट तूल समूल बँधायो।९१।

पुच्छ बिहीन करै हित तुच्छ,
अराति जमाति कुख्याति मैं लागी।
तेह सों देह बचाइ सु नेह दै,
वेह सों बारि दियौ बस आगी।
सो लहि धीर समीर सधीर ह्वै,
आपुही आपु हरै हरै जागी।
देखि धुकाधुकी पावक की,
अधिकाधिकी मो मति मोह मैं पागी।९२।

हौं लग्यो सोचन अर्चिष को,
अधिकात निहारि मनैमन भाइकै।
रावन के बल को बहु अंस,
बिधंस कियो हम औसर पाइ कै।
पै बल मुख्य बचो रहिगो,
दृढ़ दुर्ग औ कोष सु तोष बिहाइकै।
चाहिए ताको कियो अपचै,
निहचै यहि पावक बीच जराइ कै।९३।

आइ इतै सिय सोध लियो,
प्रतिसोध लियो करि क्रोध करेरो।
जोधन को अवरोध लियो,
बर अस्त्र को रोध लियो चहुँ फेरो।
रावन हू ते बिरोध लियो,
अनुरोध बिभीखन 'को बहुतेरो।
पै गढ़ को नहिं बोध लियो,
न प्रबोध लियो प्रभु के चित केरो।९४।

यो हम चिंतत ही रहे ता बिच,
वे सिगरे मिलि मंत्र दृढ़ाइ कै।
लै चले मोहिं फिरावन को,
चहुँ ओर पुरी बिच ब्यूह बनाइकै।
तौ लगि हौं निज अंग सँकोचि कै,
बंधन मोचि कढ़्यो अतुराइकै।
कूदि चढ़्यो कलधौत कँगूरन,
पै बनि कूर लँगूर उठाइ कै।९५।

जाइ तितै बपु भूधर लौं,
बिहदै गति रूप बढ़ाइकै आपको।
फूँकि दियौ सहजै गढ़ लंकहिं,
संक बिहाइ उताप के ताप को।
जे निकरे पकरे गए वे,
सकरे परि ते जकरे परिताप को।
खूने गए, कछु हूने गए,
कछु भूने गए धरि कै दृढ़ दाप को।९६।

या बिधि बंक ह्वै फूकि दियौ,
सब लंकहिं हौं लगि साँझ ते भोर लौं।
एक बिभीखन को गृह छोड़िकै,
सारो गढ़ै इक ओर ते छोर लौं।
हाटक कोट तैं फाटक लौं,
परकोट के चौदिसि मूल ते कोर लौं।
सेस बच्यो न कोऊ थल ऐसो,
जर्यो नहिं जो उबर्यो नहिं गोर लौं।९७।

लंक निवासी अतंक भरे,
उर संक भरे बनि बेहद व्याकुल।
भागि न पावत आगि तपावत,
पावत ना कल आरत आकुल।
दोखी दसाननैं लागे सरापन,
पापन को फल पाइ समाकुल।
कोऊ जरै लगे, कोऊ बरै लगे,
कोऊ लगे चिघरै धरि काकुल।९८।

देखि महादुखदाई दसा,
तिन दुष्टन की अति तुष्ट भए हम।
गर्जि हँहास कै कूदि परे,
लवनांबुधि मैं सियराइबे को स्रम।
केतिक बेर लौं मज्जि निमज्जि,
थकाहट की लखि आहट को कम।
नाहर लौं कढ़ि बाहर ह्वै गयो,
सागर ते सुखपाइ अनूपम।९९।

बिक्रम को क्रम पूर भयो,
स्रम दूरि भयो सरिता बर न्हाए।
ह्वै गयो धूर अभिक्रम को भ्रम,
या बिधि सों गढ़ लंक जराए।
चाहत होन अपूर उपक्रम,
हौं निज हाथन काज नसाए।
जोह्यो न जानकी को फिरि,
जा हित सिंधु अतिक्रम कै इत आए।१००।

एतो बड़ो गढ़ लंक जर्‌यो,
उबर्‌यो न कोऊ बिन ताप बिसाहे।
ता बिच बैठी अकेली न कोऊ,
सहाय सहेली, जो भीर निबाहे।
ह्वै है बची केहि तौर सिया,
अति भीरु हिया एहि दाह के दाहे।
हाय हौं कीन्ह्यौ कहा यह काज,
कहा कहिहौं रघुराज के चाहे।१०१।

ठाढ़ो ह्वै बारिधि के उपकूल मैं,
भूल को आपने सोचत सोचत।
काज नसाय गयो एहि सूल मैं,
नैन तैं नीर बिमोचत मोचत।
चूक की हूक धँसी उर मैं,
सुविचार की कोंचनी कोंचत कोंचत।
ह्वै गयो एक ही बार अधीर,
सही तदबीर न रोचत रोचत।१०२।

ब्योम बिहारी सुचारन सिद्ध की,
तौ लगि कान परी सुनि बानी।
कैसो सपूत है मारुत पूत,
कियो अजगूत कला मनमानी।
लंक जराय बराय सिया को,
करी जितनी दनुजात की हानी।
सो न सकै करि कोऊ कहूँ,
एहि को बलबूत न जात बखानी।१०३।

यों नभचारी सुचारन सिद्ध की,
बात सुने भरिगो मुद मो मन।
तौ लगि भानु प्रभा भई कोमल,
सूर चले सरिता बर मज्जन।
चारि हू कोद बिनोद बढ़ै लग्यो,
काकली लागे करै द्विज के गन।
सीरी समीर चलै लगी मंद,
सुगंध सों पूरि उठ्यो सिगरो बन।१०४।

हौं हू निसागम जानि चल्यो,
प्रमदाबन जानकी को अवलोकन।
जाइ लख्यो वा असोक तरे,
वोहि तौर तैं बैठी बिसूरति सोकन।
धाइ पर्यो पग पै जुर तै,
तुर तै उठि कै लगी मोहि बिलोकन।
हेरि अनच्छत आयो हमैं,
अधरच्छत कै अँसुवा लगी रोकन।१०५।

फेरि सनेह सों फेरि करै,
मम सीस पै दै दै असीस सुभावन।
आनँद पूरि लगीं हितवै,
चितवै लगीं चाहि चितै भरि भावन।
रोकन चाह्यो हमैं बहुतै अनुनै,
औ बिनै सों भरी अनुभावन।
पै न रुके हम, चाही कछू,
प्रभु के हित चीन्ह भरी सुबिभावन।१०६।

हेरि हमैं चलिबे कहँ उद्यत,
मैथिली औचक सोच समानी।
सीस तैं काढ़िकै सीसमनी,
मम हाथ धर्‌यो पहिचान प्रमानी।
औ कछु बानी जबानी कह्यो,
निज गुप्त कहानी हिए अनुमानी।
आसिस दैकै बिदा दई मोहिं,
बिदा दै चल्यो हौं हिए सुख मानी।१०७।

आसिस और असीस लै अंब को,
हौं अविलंब चल्यो द्रुत ह्याँ ते।
आइ अरिष्ट के शृंग ही ते,
उछर्‌यो धर्‌यो मारुत को पथ याँ ते।
गाहत औ अवगाहत सिंधु कों,
आयो महेंद्र पै जोहि जिया ते।
साध्यो सबै कपिराज को कारज,
श्री रघुराज को राधि हिया ते।१०८।

पाइ तेज बल आपको, औ प्रसाद रघुराज।
जुग अमोघ आस्रय मिले, भयो सिद्ध सब काज।१०९।
मो जानत सब ही सर्‍यौ, श्री सुकंठ को हेत।
अब नहिं कछु बाकी रह्यौ, रह्यो जौन अभिप्रेत।११०।
सिय अनुसोधन मैं कियो, जौ कछु हौं उत काज।
कियो निवेदन आप सों, सो सब ही जुवराज।१११।
अब सब मिलि बनि एक मत, अनुचित उचित बिचारि।
कहौ कहैं सो चलि उतै, रघुपति सों निरधारि।११२।

सेस होय जो काज, ताहि तुरत करिकै अबै।
चलहु जहाँ रघुराज, अब बिलंब इत उचित नहिं।११३।
सुनि समीरसुत बैन, बालितनै बोल्यो हुलसि।
चलहु चलैं सब ऐन, सुनि सब ही उठि चलि परे।११३।

इति श्री लंकादहन काव्ये प्रमोद-प्रसरण नामकोऽष्टमः सर्गः।

———

नवम सर्ग

संतोष-संपादन

सीतापति राम जू को खबरि जनैबे काज।
धाए कपि निकर समोद सिंधु बेला सों।
गाहत गाहन पथ, सफल मनोरथ ह्वै,
आए मधुबन के समीप हद हेला सों।
पाइकै इसारो, जुवराज को सहारो मानि,
टूटि परे सब ही उमंग भरि रेला सों।
मधु फल खान लागे, कोऊ कहूँ गान लागे,
कोऊ अलगान लागे झपकि झमेला सों।१।

धाए कोपि रच्छक निवारैं हेतु भच्छकन,
पच्छक सुकंठ के बिपच्छिन को पाय पाय।
बरजन लागे कपि निकर समच्छ भच्छ,
तौ लगि प्रतच्छ ह्वै समूह समुहाने जाय।
मारि मारि मुस्टिक प्रधच्छित करै ते लगे,
रच्छक अदच्छ अकुलाए करि हाय हाय।
दधि मुख मातुल सुकंठ को बिकुंठित ह्वै,
लुंठित धरा पै पस्यो ब्याकुल बरिष्ठकाय।२।

उठि रुठियाइ धूलि धूसरित काय धायो,
आयो कपिराय पै जनायो हाल हावी को।
गब्बर न कीन्ह्यो पाइ अब्बर जबर जौन,
जाहिर जनायो तौन खबरि खराबी को।
सुनत सुकंठ मति कुंठित भई ना उत्-
कंठित गए ह्वै हाल सुनत सिताबी को।
जान्यो ए जरूर करि आए प्रभुकाज ना तो,
करते न काहू ब्याज काज या नवाबी को।३।

धाए उतकंठित सुकंठ स्वपुरी ते उतै,
आए इतै जूथप समूह कपि कायमान।
अंगद, सुखेन, नल, नोल, कुमुदादि संग,
बीर हनुमान बृद्ध रीछपति जांबवान।
लागे सबै मिलन परस्पर जुहार करि,
कोउ मनुहार करि प्यार करिकै समान।
आनँद अमात ना जनात रंग ढंगन ते।
आए करि काज रघुराज को प्रहृष्टमान।४।

हिलि मिलि भेंटि कपिराजहिं समेटि सब,
आए कपि निकर सहेट रघुरैया के।
भक्तिरस मद मैं मते से भूलि सदमै परे,
ते आइ पद मैं पुनीत दुँहुँ भैय्या के।
चाह सों चितै कै अति हेत सों हितैकै,
लगे लोटन चरन रज-रासि मैं रमैया के।
आनँद मगन चूमि पगन लगन लागि,
ठाढ़े भए जोरि कर संमुख सहैया के।५।

नेह लखि तिनको सनेह सह राजा राम,
निरख्यो कृपा की दीठि नीठि कै सबनि को।
पूछ्यो कुसलादिक सहेत सबही सों चाहि,
बोले बुद्धिमान जांबवान सब दिन को।
'नाथ जेहि हेर्‌यो दया दीठि कै निबेर्‌यो ताहि,
अकुसल कैसी रही भीर कौन विनको।
बिजयी वहै है धीर निजई वहै है वीर,
विजयी वहै है गन्यो दास माहि जिनको।६।

दौलत दराज महाराज रघुराज राज,
कोसलाधिराज आज पूछ्यो काज खास कों।
ल्याए खोज जनकलली की सब तौर तापै,
आए देखि आँखिन सती के बास बास को।
याही ब्याज कीन्ह्यो जौन अद्भुत अकूत बूत,
मारुत-सपूत नै सुसाहस बिकास को।
सो तौ कहि जात ना हजार मुख हू तैं तौन,
एक मुख कैसे कै बखानौं इतिहास को।७।

इबिधि सराहि कै सुनायो इतिहास सब,
जैसे गए पौनपूत नाँघि सिंधु लंका मैं।
जाइ तित सीता की सुखोज करि ओज भरि।
कीन्ह्यो बल बिक्रम विकास गढ़ बंका मैं।
बिपिन उजारि रजनीचर सँहारि-हारि,
फूँकि दीन्ह्यो रच्छस-पुरी को धंसि अंका मैं।
रावन के बल को बिधंसि फिरि आए फेरि,
पारावार पार करि एक ही फलंका मैं' ।८।

हनुमत-कीरति कथा को यथातथ्य सुनि,
राघव की औचक अकथ्यगति ह्वै गई।
कोयनि मैं आई करुनाई की झलक लोल,
लोयनि मैं ललकि लुनाई सी सम्वै गई।
छाई अरुनाई बेस बदन बिभा पै सेद-
कन तैं खराई रुखराई खेह ख्वै गई।
निपट निकाई की सुहाई सुघराई सुठि-
भाई प्रति अंगन छपाई छबि छ्वै गई।९।

दूरि भई मोह की मलीन मुरझाई दसा,
कोह कुरुखाई की रुखाई कहरै लगी।
स्यामता मैं आनँद अमंद अतिरेकन तैं,
गह गह गालिब गुराई गहरै लगी।
सिथिलित ढंग मैं उमंग दिखराई परी,
अंगनि मैं ललकि लुनाई लहरै लगी।
आई फबि रबि की बिभा सी दुति आनन पै,
दबि सी गई ती छबि छूटि छहरै लगी।१०।

मारुत के सुत की करनी,
सुनिकै गुनिकै मन मोह महाभरि।
चाव सों चाहि हितै सहितै,
अतिभाव सों भाइ भुजानि लियो भरि।
बारहिं बार स्व-अंक मैं लाइ,
ससंक ह्वै भेंटत यों हियरा भरि।
ज्यों निधि पाइ सुरंक हिए,
गहि गोवत खोइबे के भय सों भरि।११।

भेंटि स्व-अंक समेटि भली बिधि,
फेरिकै सीस सरोरुह पानी।
नेह सों चाहि सराहि कपीस सां,
बोले मया करि श्री बरदानी।
'तात कहौ केहि तौर तितै,
बसि द्योस बितावति जानकी रानी।
राकसी बृंदनि मैं घिरिकै,
किमि रच्छति प्रान गहे कुल-कानी' ।१२।

जोरिकै हाथ कह्यो कपि-
नाथ 'सुपाहरु रावरो नाम नियंत्रित ।
ध्यान तुम्हार उरंतर माहिं,
निरंतर कीन्हें कपाट लौं तंत्रित ।
बैठी बितावतीं हैं निसि बासर,
राखि स्व-नैनन को पद जंत्रित ।
जाइ सकैं किमि प्रान निदान,
रह्यो अभियान जितै अभिमंत्रित ।१३।

आवत जानि प्रमान के हेतु,
दियो मोहिं सीसमनी की निसानी ।
औ कछु मोते जबानी कह्यो,
अनुरोध जनाइबे को जिय जानी ।
फेरि हिए अनुमानि कह्यो,
प्रभु के पहिचान को काक कहानी ।
सो कहिबो चहौं रावरे सों,
यदि आयसु होय तो जोय जबानी' ।१४।

यों कहि सीसमनी दियो हाथ,
लियो रघुनाथ लगाइ कै ही मैं ।
किंचित बेर लौं चिंतित ह्वै,
गए सोक को आयो उफान सो जीमे ।
नैनन नीर भर्यो पुलक्यो तन,
खेद सों सेद चल्यो बहि धीमे ।
आयो गरो भरि बोलि सके नहिं,
ग्यान औ ध्यान गयो लगि सीमे ।१५।

किंचित काल बिहाल रहे,
फिर ख्याल कै हाल सुनै हित आकुल।
हेर्‌यो कपीस तनै जितनै, तितनै
मन मैं ह्वै महा बिरहाकुल।
बोले न बैन सुनैन के सैनन
ही मैं इसारो कियो बनि ब्याकुल।
दीन्ह्यो निदेस अँदेस दुराइ,
सनेस सुनाइबो को समयाकुल।१६।

"नाथ कह्यौ प्रथमै है प्रनाम,
दोऊ जन के पद पै धरि माथै।
फेरि कह्यो या अनाथिनी की,
न लई सुधि आजु लौं जानि अनाथै।
दीन के बंधु सुबंधु दोऊ,
प्रनतारति भंजन लै कपि साथै।
आइ इतै खल को बल दारिकै,
मोहिं उबारियै आपुनै हाथै।१७।

मन क्रम बचन चरन अनुरागिनी के,
बिहद बिरागिनी के राग को निवार्‌यो ना।
केहि अपराधन बिहाइ बिनु साध ब्याध,
बिबस मृगी लौं फेरि नैसुक निहार्‌यो ना।
बिछुरि मरी ना यहि कारन अजान बनि,
मेरी जान प्रानपति सुरति सहार्‌यो ना।
जाति कुल कानि आन मान भानुबंसिन की,
सान सोम अंसिन की यह तौ बिचार्‌यो ना।१८।

स्वाँस समीर जगाइ जिए,
बिरहागि तपावत तूल सरीरै।
पै अपने हित लागि सुधा,
सरसाइ बुझावत नैन अधीरै।
याही ते प्रान बचे अबलौं हैं, टिके
तन मैं लहि या तदबीरै।
पै अब सोऊ सुरीतत औधि,
अतीतत पाइ कै त्रास गँभीरै।१९।

सिंह-बधू को स्रिगाल चहै,
उपभोग कियो न सुन्यो कहूँ ऐसी।
सो गति मेरी भई इत हाय,
सही नहिं जाय अनीति अनैसी।
याकी न आवति लाज तुम्हैं,
रघुराज कहौ यह बात है कैसी।
आनि तजी, कै तजी कुल कानि, कि
बानि तजी अपनी रही जैसी।२०।

लाजनि हौं इतै जाति मरी,
सुख साजनि बैठि उतै दिन खोवत।
हाय हमारे हिए की बिथा,
तुम जानत हू क्यों अजान ह्वै सोवत।
हानि चितै कुल कानि की हौं,
कितने दिन प्रानहिं राखिहौं गोवत।
प्रान गए, कुल कानि गए,
प्रभु रोवत हू बनिहै नहिं रोवत।२१।

सीता की बिपत्ति की बिसालता कहाँ लौं कहौं,
बिनही कहे ही भली जानि सी परति है।
असन जसन बेस बसन बिहीन दीन,
अधिक अधीन ह्वै मलीन सी मरति है।
निमिख बिहान जाहि कलप सिरात 'ईश',
करुनानिधान, आनि हानि ज्वै रहति है।
बेगि चलि बधिकै सबंधु खल खेचरनि,
ल्याइए सिया को ठीक जानि यों परति है" ।२२।

सुनि कपि मुख तैं सिया की दुःखदायी कथा,
आए भरि लोचन बिसाल रघुबर के।
हेरत ही औचक कपींद्र कुल केहरी के,
प्रबल प्रचंड दोर दंड जुग फरके।
बोले कर जोरि 'नाथ दुख उर आनौ कहा,
मानौ जौ कही तौ अस्त होतै दिनकर के।
ल्याऊँ गढ़ लंकहिं उखारि जानकी को इतै,
सहित सहाय खल खेचर निकर के' ।२३।

बोले राम 'एहो कपि तुम सब लायक हौ,
मेरे प्रिय पायक सहायक अनन्य हौ।
संभव असंभव को सबिधि सधैया एक,
बिस्व बीच जनम लिए ही परजन्य हौ।
दुखदल-हारक सँहारक दनुज-बंस,
ज्ञानिन गुनिन मैं गनाए अग्रगन्य हौ।
जायो जेहि कोख तैं सजायो ताहि गौरव तैं,
धरम-धुरीन बीर धीर तुम धन्य हौ ।२४।

नीतिमय परम पुनीत तव आचरन,
कोह कपटाचरन जानत जघन्य हौ।
त्रिभुवन धाई धाक जाकी जगतीतल मैं,
ताहू को मनाकी करि मानत नगन्य हौ।
मम हित लागि करि सकत न काज कौन,
सद्गुन-भौन मम सेवक अनन्य हौ।
सत्यपथ-चारी बर बिमल बिचारी बीर,
धीर धुर धारी उपकारी कपि धन्य हौ।२५।

कपि तन आबरन दिव्य कनकाबरन,
साबरन सिस्य अवतिस्य जगमन्य हौ।
बिक्रम बिकास रन दीनन दृढ़ासरन,
आगतसरन त्याग जानत जघन्य हौ।
आनंद निवास मन पाप प्रतिभासमन,
सज्जन पपीहरान हेतु परजन्य हौ।
तेज-तप मान सीलमान तेहमान गुन-
मान नीतिमान हनुमान ध्रुव धन्य हौ।२६।

ससि सों उग्यौ तू अंजनी के कोख अंबर तें,
बिबुध कुमुद कुल समुद सुमोद जन्य।
केसरी के चखन चकोरन रिझैया, तन-
ताप को हरैया लोक ओक मैं न तो सो अन्य।
जन्मत सुबाल केलि कौतुक ग्रस्यो है रवि,
बक्र सक्र राहु मद मथन करैया मन्य।
बाल ब्रह्मचारी नीति प्रीति को प्रचारी,
सुबिचारी तिहूँ लोक मै न तोसों उपकारी धन्य।२७।

रच्छक स्वपच्छ के प्रघच्छक बिपच्छ के हौ ,
भूरि भय भच्छक बिख्यात बर बातजन्य ।
दच्छरन अच्छरन सरन धरन प्रण-
वच्छरन सामगान गायक सुगाता गन्य ।
लच्छन समच्छ परतच्छ अच्छ हारक औ ,
पच्छिराज प्रमद प्रहारक प्रमन्य मन्य ।
निज कुल कच्छमान गुरु इव गच्छमान ,
लच्छमान लच्छन प्रछन्न कपि धन्य धन्य' ।२८।

ह्वैकै प्रभु मुख तैं प्रसंसित कपीस रुख ,
सुरुख गयो ह्वै अति सकुचन वेह तैं ।
'पाहि, पाहि' बदत पर्‍यो सो पद पंकज पै ,
उठत उठाए नाहिं सिथिलित देह तैं ।
लागे जन 'ईश' कर फेरन कपीस सीस ,
दै दै कै असीस सुहरावत सनेह तैं ।
बल करि लाए कृपा सिंधु उर आयत मैं ,
पायत न अंक मैं जुड़ावै लगे खेह तैं ।२९।

पोंछि पोंछि कर तैं सुखेह देह वारी सबै ,
मोछि मोछि द्रिग तैं सनेह जल पूरि पूरि ।
बोले प्रभु कपि सों दबावत उछास बेग ,
हृदय लगावत उछाह भरि भूरि भूरि ।
सुनु कपि, 'तो सों कबौं उरिन न ह्वैहौं वहि ,
तेरे रिन भार को सँभार सहि मूरि मूरि ।
प्रति उपकार को बिचार करिहौं हौं कहा ,
तेरे मुख संमुख न होत रुख तूरि तूरि' ।३०।

या विधि प्रतीति प्रीति रीति रुचिवारे मृदु ,
मधुर मिठास सौं समोए बैन सुनिकै।
गदगद कंठ सौं सुकंठ के सहारे कपि ,
बचन उचारे यों कृतज्ञ प्रभु गुनिकै।
'मसक करैगो कहा खसकि खगेस हित ,
लाजन मरत चित 'ईश' धुनि-धुनिकै।
हम तौ निमित्त सब रावरे सहारे भयो ,
तापै देन एतिक बड़ाई आप चुनिकै'। ३१।

तू ही बनि स्रष्टा सृष्टि संकुल सृजत तू ही ,
द्रष्टा बनि कीरति कलाप लखिबो करै।
तू ही थिति रूप ह्वै थिरावत, थिरत तू ही ,
संहृति सरूप ह्वै समस्टि भखिबो करै।
तू ही कवि,कवि की गिरा ह्वै, गेय गीत बनि ,
गाता ह्वै तु ही तौ रुचि रेख रखिबो करै।
तू ही गुन, तू ही बनि गाहक गहत ताहि ,
चाहक ह्वै चाह को चसक चखिबो करै।३२।

जाकी नित्यता ते ह्वै अनित्य नित्य दीखै जग ,
देख्यौं जौ बिचारि उर अंतर निहारै पै।
पायो एक भासमान तो को अबिनासमान ,
जायो जग नासमान जान्यो जिय हारे पै।
डोलत हिलत खात खेलत खुसाल भयो,
बोलत बलाक तौन रावरे सहारे पै।
या ते अपने को सपने को पथी मानि 'ईश' ,
देत रखि थाती नाथ चरन तिहारे पै।३३।

आइ पुर तेरे नट साज लै सबेरे हेरि,
पाइ पौरि तेरे कछु नाच नचिबो चहौं।
तेरे पूत प्रेम को प्रसाद अवसाद बस,
और के न द्वारे फेरि नाच नचिबो चहौं।
पर अब लौं जो घनी चाह चित चाहि तेरी,
नाच्यो बहु नाच सो न नाच नचिबो चहौं।
रीझै तौ बचाउ नाचिबे तैं, औ न रीझै तौ तो,
जौन तू नचावै तौन नाच नचिबो चहौं।३४।

ए हो रघुरैया कोसलेस के कन्हैया,
कौसिला की कोख जैया जग जनक जमैया तू।
धरम धुरैया सत्यब्रत को करैया, चित्र-
कूट गिरि कानन निकुंज को रमैया तू।
मनुज मनैया दुष्ट दनुज दरैया देव,
जन मन मानस अवास को अमैया तू।
मोंहि अपनाइ जन अपनो बनाइ राखु,
नाखु जनि ए रे मेरे करम कमैया तू।३५।

सोई अवतार सरकार को सराहौं सदा,
जासों श्रुतिसार को प्रसार होय जग मैं।
जाके पद पात के पिछौरे परि लोक बीच,
पावैं गतिरोध ना बिमूढ़ गूढ़ मग मैं।
जाको चारु चरित चितौत चित चाव होय,
रुचिर रचाव होय रुचि को सुरग मैं।
जग को जँचाव होय, सुमति सँचाव होय,
अमित उँचाव होय, भाव होय भग मैं।३६।

प्रस्तुत अस्तुति पूरि समस्त,
कह्यौ कपिराय यहै बर दीजै।
आपने दासानुदासन मैं,
एहि दास हू की गिनती करि लीजै।
चाहत और नहीं कोउ तौर,
सुदीनन को सिर मौर पतीजै।
रावन के मद गारिबे को,
अब होति है बेर अबेर न कीजै।१८।

सोरठा

सुनि हनुमत के बैन समुद हेरि कपि राय तन।
बोले राजिवनैन चलहु चलैं सब सिंधु-तट।३८।

दोहा

संवत पद नभ ब्योम चख माघ कृष्ण तिथि लोक।
भो परिपूरन ग्रंथ यह बुध जन आनँद ओक।३९।
महन मोह सियनाह पद सोइ अवलंबन पाय।
लहन लाह लंकादहन बिरच्यो 'ईश' बनाय।४०।

इति श्री लंकादहन काव्ये संतोष संपादनो नाम नवमः सर्गः !

—❀✱❀—

टिप्पणी

मंगलाचरण

(१) गनाली=गणों के समूह। घनाली=गुंथी हुई पंक्ति। शुंडशाली=गणेश। (२) तुंड=मुख। पयमंडल=स्तन। उराए=समाप्त किए। (३) नाकी=ब्रह्मा। पिनाकी=शंकर। भानत=भंग किए देता है। सरिहै= निर्वाह होगा। दुरंत=विघ्न। (४) उछंगि=गोद में लेकर। पसीजि=आर्द्र होकर। अड़ैतो=जिद्दी। टकटोहतै=ध्यान से देखती। नैसुक=रंचमात्र। कैसुक=किसी तरह से। (५) परमा=परमतत्त्वमयी। गदाधरी=विष्णु। शूली=शंकर। जाया=स्त्री। (६) हृदि=हृदय। ह्लादिनि=आनंद देनेवाली। कंठनादिनि=बोलनेवाली। उद्दोति=प्रकाशित करके। निरत=नाचती हुई। (७) अनपाया=अप्राप्य। अंजती=भरती। बल्लकी=वीणा। मजेजि=रगड़ा देकर। (८) पिंगलोचन=हनुमान। रोचन=प्रकाशित करनेवाले। पोच=झूठ। (१०) आदिकवीस=वाल्मीकि। ही की=हृदय की। सेस=लक्ष्मण। सेस=अग्रज। (११) चहन=इच्छा। महन=मथनेवाला।

प्रथम सर्ग

(१२) सकेलै=फेंकता है। (१३) कायमान=शरीरधारी।

(१४) दर्पी = घमंडी । मौलि = शिर । अर्पी = अर्पित करनेवाला । अवकलत = सूझता । तर्पी = तड़पनेवाला । समन = यम । (१५) निठैहैं = नजदीक आएँगे । दिठाइ = दिखलाकर । नठैहै = अप्रसन्न होगा । ठाइहै = स्थिर करेगा । दिठैहौं = देखूँगा । (१६) अलोक = लोक से बाहर । जवमान = वेगवाला । (१७) अरंड = रेंड़ । परिघ=बेलन के आकार का एक हथियार । (१८) नंदन = देवताओं का वन । नंदन — आनंदित करनेवाला । अकदकै = इरादा करके । पूहन = टूटे हुए । बिहद = सीमा से बाहर । स्वन = शब्द । अरद = पीड़ित । प्रमदावन = रावण के बाग का नाम । अमद = शोभाहीन । (१९) भीतिमान = डरपोक । (२०) दरौना = दरने, खंड खंड करनेवाला । (२१) कोए = आँख का ढेढर । समोए = रँगे हुए । जोए = देखे । अगोए = प्रगट । नेह = तेल । (२२) रहस = भेद । अटवी = वन । उलाँक = उछाल । दारन = चीरने । बिदारन = फाड़ने । (२३) कुलपाली = पालन करनेवाला । (२४) धारित = ठहराई हुई । देना = कर्ज । अरिवर = प्रबल शत्रु । सकास = पास । सुखेना = सुखेन नामक वैद्य । पंचक = धनिष्ठा से लेकर रेवती तक पाँच नक्षत्र जिसमें एक के मरने पर पाँच और मरते हैं । बिपंचक = विशेष खेलाड़ी । रथी = सेना का एक संमानित पद, रथ पर चलनेवाला योद्धा । अरथी=मुरदा ढोने की टिकठी । अँकौर = अंक में बैठे; मृत । (२६), सुलच्छि = अच्छी तरह देखकर । द्वंदी = लड़नेवाला । वच्छ = पुत्र । सुरच्छित =

अच्छी तरह से रक्षित । परधच्छी = दूसरे को मारनेवाला । परपच्छी — दूसरी ओर का । अलच्छी = न दिखाई पड़नेवाला । (२७) अप्रमेय = अपार । तापी = तपानेवाला । वर्म = कवच । सत्रान = टोप । (२८) अनिवारित = जो रोका न जा सके । अधच्छै = जो तोड़ा न जा सके । किंकिनी = छोटी घंटी । रव = स्वर । रंजित = भरा हुआ । पिसंग = पीला । (२६) अय = लोहा । मय = आधिक्य । सालिस = दूसरा । बान = पालिश । जवमान = वेगवान । सोदरी = बहन । बृकोदरी = अग्निवाली । मंदोदरी-जनक = मंदोदरी का पिता मय नामक दानव । (३०) मजायो = भर गया । तेह = ताव । छय = नाश । (३१) गुन = गोन ; रस्सी । लगुहारी = लग्गा । संतरन = तैरना । स्वकाल = अपनी मृत्यु । बयारी = हवा । बेला=समुद्र तट की भूमि । (३२) हरीप = तुरंत । (३३) सोधि = जानकर । मंडलस्थित = मंडल के भीतर बैठा हुआ । नवोदिताभ = नया उदय होता हुआ । सर = किरन । अंसुमान = प्रकाशित । वृत्त = गोलाई । कौणप = राक्षस । अनैसे = खराब । सत्रुसाली = शत्रु को सालनेवाला । बुभुच्छी = भूखा । बैनतेय = गरुड़ । (३४) कृतांत = यम । लच्छि = निशाना बाँधकर । सुलच्छी = निशानेबाज । (३५) कटिबंध = कमरबंद । (३६) चंद्रहाँस = तलवार । चंद्रहासै = चाँदनी को । भासमान = शोभायमान । भासमान = चमकते हुए । (३८) खोट = बेइज्जती । बच्छस = छाती, वक्ष । प्रपाती = गिरे हुए । (३९) इषु = बाण । (४०) अर्दित = पीड़ित । गरदी = नाशहोना ।

सादी = सवार। पयादिन = पैदल। पावकपदी = पैर के नीचे आग बिछी होना। (४१) बितारे = छितराना। अदाँतन = बिना दाँत के। दवारे = दबाना। (४२) पिछारै = पीछे रहनेवालों को। (४३) मेद = चर्बी। मेदिनी = पृथ्वी। पलोथ = अटाला। पल = मांस। पिल्लूदा = पिसा हुआ ढेर। जंबुक = सियार। असूदा = अघाकर, तृप्त होकर। (४४) संबुक = सुतुही। सुरद = दाँत। कंक = चील्ह। बोहित = नाव। बलद = बोझे हुए। (४५) उतायल = जल्दी से। हायल = सवार होना। खरब = खप्पर। (४६) लरनि = युद्धकला। चरनि = दौड़ने का ढंग। शौर्य = बहादुरी। दिगरे = दूसरा। (४८) बात = वायु। जात = लड़का। निपात = नष्ट। अवसेसी = बचे। निसाँक = राक्षस।

—:०:—

द्वितीय सर्ग

(१) मख = यज्ञ। हूत = हवन किया गया। अमर्षी = क्रोधवाला। प्रधर्षी = मारनेवाला। उतकर्षी = बड़ाई चाहनेवाला। प्रकर्षिन = खींचनेवाले। प्रहर्षी = प्रसन्नचित्त। (२) महद्बल = विशेष बल। (३) पूषन = सूर्य। तिमिरावृत्त = अंधकार से ढका हुआ। उरंतर = हृदय। सुभाइ = अच्छी तरह। (४) धानुष = धनुषविद्या का ज्ञाता। अर्जित = प्राप्त। पितुअर्पा = पिता को अर्पण करनेवाले। दिति = दैत्य। (५) रीत्यो = खाली कराया। ओकहि = समूह को। स्वधाकन = अपनी धाक। बन्या = बाढ़,

जलप्लावन। जन्या = पैदा की हुई। अवरोधित = कैद, घिरे हुए। (७) विभात = शोभायमान। अवदात = स्वच्छ। अति-रथ = रथी से श्रेष्ठ; जो सौ रथी को अकेले जीत सके। गब्बर = ढीठ। गनीम = शत्रु। स्वत्ववान = अधिकारी। जिष्णु = इंद्र। (८) पूतै = पुत्रों को। पूत = पुत्र। सोदर = सहोदर भाई। (९) हनोज = अभी। संगर = संग्राम। बनचर = बंदर। (१०) ठान = कार्य। ठानियो = करना। अठान = गिराना। (११) बिषाद्यो = दुख में भर गया। बंदि = कैदी। कारा = कारागार। गथ = वेग। सनाह = जिरह बख्तर। सनद्ध = तय्यार होकर। धधक्यो = जलने लगा। पिनद्ध = घिरा हुआ। (१२) पर्व = पूर्णिमा। सर्वरीस = चंद्रमा। बिक्षुब्ध = मथता हुआ। अब्धि = समुद्र। चेता = जागरूक। नाग = हाथी। जोजित = नधा हुआ। प्रमथ = शंकर के एक गण का नाम। प्रनेता = मुखिया। पन्न-गासन = हाथियों से खींचा जानेवाला रथ। पन्नगासन = गरुड़। त्रिजग = तीन लोक। (१३) ईछन = नेत्र। बीछत = छाँटता है। कुंदी = मारना। तुंदी = तेजी। फुंदी = फंदा। (१४) मंद = शनिश्चर। द्वंद = संघर्ष। विनिंदित = घट गया। तुंदित = तीव्र। पितुबादी = वायु। धुंधित = धुँधली। पिंदित = रौंदी जाने लगी। जकंदि = उछलकर। (१५) घावत = घाव करता हुआ। जावत = बिलकुल। तावत = लेसता हुआ। भोरि = भ्रम से। (१६) सुमनस = देवता। सौतुक = सामने। खए = खोए से। पनस = कटहल। जुवनस = युवा। (१७) ज्यास्वन =

धनुष की डोरी का शब्द। आब = गुलाबी चमक, पानी। अच्छन = आँख। जत्रु = गले के पास की हड्डी। उकासि = ऊँचा करके। (१८) दीह = विशेष दृष्टि। कषायत = आँख तरेरकर। नीठि = अनिच्छा। छावा = साँप का पोआ (बच्चा)। (१९) अदभ्र = बहुत। अभ्र = बादल। पतंग = गुड्डी; कनकौआ। पतंग = सूर्य। (२१) अरि = स्थिर होकर। अरि = शत्रु। चोष = तेज। चष = नेत्र। अप्रधर्षित = अजेय। करष = क्रोध। (२२) फलक = फल। आशुग = बाण। पुंख = बाण का पिछला भाग जिसमें पर खोंसे रहते हैं। पुंखित = पर लगे हुए। लच्छ लच्छि = निशाना साधकर। फनिफनिकै = फनफनाकर। ऐंकि = बरदाश्त करके। अर्थवारे = काम देनेवाले। (२४) ननदंत = गरजता हुआ। (२५) अनंदन = आनंद देनेवाला। कंद = जड़। निकंदक = खोद डालनेवाला। (२६) मंडन = शृंगार। अनी = दल। (२८) कीने = द्वेष। यकीने = निश्चयपूर्वक। अकीने = बिना द्वेष के। (२९) लंगर, अडंगा, बगली, ढेंकी, पट = कुश्ती के पेंच। तरुपर = नीचे से ऊपर। (३०) सिथीले = बेदम, सुस्त। (३२) शरभ = एक विशालकाय पक्षी जो अब नहीं मिलता। अलभ = अप्राप्य। गरभ = हमल। गरभ = पेट में। अमाया = घुस गया। अकाया = बिना देह का। (३३) नदिसि = समुद्र। निबेर्‍यो = खोज किया। दुरावत = छिपाता हुआ। अबाधन = उच्छृंखल। (३५) अनबादी = उपद्रवी। वादी = बैरी। ब्रह्मवर्चस-प्रयुक्त = ब्रह्मा के तेज से युक्त। वादी = दुष्ट। प्रतिवादी = दुश्मन। (३६) सत्ता = शासन।

अनुसासन, सासन=आज्ञा। इयत्ता=सीमा। गुरछि=चक्कर खाकर। छत=चोट। (३७) आँक=कीना। उकढ़ि=बचकर। (३८) का रुती सों=किस शोभा से। व्यूढ़=कुंद। बगर=घर। (३९) बररोह=बरगद की जटा (४०) निबंधन-प्रबंध=बाँधने की योजना। अर्कबंधु=बुद्धदेव। उद्बंधन=दूसरा बंधन। अनु-बंधन=पुनः बंधन। (४१) देवपति-तापी=इंद्र को ताप पहुँचाने वाला। निबटावन को=पूरा करने के लिये। (४२) ओखा ह्वै= निर्जीव की नकल करके; बेदम, सुस्त पड़कर। (४३) धँधिकै= फँसकर। दर्दन=दुःख से भर देना। वर्दन=बैल। प्रतर्दन= हाथ-पैर पटकना।

—❋✱❋—

तृतीय सर्ग

(१) सुमार = गिनती का। तुमार = समूह। (२) निरी-छन = देखना। महार्ह = कीमती। बनक = बनावट। लुंज = लँगड़ा। सुदीठि = अच्छी नजर। वारत = मना करता है। अवैयन = आनेवाले। दुरायो = छिपकर। (३) सानित = चोखे। अवसान = होश। (४) बिकटानन = टेढ़े-मेढ़े मुखवाले। (५) यंत्रिन = बंदूकची। तपाकर = सूर्य। सकात = डर जाते हैं। हद्सेरा = भय। पर ताप देनवारो = दूसरों को दुःख देनेवाला। रेख्यो = खींचा। उर-डेरा = हृदय रूपी घर। (६) सकस कै = भर कर। नकस कै=ध्यान से। अकस=परछाहीं। (७) दीप्ति-

धर–शोभायमान; तेजयुक्त। खरायो = आग। खेह = राख। खर= तृण। नवाभा = नई रोशनी। अंसुकर=सूर्य। निलै = घर। तर = अधिक। (८) नेवर = खराब। तेवर=तरीका। तनक = खिंचाव। कनक = धतूरा। (९) सानुमान = अंदाजन। घ्रान-रंध्र = नासिका। कज्जलाचल = नीलगिरि। सोहा = शोभा। (१०) महा-ओजस=तेज। ब्यालाकीर्न=सर्पों से भरा हुआ। अचैन = सुख से रहित। उगहि कै = उठाकर। (११) छकित= हारकर। बीजन = पंखा। हरी = पकड़कर लाई गई। हरबर = शीघ्रता। अदीब=अदब से। नकीब = राज-दरबार में परिचय देनेवाला व्यक्ति। दबर=बड़ा घेरा। (१२) मरकत= पन्ना। प्रवाल=मूँगा। दवारी = पोती हुई। (१३) कनिक = चुन्नी। चिलिक = छूट, चमक। (१४) चर्चित=टँका हुआ। मजे-जवारी = दर्पवाली। कमलासन = ब्रह्मा। कलक = बेचैनी। छलक = उत्साह। दलक=फटना। (१५) अनल्प = विशेष। सुर-सिल्पी=विश्वकर्मा। आरी भई = तंग आ गई। ओक = पाताल। (१६) अर्दित= पीड़ित। चकौहैं = आश्चर्य से। (१७) अचिंत्य= विचार के बाहर। (१८) शर्मद=लज्जा देनेवाला। प्रनेता = मुखिया, सर्दार। धुरेता=धुरी को धारण करनेवाला। बर्चस = तेज। विचेता = मूर्छित। (१९) सनाह = स्वामी के सहित। सहमे=भयभीत। सकासी = पड़ोसी। अदाह = बिना आँच के। दह=गहरा जल। चह=पुल। थह—थाहा।

—:※:—

चतुर्थ सर्ग

(१) रोचत = शोभा देते हुए। ठौन = जगह। उधायो = उद्धत। (२) अपिसों = निश्चय करके। तेह = ताव। तपिसों = तप्त होकर। वृषाकपि = शंकर। छपि सों = नकली वेश में। (३) तंत्र = उद्देश्य। जोजित = लगा हुआ। असम = जो बराबर न हो। धनद = कुबेर। नदीस = वरुण। अहीस = शेष। जिस्नु = इंद्र। (४) अनृत = झूठ। धृतमान = पकड़ा हुआ। व्यवधानन = परदा। उपधान = आधार। (६) अवधान = जन्म। बनौकस = बंदर। बलीमुख = बंदर। सरिताबर = समुद्र। पिता = वायु। यान = सवारी। अंघ्रि = पैर। कीना = रंज। (८) ओड़यो = रोका। ताड़यो = मारा। माड़यो = मर्दन किया। (९) समध्यो = लड़ाई से बचा दिया। (१०) लाह = लाभ। लहक = मुँह खोलकर कह। दहक = बुराई। अहक = हौसला। अथ इति = आदि से अंत तक। (११) अंडज = ब्रह्मांड। जरको = थोड़ा भी। दंडधर = यमराज। (१३) व्यलीक = विलक्षण। महरी = स्त्री। अलेख = गुप्त रूप से। हृत ह्वै = हरण होकर। डहरी = रास्ता। (१४) अभिहारी कै = संचारण करके। पदचारी = पैदल कुंठित = निकम्मा। यारी = दोस्ती। (१५) बादी = शत्रु। बपु बादी = शरीर में फैली बायु। तटवादी = प्रतिद्वंद्वी। (१६) क्षाम = दुर्बल। आराम = सुख। गेरन = घेरने को। (१७) अवाच = बे कहा। सुभाष्य = सुंदर कहा हुआ। भाने = भंग करना। (१८) आन = हठ। करसिकै = खिंचकर। रसिकै = मन लगा-

कर। (१९) औढर=थोड़े में ही पसीजने वाला। (२०) शलभ = फतिंगा सुपथ्य = उचित आहार। गुछायो = बटा हुआ। वारन=लड़के। मतिवारन=बुद्धिमान। भुरायो=बहकाया हुआ। (२१) निगूढ़ = छिपा हुआ। बिमति=मूर्ख। अव्यूढ़=क्षीण। रुढ़=सूखा। (२२) अनख=बुरा। जख=बोझ, भार। (२३) अजीतन=जो न जीते जायँ। अतीत्यो = बीत गया। अजायो = अजन्मा। गदूल = महा बलवान। (२४) विसेष्यो परै=दिखाई पड़ता है। साधै=स्वेच्छा से। दिव = स्वर्ग। दाधै=जलाना। (२५) अंशी=जिसमें से अंश निकाला जाय। अखिलंसी = पूरे अंशवाला। तपवान = तपस्वी। तप्यमान = जिसके पाने की इच्छा से तप किया जाय। बहिरंसी = माप से बाहर। ख्यात = प्रसिद्ध। (२६) वार्यो = निवारण किया गया। (२७) नाक = स्वर्ग। लाह=लाही। धाई=फैला हुआ। खुटि = कम होना। (२८) सदी=शताब्दी। गरदी = पड़ना। (२९)छाम=पतली। छाई = कोयले की राख। रजाई= दुहाई। (३०) बेहरी = बिना सिंह के। राधे=आराधना किए। देह रीते=शरीर के नष्ट होने पर ही। राधे = आराधित। आराम = धरा। राम = स्थिर। (३१) दुरायो = हटाया गया। (३२) सदाप=उत्साह युक्त। दाधिबे=जलाने। कौंधिबे= उठाने। (३३) चीखे = बुझे हुए। अदीखे = अलक्षित। बनारी = बंदर। तमारी = सूर्य। गहरि=गहरा। (३५) अभीखन=सज्जन। बरिष्ठ=ज्येष्ठ। बिरचौंहे = बनाए हुए। (३६) परेख्यो = देखा। (३७) प्रचारे = गिरे हुए। अचारे=

व्यवहार। (३८) निधान=खजाना। प्रमाद=मद, अभिमान। नटि=अस्वीकार। (३९) अधीत = पढ़ा हुआ। निचै=समूह। अतिक्रम= मर्यादा का उल्लंघन। अभिक्रम=चढ़ाई करने का। सक्रम = सिलसिलेवार। विकार = प्रभाव। (४०) रोधि=रोककर। (४२) तौलि—विचार करके। चरपन =जासूसी। (४४) सुपच्चित = अच्छी तरह पक कर। (४५) अठान = अकार्य। (४६) जातना=क्लेश। अमानी=उपद्रव। (४७) निरत = संलग्न। चषिंगित=आँख के इशारे से। तिरत =तैरता हुआ। अवर्त = गढ़ा। (४८) करख = क्रोध, उत्साह।

—o—

पंचम सर्ग

(१) ईहा = इच्छा। समो = दोहा=द्वेष से। (२) अगोट=आगे आने वाली। निगूढ़ता = कठिनाई। अतीव = बहुत ज्यादा। छतीव = घायल सा। चषकोटन = आँख की पुतरी से। गोठन = घेरे से। काँधि = कंधे पर रखकर। कनगूरी = सिरे के। बातस = जोर को हवा। बगूरी= बगोला, बवंडर। अंगूरी=अंगूर की शराब। (५) उलै=तेजी से। पखवारे=पक्षवाले, तरफदार। बलै=बल से खींच कर। गुनाह = खराब। गंधवाह = वायु। बगर = महल। बहुलै = विशेष। (६) कृतकृत्य = प्रसन्न। मजेज = संघर्ष। चकिगो = चकित हो गए। बरकिगो = राह छोड़ कर हट गए। (८) निबुकि = छूटकर। सुबुक = हलका।

बुलंद = ऊँचा। अवकाश = अंतर। सानुमान = अंदाज से। रोधन को = रोकने को। सोधन = चुकाने को। (९) गरुत = तेजी से। (१०) रातो = लाल। अगहुर = आगेवाला, किनारे का। कुलसि = खराब दिखाई देने लगे। जल जच्छी = जल में रहनेवाले यक्ष। उलसि = उबल गए। अलोड़ि = मथकर। अब्धि = समुद्र। (११) दाहाकार = ताजिया की शकल का। प्रदाहाकार = जलानेवाली मूर्ति। निखर = बिना तृण के। छोर = सीमा। अरगावा को = बिलगाने को। (१२) अखंडल = सूर्य। चंड रव = कठोर शब्द। (१३) सिहलै = फड़फड़ाने लगे। नीड़ = घोंसला। बयस्क = बालिग। (१४) प्रदाहन = जोर से जलाकर। खरचाल = फूस का ढेर। मलाल = रंज। (१५) जखीरा = ढेर। जातरूप = सोना। सतर = तह, टुकड़ा। मेचक = पीला। बिखानन = शृंग। निखात = ठीक ठीक। (१६) अपहृत = छीने हुए। प्रतत्व = मुख्य भाग। लावक = लावा। छावक = जले हुए। (१७) लट = केश। पट = वस्त्र। अगौरी = आगे आगे। कौरी = गोदी। तूमि = नोचकर। (१८) आरी = तंग हुई। निरीह = बिना इच्छा के। निरवेद = उदासी। नेवर = नूपुर। नेवारि = हटाकर। हरुऐ = हल्के होकर। खाँगी = छीजतीं। (१९) पगारी = प्रांत, पड़ोस। दवारी = आँच। हेला = तुच्छता से। (२०) कुररी = क्रौंच पक्षी। (२१) सुमनस = देवता। घातिन = मारनेवाले। जवाल = अवनति। कामिल = पूरा। कमाल = निपुणता।

अंतक = नाश करनेवाला। (२२) प्रचुर = विशेष। प्रलाप = अंड बंड बकना। अतीता = बीता हुआ। सताप = बरजोरी। अनुनीता = लाई हुई। अधीता = पढ़ी हुई। (२३) विकटा = कर्कशा। कटासी करि = बात काटकर। हुँडेरी = उपद्रवी। बलबीता = गाली विशेष। (२४) जाती = अपने वर्ग का। बिजाती = अन्य जाति। अपघाती = धोखा देनेवाला। कलुख = पाप। कुलस्यो = बुरी तरह से दिखाई देना। सुलस्यो = अच्छी तरह दिखाई पड़ना। छदन = फफोला। छपट्यो = चिपिक जाना, उठ जाना। बपुख = शरीर, देह। (२६) = हरे हरे = प्रायः दुःख या आश्चर्य के समय लोग कह उठते हैं "हरे हरे" या "राम राम"। (२७) हहरी = डर गई। चष लाजन = चक्षु-लज्जा। (२८) पावा = पैर। मान = तानकर। उद्बेग = चित्त की आकुलता, जोश। खावा = भुरकुल हुई वस्तु। गूनै = गूँधने। (२९) भार = बोझ। भार = भाड़। (३०) सुराग = पता। निछारि = निकिया कर। (३१) दुलहैबे तें = उभाड़ने से। सिखि = जठराग्नि। अनखाए = कुपित हुए। पचहैबे = पचाना। हरि = नारायण। हरि = बंदर। (३२) निरबंध = बिना रोक टोक। दहै लगी = दहलाने लगी। बिभीषिका = हदस, भयावनापन (३३) निबरिगे = निपट गए। परत = तह। (३५) तरखै = प्रवाह। सुमनस = देवता। सुमन = फूल। (३६) अवतिस्य = कल्याणकारी। प्रग्यावान् = विलक्षण बुद्धिवाला। व्यवधान = परदा। उपधान = तकिया। (३७) परिचायक = परिचय देने-

वाला। बिभास = अवतार। सितकंठ = शंकर। प्रनिधायक = उपासक। घायक = घाव देनेवाला। निधायक = आश्रय देनेवाला। बहुकंठ = अनेक कंठों वाला अर्थात् उनचास प्रकार के वायु। (३८) दोचत = दबाना। खाम = ठहरे हुए, कच्चे। बलाढ्य = बलवानों से भरा। लाम = लड़ाई की युक्ति करना। (३९) दुस्तर = कठिन। जनेक = एक जन, अकेले। बरग = जाति, कोटि। प्रगति = प्रवेश, चलनेका अधिकार या सामर्थ्य। सरग = अध्याय। पारत = गिराते हुए। परग = पैर। (४०) धुरंसी = धूल में खेलनेवाला। अवतंसी = जन्माकर। स्वयमंसी = अपना हिस्सेदार। (४१) प्रसस्त = लंबी चौड़ी। व्यस्त = व्याकुल। दह्यमान = जला हुआ। मुह्यमान = मुर्झाए हुए। अरकी = अँटकी हुई। खचर = आकाश में चलनेवाले। (४२) कलाख = भँवाए। निराट = एकदम। निखरे = नंगे। (४३) अंदरन = भीतर। झहिगे = झुलसकर गिर गए। उलंग = नंगा। कुटेई = बुरी चाल। पेयी = पीनेवाले। (६७) अछत = बिना घाव। अछत = रहते हुए। सछत = जखमी।

षष्ठ सर्ग

(१) स्वयमागत = अपने से आया हुआ। ममात = मातृ-स्नेह। समोइ = भिगोकर। (३) अलच्छ = छिपकर। (४) कसीस = खिंचावट। तात = गरम। बिछोही = निर्दयी। पत = लज्जा। (५) अपत = बे आबरू। (६) सत्रुहन = शत्रु को मारने-

वाले। (७) बिसूरि = रोकर। (८) पामर = नीच। (९) बिजेतन= विजयी। सुमनसजेतन = देवताओं को जीतनेवाले। (१०) अंकित = लिखित। उरेह = चित्र। उसीजे = मिट गए। जात = उत्पन्न। (११) पर = परंतु। परताप = दूसरों को दुःख देना। अघोघ = पापों का समूह। अनुतापन = पश्चात्ताप। (१२) दयाद = संबंधी। (१३) पाक = इंद्र। नायक = स्वामी, मुखिया। हसायो = नाश किया। खलखेटन = दुष्टों को। नखोंछु = हरोचकर। अवनीरज = पृथ्वी की धूल। मोछु = छोड़ना। परिधि = घेरा, चहार-दीवारी। (१४) बलित = बोझी हुई। रेहि=अंकित करके। (१५) सुखेन = सुख से। घले = रुके, ठहरे। (१६) जुरावरी = बलवत्ता। (१७) सियरैहौं = जुड़ाऊँगा, ठंढा होऊँगा। (१८) पायक = सेवक। छोर= किनारा। छाय = सीमा जो निश्चित की गई हो। (१९) साँवरी = अंधकार में छिपी। उतावरी = जल्दी। (२०) फनि सों = सर्प के फन के आकारवाले केश से। गोय = छिपकर। बिरद = बड़ाई। (२१) बढ़ानी = बढ़कर। प्रमानी = प्रमाणित। कोरि = विनती से। (२२) बिरत = भूला। निहित = छिपी हुई। (२३) अबस = व्यर्थ। अवस = अवश्य। हवस = आकांक्षा। (२४) स्वपद = अपने ठिकाने। (२५) बंदिनी = बंदना की जाती हुई, प्रणाम की जाती हुई। नखतपथी = नक्षत्रों का रास्ता। (२६) मगन = राहों से। गोगन = इंद्रियों में। हरि = बंदर। सगन = अपने।

—

सप्तम सर्ग

(२) मान = नाप, लंबाई । (४) मनमान = इच्छानुकूल । जवमान = वेग से । (५) मगन = लीन, मिलकर । बलाका = बरसात में उड़नेवाले सफेद बगुले । बनोत = बनाते हुए । सलाका = सलाई । (७) बीचिनि = जल की लहरें । फेनिल = फेन से भरकर । बुद्बुद = पानी के फेन के बुल्ले । ऊर्मि = तरंग । (८) तुमुल = हलचल । (९) महदीयता = बड़ाई । नक्र = नाक । तिमिंगल = ह्वेल मछली । झख = मछली । रखेला = रखे हुए । (१०) नियुज्यमान = लगाई हुई । निरोध = रोककर । इयत्ता = सीमा, लंबाई, दौड़ । (११) निखूट = एकदम से । अंड = अंडा । भंड = उपरी छिलका । (१२) बैनतेय = गरुड़ । (१३) हितौन लागे = हिताई दिखलाने लगे, प्रेम प्रकट करने लगे । दिखौन लागे = प्रगट करने लगे । (१४) अधरा = ओठ । छरा = मालाकार । (१५) अरुण = सूर्यनारायण । (१६) कूटन तैं = पहाड़ों से । (१७) दराज = लंबा । सी को = सीता को । लाह = लाभ । (१८) गंधवाह = वायु । अजैया = अजन्मा, राम । लुगैया = स्त्री, पत्नी ।

अष्टम सर्ग

(१) पुरहूत = इंद्र । बिधूत = सत्यवादिता । (२) गति = राग । (३) चावरे = उमंग से । पूर = प्रवाह । (४) अमान =

नाप से बाहर। (५) छति = हानि । (६) मनीसी = बुद्धिमान्। त्वराहि = शीघ्र। स्वल्प = छोटा। (७) अखोट = उत्तम प्रकार के। कैफ = स्वल्प मात्र भी । (८) भा = प्रभा । (९) पोहे = पिरोए। रुचिरोहे = आकर्षित करनेवाले। (१०) अनीठि = रुचि से भरी। (११) बहुलाई = अधिकता। बीथिका = गली। बीथी = सड़क। (१२) अँटिया सो = अँटककर, भिड़कर। (१३) तरास = किस्म, प्रकार। यारन = मित्रों की। (१४) ओपतीं = शोभा देतीं। वारन = हाथी। (१६) पल मैं = क्षण में। पल = मांस। (१७) चिकटा = मैली कुचैली। (१८) धिया = होश, बुद्धि। (१९) गुरु घात = जोर की मार। (२०) रोसति = क्रोध करती। (२१) गोहन = पास में। (२२) लुंद = लोंदा, गोला। बर = श्रेष्ठ। द्विज = पक्षी, ब्राह्मण। (२३) रोधे = रोके। (२४) घटाश्रुति = कुंभकर्ण। जामुनमाली = जंबुमाली । कच्छ = कमरा, कोठरी । (२६) सकास = पास। गृहाराम = नजरबाग। (२७) प्रमदाटवी = प्रमदावन। चाली = नटखट। (२८) अगोट = आगे, हाशिया। रविसैं = पटरी, रविश । (२९) तनपोहत = पुष्ट करते हैं। (३०) सुबुकी = हल्की। कितान = किस्म। रसी = ठहरी। अरसी = अगूँठे का गहना। (३१) बीरुध = वृक्ष। बीचे = छूटे हुए। (३२) प्रमदाकुल = मद से मत्त। (३३) सुदेस = अच्छे स्थान पर। (३४) चतुष्पथ = चौमुहानी। समुहारे = चौमुहानी के बीच में। तार के = किस्म के। मेह = वर्षा। जीवन = जल। (३५) बुहारी = बटोरना, झाड़ू देना । (३६)

मदान्वित = नशे में। मदनान्वित = काम से आक्रांत। दोचित = दुचित, व्यग्र। रोचित = पसंद। (३७) ओजि = अपने सिर भार ले कर। नोज = अभी। (३८) पद्चारत = टहलते। दढ्यो = जला हुआ। जढ्यो = जड़ हो गया। (३९) सिखराई = हद। भुक्खि = शोभा देना। (४०) ललामिनी = परम सुंदरी। मंजु = मधुर। कलामिनी = बोलनेवाली। स्यामा = युवती। छामा = क्षीण। (४१) अनुजोजित = मुस्तैद की हुई। मनोमत = इच्छानुकूल। विकटाकृति = कुरूपा। (४२) हरिनीन = सिंहिनियाँ। हरिनी = मृगी। रतिवाली = शोभावाली। बिबसी = बेबस। (४३) अनैसी = बुराई। (४४) निखर्‌यो = सफाई के साथ। (४५) बपु = शरीर। तुलाय कै = बनाकर। खेचर = राक्षस। पोटो = थैली। (४७) पूत = पवित्र। प्रतीता = विश्वास रखने-वाली। नीता = लाई हुई। (४८) अवरेखति = चिह्न खींचती है। (४९) सद्म = घर। (५०) गतायु = मरकर। अचीत = चिंता से बाहर। (५१) खोट = दुष्ट। (५१) तिनै को = तृण का। बिसेसन = उपाधि। अथोर = ज्यादा। (५२) अगरी ही = आगे ही से। (५३) रिंहन = लोमड़ी। (५४) बिनसेरो = नाशमान। ईसरी = ईश्वरी। (५५) त्वेष = ताव से। (५६) सोदरी = सगी बहिन। (५७) हलावति = अत्याचार। (५८) जुहारत = सुनाकर। (५९) अगेरि = आगे बुलाकर। (६१) नटाई = दुष्टता करके। अँदेसै = खटका। निराइ = हटाकर। (६३) अभीखन = सज्जन; बिना झंझट के। (६४) नैकै = मुकाकर। प्रनै कै = प्रेम करके। अनुनै

= चिरौरी। (६५) मैय्यत = मृत्यु। (६६) दुरेखत = हटाते हुए। अवरेखत = विचार से। (७०) चिर = विशेष। (७१) सीतम = दुःख। सिथिलीते = ढीले। (७२) उरायत = हृदय। सुबाद = बोलने में। बहुलाई = विशेषता। गरुआई = गांभीर्य। कमात = कम होता; छूँटता। (७४) जनस्थल = जनस्थान, पंचवटी के पास का स्थान विशेष। अनुहारे = नकल। (७५) धूत = झूठ। (७८) सीवित = सीमित; जिसकी सीमा बाँध दी गई हो। रीतत = खाली हो रही है। पनाह = छाया। अतीतत = बीती हुई अर्थात् मृत। (८०) सामा = सामग्री। (८१) रकसीस = राक्षस गण। कसीस = जोर-जुल्म। (८३) रूरो = सुंदर। कँगूरो = चोटी पर। (८४) बेस = रूपी। सबेस = जड़ सहित। (८६) मुर = मुर नामक राक्षस जिसको विष्णु ने मारा था। निकरै = सेना सहित। हूते = हवन किए गए। (८७) बल = तरीका। विधेय = करने लायक। (८८) सुतारे = ठीक तरह से। (८९) ठिठुहारे = सिकुड़े से। समनै = यम। (९०) बिकल्प = संदेह। जल्पत = बोलते। नेरे = समीप। (९१) मनाक = मंद, थोड़ा। बराक = बेवकूफ। कमवायो = कम कराया। (९२) कुख्याति = निंदित कार्य। बेह = विशेषता। (९३) अपचै = नाश। (९४) अवरोध = रुकावट। रोध = बंधन। (९७) परकोट = छरदिवाली। मूल = जड़। कोर लौं = ऊपर तक, चोटी तक। गोर = कब्र, समाधि। (९८) काकुल = केश, बाल। (१००) सरिताबर = समुद्र। अभिक्रम = शत्रु पर चढ़ाई। उपक्रम = आरंभ।

अतिक्रम कै = लाँघकर। (१०२) रोचत = पसंद लायक। (१०४) काकली = चहचह, पक्षियों की बोली। (१०५) अनच्छत = बिना घाव। अधरच्छत = दांत से ओठ दबाकर। (१०६) सुभावन = अच्छे भाव से। हित = प्रेम करके। अनुभावन = बड़ाई या प्रभाव। सुविभावन = अच्छी बात की विशेष चिंता। (१०७) प्रमानी = परीक्षा की हुई। निदा दै = आवाज देकर, गरजकर। (१०८) राधि = आराधना करके। (११०) अभिप्रेत = चाहा हुआ।

नवम सर्ग

(१) हेला = हल्ला करते हुए सहज ही में आ जाना। (२) पच्छक = पक्षपाती। बरिष्ठकाय = मोटा ताजा। (३) रुठियाइ = रूठकर, क्रोध में। हावो = जबरदस्ती। जबर = जुल्म। सिताबो = जल्दबाजी। (४) मनुहार = खुशामद। प्रहृष्टमान = प्रसन्नता से भरे हुए। (५) सहेट = पास। सदमै = तकलीफ। (६) नीठि कै = ज्यों त्यों करके। (९) यथातथ्य = ज्यों का त्यों, पूरा पूरा। अकथ्य = कहने के बाहर। लोयनि मैं = नेत्रों में। लुनाई = सुंदरता। सम्वै गई = समा गई, भर गई। खराई = सूखी हुई। खेह = धूल। छपाई = छिपी हुई। (१०) कहरै लगी = जुल्म करने लगी। गहरै = गहरी होने लगी। (११) गोवत = छिपाता है। (१३) नियंत्रित = नियत, मुस्तैद। तंत्रित = बंद किया हुआ। पदजंत्रित = ताले के भीतर। निदान = कारण। अभियान = चलने

की क्रिया। अभिमंत्रित=मंत्र से कीला हुवा। (१६) समयाकुल = समय के अनुसार, मोह में भरकर। (१८) नैसुक=थोड़ा। सहारयो = चित पर चढ़ाना। सोम अंसिन = चंद्रमा के वंशज। (१९) तूल = रुई। (२४) परजन्य = दूसरों के लिये। जायो = जन्म लिया। (२५) जघन्य = खराब। नगन्य=गिनती से बाहर, तुच्छ। (२६) आवरन=आच्छादन ओढ़ना। कनकाबरन = सोने के समान रंग। साबरन=सूर्य। शिष्य=चेला। अवतिष्य = कल्याणकारी। परजन्य = बादल, मेघ। (२७) जन्य = पैदा, वास्ते। अन्य = दूसरा। (२८) अच्छरन = अशरण, जिसका सहायक कोई न हो। सामगान=सामवेद। प्रणवच्छरन =ओंकार से। सुगाता = अच्छा गानेवाला। पच्छिराज = गरुड़। प्रमद = गर्व। प्रमन्य= प्रमाणित। मन्य=माननेवाले। कच्छमान = किनारा। गुरु = सूर्य। गच्छमान = चलनेवाले। लच्छमान = दिखाई पड़नेवाले। प्रच्छन्न = छिपे हुए। (२९) वेह=विशेषता। (३०) वहि – ढोकर। मूरि=मूल, जड़। (३१) खसकि = जल्दी। खगेस=गरुड़। (३२) स्रष्टा= सृजन करनेवाला। संकुल = कुल। द्रष्टा=देखनेवाला। संहृति= नाश, संहार। समष्टि = संपूर्ण। गेय=गाई जानेवाली। गाता= गानेवाला। चषक=शराब का प्याला। (३३) भासमान= प्रकाशमान। अविनाशमान=अविनश्वर। जायो=जन्मा हुआ। (३४) पौरि = दरवाजा। प्रसाद=प्रसन्नता। अवसाद = नशा। (३५) अवास=घर। अमैया=अँटनेवाला, रहनेवाला।

नाखु = नाराज । (३६) पदयात = पदचिह्न । रोधना = रुकावट । रचाव = बनावट । सु रग मैं = नसों में । सँचाव = उत्पन्न, प्रवेश । भग = कल्याण । (३७) प्रस्तुत = उपस्थित । पतीजै = विश्वास । (३९) पद = दो । नभ = शून्य । ब्योम = शून्य । पख = दो । लोक = चतुर्दशी । (४०) महन = मथनेवाला । लहन = पाने को । लाह = लाभ ।

ग्रंथ परिचय

(२) बहन = ढोनेवाला । सहन = सरल, आँगन के ऐसा साफ । सुबोधन = विद्वान । गहन = कठिन । अबोधन = कम पढ़े । बिबोधन के = मूर्ख के । (३) अवदात = स्वच्छ । आनद के बन = काशी । (४) गदाही = फकीर या खाली हाथ । असमा = आसमान । समा = दृश्य । समा = अंतर्धान, नाश । कस मा = दबाव में । रस मा = रसों के फेर में, ऐयाशी में । जस = यश, कीर्ति । (५) दनुज = राक्षस, निंदित काम करनेवाला, दुष्ट । (६) जात = उत्पन्न । अघव्रात = पापों का समूह । ओक = घर, पास ।